सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

इंदौर

शनिवार, 20 जुलाई, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 269, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

चीन के लिए दो टूक संदेश है अमेरिका का रिजॉल्व तिब्बत एक्ट

कमलेश पांडे

दुनिया के थानेदार अमेरिका ने तिब्बत के मसले पर चीन को जो दो टूक संदेश दिया है, उससे एक बार फिर वह बौखला उठा है और अमेरिकी नेतृत्व के प्रति अपनी आंखें तरेरनी शुरू कर दी है। उल्लेखनीय है कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने तिब्बत-चीन विवाद के समाधान को बढ़ावा देने वाले 'रिजॉल्व तिब्बत एक्ट' पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। जिसमें तिब्बत पर चीन के अवैध कब्जे के शांतिपूर्ण समाधान के लिए दलाईलामा या उनके प्रतिनिधियों के साथ बिना शर्त सीधी बातचीत की बात कही गई है।

हालांकि, चीन ने इस एक्ट का विरोध करते हुए इसे अस्थिरता पैदा करने वाला बताया। उसने इस बिल पर अमेरिका से साफ शब्दों में कहा कि यह चीन के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप है। कोई भी व्यक्ति या ताकत, जो चीन को नियंत्रित करने के लिए या दबाने के लिए जिजांग (तिब्बत का चीनी नाम) को अस्थिर करने का प्रयास करेगी, सफल नहीं होगी। चीन अपनी संप्रभुता, सुरक्षा व विकास हितों की रक्षा के लिए कदम उठाएगा।

वहीं, इससे उलट निर्वासित तिब्बत सरकार के प्रधानमंत्री सिक्योंग पेम्पा सेरिंग ने रिजॉल्व तिब्बत एक्ट पर हस्ताक्षर करने के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन का आभार जताते हुए कहा कि यह कानून तिब्बती लोगों के आत्मनिर्णय के अधिकार की बात करता है, जो अंतर्राष्ट्रीय कानून में है। यह चीन के इस प्रचार व दावे को मंजूर नहीं करता कि तिब्बत कभी चीन का हिस्सा रहा है। यह धर्मगुरु दलाईलामा के आशीर्वाद से हो रहा है।

बता दें कि 1950 के दशक में चीन ने भारत की मूक सहमति से जब तिब्बत पर अपना कब्जा जमा लिया तो वहां के सर्वोच्च धर्मगुरु यानी चौदहवें दलाईलामा 1959 में तिब्बत से भागकर भारत चले आये थे, जहां उन्होंने भारत सरकार से शरण मांगी और मिलने के बाद हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में अपनी निर्वासित सरकार स्थापित की। तभी से दलाईलामा से ज्यादा भारत चीन की आंखों में खटक रहा है। भारतीय प्रयासों के बाद 2002 से 2010 तक दलाई लामा के प्रतिनिधियों और चीनी सरकार के बीच नौ दौर की वार्ता हुई, लेकिन कोई ठोस परिणाम नहीं निकला।

अलबत्ता, भारत इस मुद्दे पर भले ही शांत रहा, लेकिन उसके नए मित्र अमेरिका ने उसके दर्द को समझा और एशिया में अपनी राजनीति चमकाने और दुनिया के सबसे ऊंचे युद्ध क्षेत्र पर कब्जा जमाने की गरज से चीन के विरोध के बीच रिजॉल्व तिब्बत एक्ट को अमल में ला दिया। इससे पहले जम्मू-कश्मीर पर उसकी भूमिका से लगभग सभी वाकिफ हैं। इसलिए तो उसे दुनिया का थानेदार कहा जाता है। यह कटु सत्य है कि जिस काम को भारत और रूस को करना चाहिए, उसे करने का श्रेय भी अमेरिका ले चुका है।

गौरतलब है कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने गत 12 जुलाई 2024 को तिब्बत सम्बन्धी विधेयक रिजॉल्व तिब्बत एक्ट पर हस्ताक्षर कर दिए, जिसके बाद यह कानून बन गया है। यह प्रस्ताव तिब्बत के लिए अमेरिकी समर्थन बढ़ाने और इस हिमालयी क्षेत्र के दर्जे व शासन से सम्बन्धित विवाद के शांतिपूर्ण समाधान के लिए चीन और तिब्बत के सर्वोच्च धर्मगुरु दलाईलामा के बीच संवाद को बढ़ावा देने वाला है। बकौल बाइडन, मैं तिब्बतियों के मानवाधिकारों को बढ़ावा देने, उनकी विशिष्ट भाषाई, सांस्कृतिक व धार्मिक विरासत को संरक्षित करने के प्रयासों का समर्थन करने के लिए संसद के दोनों सदनों की प्रतिबद्धता को साझा करता हूँ। मेरा प्रशासन चीन से दलाईलामा या उनके प्रतिनिधियों के साथ बिना किसी शर्त के सीधी बातचीत शुरू करने का आह्वान करता रहेगा, ताकि मतभेद दूर किये जा सकें और तिब्बत पर बातचीत के जरिए समझौता किया जा सके।

रिजॉल्व तिब्बत एक्ट में कहा गया है कि चीन की नीतियां तिब्बत के लोगों की जीवनशैली को संरक्षित करने की क्षमता को दबाने की कोशिश कर रही हैं। इसलिए यह कानून चीन के इस दावे को खारिज करता है कि तिब्बत प्राचीन काल से उसका हिस्सा रहा है। इस एक्ट में चीन से तिब्बत के इतिहास के बारे में गलत व भ्रामक प्रचार बन्द करने की मांग की है। यह कानून चीन के भ्रामक दावों से निपटने के लिए अमेरिका के विदेश विभाग को भी नए अधिकार देता है।

स्पष्ट है कि तिब्बत प्राचीन काल से चीन का नहीं, बल्कि भारत का पड़ोसी रहते हुए कभी कभार उसका अभिन्न अंग भी रहा है। पहले भारत के डाक वहां जाते थे और भारतीय मुद्रा भी वहां चलती थी। जब जब भारत के शासक कमजोर हुए तो तब तब वह स्वायत्त या स्वतंत्र देश बन गया। हालांकि आजादी के बाद पंचशील के सिद्धांतों का गला घोंटते हुए चीन ने साल 1959 में जिस तरह से तिब्बत को जबरन अपने भूभाग में मिला लिया और तत्कालीन भारतीय नेतृत्व 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' के गफलत में रहकर उसकी इस ओछी कार्रवाई का विरोध तक नहीं किया, वह एक अदूरदर्शी कदम साबित हुआ और उसकी कीमत आजतक भारत चुका रहा है।

अलबत्ता, अमेरिका के नए पैंतरे से साफ है कि अंदरखाने में उसने भारत का विश्वास जरूर हासिल किया होगा। क्योंकि चीन जिस तरह से भारत के अरुणाचल प्रदेश पर अपना दावा ठोकते हुए उसे दक्षिणी तिब्बत का भूभाग करार देता है, उसके परिप्रेक्ष्य में अमेरिकी कानून ने यह साफ कर दिया है कि जब तिब्बत ही चीन का हिस्सा नहीं है तो फिर भारतीय भूभाग पर उसका दावा वाकई फर्जी है।

वहीं, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में चीनी हरकतें भी स्वीकार्य नहीं हो सकती हैं। नेपाल से लेकर भूटान की सीमा तक जो उसकी हरकतें हैं, उसके मद्देनजर रिजॉल्व तिब्बत एक्ट को चीनी चालों पर एक करारा तमाचा भी समझा जा सकता है, जो भारत ने अपने नए और रणनीतिक दोस्त से दिलवाई है। अब भी यदि चीन नहीं चेतेगा तो तिब्बत का उसके हाथ से फिसलना तय है।

अमेरिका ने जिस तरह से रूस को यूक्रेन में उलझाया, उसी तरह से अब वह चीन को तिब्बत में उलझायेगा। क्योंकि ताइवान और दक्षिण चीन सागर में चीन को घेरने से अच्छा है तिब्बत पर घेरना, ताकि दो मोर्चे पर एक साथ उलझने की गलती वह कर बैठे। अब भारत को भी चाहिए कि चीनी विश्वासघात का बदला ले और तिब्बत मुक्ति संग्राम को शह प्रदान करके अपनी ऐतिहासिक भूल को सुधारे। स्पष्ट है कि रिजॉल्व तिब्बत एक्ट चीन के लिए एक खतरनाक पैगाम लेकर आया है। इसके कूटनीतिक मायने इस बात की चुगली कर रहे हैं कि पर्ल/रिंग पॉलिसी के माध्यम से भारत को घेरते रहने की अनवरत चाल चलते रहने वाला चीन अब खुद ही तिब्बत के मसले पर अमेरिकी जाल में फंसकर तड़फड़ाने वाला है।

(प्रभासाक्षीफ डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

माइक्रोसॉफ्ट सर्वर डाउन से दुनियाभर में मची अफरा-तफरी

- भारत समेत एयरलाइन कंपनियों का कामकाज ठप, चेक-इन भी प्रभावित
- दुनियाभर में 1 हजार फ्लाइट कैंसिल
- बैंक, स्टॉक मार्केट और टीवी चैनल पर भी असर

नई दिल्ली (एजेंसी)। एंटीवायरस 'क्राउडस्ट्राइक' के अपडेट से माइक्रोसॉफ्ट की क्लाउड सर्विसेज में शुक्रवार को दिक्कत आ गई। इसकी वजह से दुनियाभर में एयरलाइंस, टीवी टेलिकास्ट, बैंकिंग और कई कार्पोरेट कंपनियों के कामकाज पर असर पड़ा है। अमेरिका, ब्रिटेन और भारत जैसे कई देशों में 1 हजार से ज्यादा फ्लाइट्स कैंसिल हो गई हैं। वहीं 3 हजार विमानों ने देरी से उड़ान भरी। भारत में, 5 एयरलाइन- इंडिगो, स्पाइसजेट, अकासा एयर, विस्तारा और एयर इंडिया एक्सप्रेस ने बताया कि उनकी बुकिंग, चेक-इन और फ्लाइट अपडेट सर्विस इस तकनीकी समस्या से प्रभावित हुई है।

- क्राउडस्ट्राइक के अपडेट के कारण माइक्रोसॉफ्ट की सर्विस ठप हुई

दुनिया भर में माइक्रोसॉफ्ट विंडोज के कुछ यूजर्स को अपने लैपटॉप पर नीली स्क्रीन दिखाई दे रही है। इससे उनके सिस्टम ऑटोमैटिकली रीस्टार्ट या शटडाउन हो गए हैं। डेल टेक्नोलॉजीज ने कहा कि यह समस्या हालिया क्राउडस्ट्राइक अपडेट के कारण हुई है। क्राउडस्ट्राइक एक साइबर सिक्योरिटी प्लेटफॉर्म है जो यूजर्स को सिक्योरिटी सॉल्यूशन देता है। क्राउडस्ट्राइक के अपडेट के कारण ही माइक्रोसॉफ्ट के एज्योर क्लाउड और माइक्रोसॉफ्ट 365 सर्विसेज में परेशानी आई है।

स्पाइसजेट ने कहा तकनीकी चुनौतियों का सामना कर रहे

स्पाइसजेट ने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा है, वर्तमान में हम अपने सेवा प्रदाता के साथ तकनीकी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, जिससे बुकिंग, चेक-इन और बुकिंग का प्रबंधन सहित ऑनलाइन सेवाएं प्रभावित हो रही हैं। परिणामस्वरूप, हमने सभी हवाई अड्डों पर मैन्युअल चेक-इन और

बोर्डिंग प्रक्रियाओं को सक्रिय कर दिया है। हम आगामी यात्रा योजना वाले यात्रियों से अनुरोध करते हैं कि वे हमारे काउंटरों पर चेक-इन पूरा करने के लिए सामान्य से पहले हवाई अड्डे पर पहुंचें। हम इसके कारण होने वाली किसी भी असुविधा के लिए ईमानदारी से खेद व्यक्त करते हैं और आपको आश्वस्त करते हैं कि हमारी टीमें इन मुद्दों को तुरंत हल करने के लिए हमारे सेवा प्रदाता के साथ लगन से काम कर रही हैं।

खिलाड़ियों को नीतीश सरकार का बड़ा गिफ्ट

बिहार कैबिनेट की बैठक में 27 प्रस्तावों को मंजूरी

पटना (एजेंसी)। बिहार मंत्रिमंडल की शुक्रवार को एक अहम बैठक हुई। इस बैठक में कई प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। मंत्रिमंडल की इस बैठक में बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के प्रबंधन के लिए विभिन्न कोटि के 301 पदों के सृजन के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई। बैठक में मौजूद एक अधिकारी ने बताया कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में कुल 27 प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। उन्होंने कहा कि बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के सुगम प्रबंधन एवं संचालन के लिए मुख्यालय एवं क्षेत्रीय स्तर पर विभिन्न कोटि के कुल 301 पदों के सृजन की स्वीकृति दी गई।

खिलाड़ियों के लिए पदों का सृजन

इसके अलावा नालंदा जिला अंतर्गत राजगीर में निर्माणाधीन राज्य खेल अकादमी एवं अंतर्राष्ट्रीय मानक के क्रिकेट स्टेडियम के सुगम संचालन के लिए विभिन्न कोटि के 81 पदों के सृजन के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई। इसके अलावा भागलपुर में विक्रमशिला विश्वविद्यालय ऐतिहासिक स्थल के समीप केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए भूमि अधिग्रहण किया जाएगा। इसके लिए 87 करोड़ 99 लाख रुपए की स्वीकृति मिल गयी है।

सुप्रभात

एक दिन आकाश से
गिरेंगे अंगारे
और सब कुछ भस्म
हो जाएगा
एक दिन नदी सूख जाएंगी
पीने को पानी नहीं
मिलेगा
एक दिन हवा
जहरीली हो जायेगी
साँसें भी ज़हर उगलेंगी
एक दिन बाज़ार में
आदमी बिकने लगेगा
कुछ लोग खरीद लेंगे उन्हें
बहुत सस्ते में और
मौज करेंगे
एक दिन राजा का आदेश ही
कानून होगा
लोग सब उसके गुलाम होंगे ।

– दुर्गाप्रसाद झाला

उ.प्र. में बाढ़, काशी में गंगा के 30 घाट डूबे

- गोरखपुर में एनडीआरएफ तैनात, मुंबई में 10 घंटे में 101 मिमी बारिश; 13 राज्यों में अलर्ट, पोरबंदर में भारी बारिश के बाद बाढ़
- सुपौल में महादेव का मंदिर भी कोसी नदी में समाया

नई दिल्ली/लखनऊ/पटना (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के कई जिलों में लगभग 1 हफ्ते से बाढ़ के हालात बने हुए हैं। बाढ़ का सबसे ज्यादा असर गोरखपुर में है। यहां राप्ती नदी खतरे के निशान के ऊपर बह रही है। अब तक 55 से ज्यादा गांव डूब चुके हैं। एनडीआरएफ, एसडीआरएफ और पीएसी की टीम 100 नावें लगाकर राहत-बचाव के काम में जुटी है।

गंगा नदी भी उफान पर

गंगा नदी भी उफान पर है। वाराणसी में गंगा में 30 घाट डूब चुके हैं। दशाश्वमेध घाट के गंगा आरती स्थल तक पानी पहुंच गया है। अस्सी घाट की पुराने आरती स्थल की जगह बदल दी गई है। आज आरती 4 फीट पीछे होगी।

कर्नाटक में दीवार गिरने से तीन की मौत

उधर कर्नाटक में शुक्रवार सुबह भारी बारिश हुई। शिगांव के मदापुरा गांव में एक घर की दीवार गिरने से एक ही परिवार के 2 बच्चों समेत तीन लोगों की मौत हो गई। मौसम विभाग ने आज 13 राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने की विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक लोक के निर्माण की समीक्षा

श्री रामराजा लोक ओरछा में भगवान श्रीराम के प्रसंगों को दर्शाया जाए : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि ओरछा में विकसित हो रहे श्री रामराजा लोक में भगवान श्रीराम के वनवास अवधि में वर्तमान मध्यप्रदेश के भू-भाग में बिताई गई समयावधि में हुए प्रमुख प्रसंगों को दर्शाया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक लोकों के निर्माण कार्य की प्रगति की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि इन स्थानों पर लाइट एंड साउंड शो की प्रस्तुति की व्यवस्था भी हो। प्रदेश में विकसित हो रहे विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक लोक के आय के साधन सुनिश्चित करते हुए उनके निर्माण और प्रबंधन प्रक्रिया तय की जाए, ताकि सभी लोकों का संचालन सुव्यवस्थित रूप से हो सके। लोकों का बेहतर प्रबंध सुनिश्चित करने के उद्देश्य से संबंधित विभागों जैसे संस्कृति, पर्यटन, धर्मस्व, राजस्व, पंचायत एवं ग्रामीण विकास तथा नगरीय विकास एवं आवास विभाग की स्थानीय स्तर पर संचालन समिति बनाई जाए। बैठक में संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास और धर्मस्व मंत्री श्री धर्मेन्द्र सिंह लोधी, मुख्य सचिव श्रीमती वीरा राणा, अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा, प्रमुख सचिव संस्कृति तथा पर्यटन श्री शिवशेखर शुक्ला तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

भादवा माता लोक से आयुर्वेदिक अस्पताल को जोड़ा जाए

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सुनिश्चित करने को कहा कि विकसित हो रहे सभी धार्मिक और सांस्कृतिक लोकों के निर्माण कार्य में आकल्पन इस प्रकार से हो कि सौंदर्यीकरण और आकर्षण दीर्घकालीन बना रहे। उन्होंने संत रविदास लोक, सागर में शोधपीठ और शैक्षणिक संस्था विकसित करने के निर्देश दिए। डॉ. यादव ने कहा कि भादवा माता लोक नीमच में श्रद्धालु दर्शन के साथ-साथ स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से भी आते हैं। भादवा माता लोक से आयुर्वेदिक अस्पताल और फिजियोथेरेपी सेंटर को भी जोड़ा जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मंदिर जिस स्थापत्य शैली में बने हैं, उनकी विशेषताओं का संरचनाओं के निर्माण में अनुसरण सुनिश्चित किया जाए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्य प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के प्रचार-प्रसार के लिए प्रदेश की कला-संस्कृति-स्थापत्य और प्रमुख व्यंजनों पर केंद्रित मेले देश के अन्य राज्यों में आयोजित किए जाएं, इससे प्रदेश के पर्यटन को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

बांग्लादेश में आरक्षण के खिलाफ हिंसा, 39 की मौत

प्रदर्शनकारियों ने गाड़ियां फूंकी, सरकारी चैनल में आग लगाई; 300 लोग भारत पहुंचे

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में सरकारी नौकरियों में आरक्षण के खिलाफ हफ्ते भर से जारी विरोध-प्रदर्शन अब उग्र हो गया है। प्रदर्शनकारियों ने गुरुवार शाम बांग्लादेश के मुख्य सरकारी टीवी चैनल बीटीवी के मुख्यालय में आग लगा दी। एएफपी की रिपोर्ट के मुताबिक सैकड़ों प्रदर्शनकारी बीटीवी ऑफिस के कैंपस में घुस आए और 60 से ज्यादा गाड़ियां फूंक दी। प्रधानमंत्री शेख हसीना ने कल ही बीटीवी को इंटरव्यू दिया था। छात्रों और पुलिस के बीच हिंसक झड़पें भी हुईं। पीटीआई की रिपोर्ट के मुताबिक हिंसा में 18 लोगों की मौत हुई। इसके अलावा 2500 से अधिक लोग घायल हुए। बांग्लादेश में प्रदर्शन शुरू होने के बाद से कम से कम 39 लोगों की मौत हुई है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 38.5 °c
न्यूनतम 33°c

सुबह सवेरे
इंदौर ■ शनिवार,20 जुलाई 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

चिनाब ब्रिज पर 15 अगस्त को पहली ट्रेन चलेगी

यह दुनिया का सबसे ऊंचा आर्च ब्रिज, 8 तीव्रता के भूकंप को झेल सकता है

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर के रियासी जिले में बने दुनिया के सबसे ऊंचे स्टील आर्च ब्रिज पर स्वतंत्रता दिवस यानी 15 अगस्त को पहली ट्रेन चलेगी। संगलदान से रियासी के बीच चलने वाली यह ट्रेन सर्विस उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक प्रोजेक्ट का हिस्सा है।

इस ब्रिज पर 20 जून को ट्रेन का ट्रायल रन हुआ था। इससे पहले 16 जून को ब्रिज पर इलेक्ट्रिक इंजन का ट्रायल हुआ था। यह ब्रिज पेरिस के एफिल टावर से 29 मीटर ऊंचा है। एफिल टॉवर की ऊंचाई 330 मीटर है, जबकि 1.3 किमी लंबे इस ब्रिज को चिनाब नदी पर 359 मीटर की ऊंचाई पर बनाया गया है।

यह ब्रिज 40 किलो तक विस्फोटक और रिक्टर स्केल पर 8 तीव्रता तक के भूकंप को झेल सकता है। पाकिस्तानी सीमा से इसका एरियल डिस्टेंस महज 65 किमी है। इस ब्रिज के शुरू होने से कश्मीर घाटी हर मौसम में ट्रेन के जरिए भारत के दूसरे हिस्सों से जुड़ जाएगी। यूएसबीआरएल प्रोजेक्ट 1997 से शुरू हुआ था। इसके तहत 272 किमी की रेल लाइन बिछाई जानी थी। अब तक अलग-अलग फेज में 209 किमी लाइन बिछाई जा चुकी है। इस साल के अंत तक रियासी को कटरा से जोड़ने वाली आखिरी 17 किमी लाइन बिछाई जाएगी, जिसके बाद जम्मू के रियासी से कश्मीर के बारामूला तक पैसेंजर ट्रैवल कर सकेंगे।

20 साल में बनकर तैयार हुआ ब्रिज

आजादी के 76 साल पूरे होने के बाद भी कश्मीर घाटी बर्फबारी के सीजन में देश के दूसरे हिस्सों से कट जाती थी। 22 फरवरी 2024 तक कश्मीर घाटी तक सिर्फ नेशनल हाईवे- 44 के जरिए जाया जा सकता था। बर्फबारी होने पर कश्मीर घाटी जाने वाला ये रास्ता भी बंद हो जाता था। इसके अलावा कश्मीर जाने के लिए जम्मू-तवी तक ही ट्रेन जाती थी, जहां से करीब 350 किलोमीटर लोगों को सड़क मार्ग से जाना पड़ता था। जवाहर टनल होते हुए गुजरने वाले इस रास्ते से लोगों को जम्मू-तवी से घाटी जाने के लिए 8 से 10 घंटे का समय लग जाता था। 2003 में भारत सरकार ने सभी मौसम में कश्मीर घाटी को देश के दूसरे हिस्सों से जोड़ने के लिए चिनाब ब्रिज बनाने का फैसला लिया।

संक्षिप्त समाचार

संसद के बजट सत्र से पहले रणनीति बनाने में जुटा एनडीए, विपक्षी दलों को एक सुर में देगा जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद का आगामी बजट सत्र 22 जुलाई से शुरू होने जा रहा है और इसके 12 अगस्त तक चलने की संभावना है। यह मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का दूसरा संसद सत्र है और इसलिए केंद्र की सत्तारूढ़ पार्टी भाजपा और केंद्र सरकार कई स्तरों पर इसे लेकर तैयारी कर रही है। लोकसभा में विपक्ष के नेता बनने के बाद राहुल गांधी ने पिछले सत्र के दौरान, जिस अंदाज में सरकार को घेरने की कोशिश की थी और जिस तरह से विपक्ष के कई राजनीतिक दल राहुल गांधी का साथ देते नजर आए।

सरकार ने तैयार की काउंटर रणनीति- पिछले सत्र में विपक्ष के रवैये को देखते हुए भाजपा और सरकार ने सोमवार से शुरू होने जा रहे सत्र को लेकर काउंटर रणनीति तैयार कर ली है।

सीएम हिमंता बोले-

2041 तक मुस्लिम राज्य बन जाएगा असम

दिसपुर (एजेंसी)। असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने शुक्रवार (19 जुलाई) को कहा राज्य में मुस्लिम आबादी हर 10 साल में 30 प्रतिशत बढ़ रही है। ऐसे में साल 2041 तक

असम मुस्लिम बहुल राज्य बन जाएगा। यह हकीकत है और इसे कोई नहीं रोक सकता। उन्होंने कहा अगर राहुल गांधी जनसंख्या नियंत्रण के ब्रांड एंबेसडर बन जाते हैं तब इस पर नियंत्रण लग सकता है, क्योंकि मुस्लिम समुदाय केवल उनकी बात सुनता है।
असम सीएम ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि डेमोग्राफिक डेटा के मुताबिक असम की मुस्लिम आबादी 40 फीसदी हो गई है। जबकि हिंदू समुदाय की आबादी हर 10 साल में करीब 16 फीसदी ही बढ़ रही है।

छत्तीसगढ़ में 24 घंटे में 2 आईडी ब्लास्ट...2 जवान शहीद, 6 घायल

बीजापुर/दंतेवाड़ा (एजेंसी)। दंतेवाड़ा, बीजापुर और सुकमा जिले की सीमा पर पिछले 24 घंटे में 2 अलग-अलग जगह आईडी ब्लास्ट हुए। जिसकी चपेट में आने से

2 जवान शहीद हो गए, वहीं 6 जवान घायल हैं। घायलों में 2 डीआरजी के जवान हैं, बाकी एसटीएफ के हैं। इधर, दंतेवाड़ा पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में जवानों ने 1 महिला माओवादी को मार गिराया है।
पुलिस को सूचना मिली थी कि इन तीनों जिलों के बॉर्डर पर नक्सलियों के दरभा डिवीजन, पश्चिम बस्तर डिवीजन और मिलिट्री नंबर 2 के नक्सली मौजूद हैं।

भारत स्वतंत्र हो गया, स्वाधीनता के लिए जारी है आंदोलन : यशवंत इंदापुरकर

हमें अकबर की वंशावली तो पढ़ाई, राम की नहीं, इस नैरेटिव के खिलाफ हमारी लड़ाई : अशोक श्रीवास्तव

भोपाल। भारत 1947 में स्वतंत्र हो गया, लेकिन उसे स्वाधीनता में बदलने का आंदोलन अभी चल रहा है। अंग्रेजों ने कुटिलतापूर्वक शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन कर दिया और भारत को मानसिक गुलाम बना दिया। इससे उबरने का एक ही तरीका है- जनजागरण। यही कार्य देवर्षि नारद करते थे। यह बात विश्व संवाद केंद्र की ओर से आयोजित देवर्षि नारद जयंती समारोह एवं परिचर्चा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मध्य क्षेत्र कार्यकारिणी सदस्य यशवंत इंदापुरकर ने कही। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में दूरदर्शन के वरिष्ठ संपादक अशोक श्रीवास्तव उपस्थित थे। अध्यक्षता विश्व संवाद केंद्र न्यास के अध्यक्ष लक्ष्मेंद्र माहेश्वरी ने की। यह कार्यक्रम नर्मदापुरम रोड स्थित वृंदावन गार्डन के 'समागम केंद्र' में आयोजित हुआ। जिसमें भोपाल महानगर के पत्रकार, बुद्धिजीवी, मातृशक्ति, कला एवं सामाजिक क्षेत्रों से जुड़े लोग शामिल हुए।

'सांस्कृतिक पुनर्जागरण और मीडिया की भूमिका' विषय पर श्री इंदापुरकर ने कहा कि डॉ. हेडगेवार जी ने 1911 में कहा था कि समाज में जागरुकता और प्रशिक्षण बेहद आवश्यक है। यह बात विख्यात कम्युनिस्ट नेता एमएन राय ने भी कही। सभी मनीषियों का मानना है कि जब तक संपूर्ण समाज नहीं बदलेगा, तब तक भारत के पुनरुत्थान का स्वप्न पूरा नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि देवर्षि नारद का नाम कलह कराने वाले के रूप में ही प्रचारित किया जाता रहा है। लेकिन उस विचार को बदलने का काम हम सबने किया है। कुछ वर्ष पहले जब मीडिया के साथियों के बीच हम देवर्षि नारद जयंती मनाने के कार्यक्रम को लेकर जाते थे तो उपहास हुआ करता था। लेकिन वह धारणा बदली है और आज अधिकांश प्रतिष्ठित पत्रकारों की टेबल पर देवर्षि नारद की तस्वीर मिलती है, क्योंकि अब पत्रकारों ने अपने आद्य पुरुष को

पहचान लिया है। उन्होंने मान लिया है कि देवर्षि नारद विश्व के कल्याण के लिए सूचनाओं का आदान प्रदान करते थे। जब हम सांस्कृतिक पुनर्जागरण की बात करते हैं तो हमें अपने आसपास घटित होने वाली सकारात्मक चीजों को भी देखना होगा। भारत के सांस्कृतिक उत्थान में मीडिया की बहुत प्रभावी भूमिका है। इस दायित्व को मीडिया के बंधुओं को पहचानना चाहिए।

इस अवसर पर प्रख्यात पत्रकार एवं डीडी न्यूज नई दिल्ली के संपादक अशोक श्रीवास्तव ने कहा कि हमें बचपन से पाठ्यक्रम में अकबर की वंशावली पढ़ाई गई लेकिन राम की नहीं। यह सब योजना पूर्वक किया गया। हमें किताबों में यह तो पढ़ाया गया कि अकबर महान थे। बाबर महान थे। प्राइमरी से हमें अकबर की वंशावली पढ़ाई गई, लेकिन राम की वंशावली नहीं पढ़ाई गई। इस प्रकार भारत की सांस्कृतिक विरासत को खत्म किया गया। हमारी लड़ाई इसी नैरेटिव के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि मास मीडिया और बॉलीवुड ने देवर्षि नारद जी की तस्वीर चुगलखोर की बना दी थी। यह स्थिति आजादी के बाद से लगातार बनी है, क्योंकि बंटवारे के बाद पाकिस्तान ने खुद को इस्लामिक देश घोषित कर दिया और हमारे धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की कहानी कही जाती रही। फिल्मों ने इसे मजबूत किया। फिल्मों में भारतीय संस्कृति के प्रतीकों को लंबे समय तक गलत ढंग से दिखाया। उसके कारण भारतीय संस्कृति के प्रति एक भ्रामक छवि युवाओं के मन में बन गई। उन्होंने राम मंदिर आंदोलन को पुनर्जागरण का सबसे बड़ा प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि आज पाठकों एवं दर्शकों के दबाव के कारण मीडिया रामलला का अखंड कवरेज दिखाता है। यह मीडिया का प्रायश्चित है, क्योंकि एक समय में मीडिया के एक हिस्से ने विवादित ढांचा गिराते समय कारसेवकों की छवि को सांप्रदायिक बताया था। यहां तक कि रामजन्म भूमि पर विवादित ढांचे को गिराने के बाद शौचालय बनाने की बात भी की गई थी। आज मीडिया ने अपना दृष्टिकोण बदला है क्योंकि समाज में अपनी संस्कृति के प्रति जागरूकता आयी है।

कार्यक्रम की प्रस्तावना केंद्र के न्यासी भावेश श्रीवास्तव ने रखी। कार्यक्रम के अंत में अध्यक्ष लक्ष्मेंद्र माहेश्वरी ने आभार ज्ञापन और संचालन वरिष्ठ पत्रकार डॉ. सुदीप शुक्ल ने किया। इस अवसर पर सरस्वती शिशु मंदिर, शिवजी नगर की छात्राओं ने देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति दी।

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कृषि संकाय द्वारा हाईटेक कस्टम हायरिंग सेंटर का उद्घाटन कार्यक्रम संपन्न

भोपाल। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कृषि विभाग द्वारा हाईटेक कस्टम हायरिंग सेंटर का उदघाट्न कार्यक्रम हुआ। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि श्री बी. एस. कोठारी, असिस्टेंट इंजीनियर भोपाल संभाग, कृषि अभियांत्रिकी, मध्य प्रदेश शासन, आरएनटीयू के कुलाधिपति श्री संतोष चौबे, कुलसचिव डॉ विजय सिंह एवं उपकुलपति

डॉ संगीता जौहरी मुख्य रूप से उपस्थित थे। अतिथियों ने रिबन काटकर केंद्र का उद्घाटन किया।

इस मौके पर श्री बी. एस. कोठारी जी ने विभाग की योजनाओं के बारे में कृषकों को अवगत करते हुए कृषि यांत्रिकी के द्वारा किये गए कार्य को जिला व राज्य स्तर ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से किस प्रकार किसान योजनाओं का लाभ उठा सकते है के बारे में विस्तृत जानकारी दी । वहीं श्री संतोष चोबे जी ने कहा की अब खेती की पुरानी विधियों को छोड़ कर उन्नत कृषि यंत्रों एवं तकनीकियों को अपना कर नयी विधियों की ओर अग्रसर होना होगा। साथ ही जैविक खेती को बढ़ावा देकर कृषि उत्पादों का मूल्य संवर्धन करना होगा। उन्होंने यह भी कहा की किसान भाइयों को कस्टम हायरिंग एवं कृषि की अन्य शासकीय योजनाओं का लाभ लेना चाहिए और अपने विश्वविद्यालय के कृषि छात्रों को गाँव में किसानों के खेतों पर भी जाने की सलाह दी। इस उपरांत डॉ. विजय सिंह द्वारा कस्टम हायरिंग के महत्व को बताते हुए कृषकों को संबोधित किया एवं विभाग को शुभकामनाएं दी।

इस मौके पर विश्वविद्यालय के कृषि विभाग के डीन डॉ. एच. डी. वर्मा ने कार्यक्रम की रूपरेखा रखी। हाईटेक कस्टम हायरिंग केंद्र के समन्वयक डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने केंद्र के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में सभी कृषि उपकरणों का अतिथियों द्वारा पूजन एवं निरीक्षण किया गया। वहीं अतिथियों द्वारा हाईटेक कस्टम हायरिंग सेंटर, कृषि परामर्श केंद्र एवं देसी कार्यक्रम से सम्बंधित कृषि साहित्य का विमोचन किया, किसानो को बीज के मिनी किट दिए एवं उन्हें सम्मानित भी किया।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अंगीकृत गांवों से लगभग 65 किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन एवं कार्यक्रम की भूमिका डॉ. ऋषिकेश मंडलोई, सहायक प्राध्यापक द्वारा की गई। आभार प्रदर्शन डॉ. शुभम कुलश्रेष्ठ, सहायक प्राध्यापक ने दिया। इस मौके पर विश्वविद्यालय के विद्यार्थी फैकल्टी सहित कृषि विभाग के सभी सदस्य विशेष रूप से उपस्थित थे।

हरित संरक्षकों का होगा सम्मान

भोपाल। राजधानी के कुछ संगठनों ने मिलकर समाज सेवा की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल करते हुए नया आयाम स्थापित किया है। गौरतलब है कि 20 जुलाई 2015 को अमेरिका के कैलीफोर्निया में सेनडियेगो शहर के महापौर ने म0प्र0 के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी श्री मनीष शंकर शर्मा के उत्कृष्ट सामाजिक योगदान और भारत अमेरिका संबंधों को प्रगाढ़ करने पर मनीष शंकर शर्मा दिवस उद्घोषित किया था जो कि पहली बार किसी भारतीय के नाम से अमेरिका में हुआ था। तभी से राजधानी में प्रतिवर्ष 20 जुलाई को इस दिवस पर सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

इसी कड़ी में और मध्यप्रदेश को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने वाले राज्य के गौरव श्री शर्मा से प्रेरणा लेते हुए अंतर्राष्ट्रीय संस्था लायंस क्लब, कैरियर समूह, आदि संगठनों ने प्रदेश के इतिहास में पहली बार (संभवतः भारत के इतिहास में भी) उन महानुभावों का सम्मान करने का निर्णय लिया है जो वाकई हमारे वृक्षों , पौधों और बागवानों का -24 घंटे, सातों दिन ,वर्ष भर - निरंतर संरक्षण करते हैं। हरित संरक्षक (माली बंधु) साथ ही में उन सुरक्षा संवर्धकों का भी सम्मान किया जायेगा जो इन बागवानों को सुरक्षित रखते हैं।

गांव में एक भी हेल्थ सेंटर मानक नहीं, सरकार से जवाब तलब

भोपाल। मध्यप्रदेश में बदहाल ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्थाओं पर हाईकोर्ट इंदौर ने प्रदेश सरकार से जवाब तलब किया है। गांधीवादी विचारक एवं लेखक चिन्मय मिश्र ने मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय में जनहित याचिका प्रस्तुत की थी। इसपर आज उच्च न्यायालय की युगल पीठ, जस्टिस एस.ए. धर्माधिकारी तथा जस्टिस दुपल्ला वेंटक रमन्ना ने नोटिस जारी कर मध्यप्रदेश सरकार से जवाब मांगा है। याचिकाकर्ता चिन्मय मिश्र की ओर से अधिवक्ता अभिनव धनोड़कर द्वारा पैरवी की गई थी।

याचिका के पक्ष में तर्क दिया गया कि स्वास्थ्य का अधिकार तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभ तथा पूर्ण उपलब्धता का अधिकार भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत जीवन जीने के अधिकार की श्रेणी में आता है। यह एक मौलिक अधिकार है तथा सरकार का यह दायित्व है कि ग्रामीण इलाकों में व्याप्त बदहाल स्वास्थ्य व्यवस्थाओं में तुरंत सुधार करे।

याचिका का आधार यह है कि मध्यप्रदेश के नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे-5 के अनुसार मध्यप्रदेश में ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं की नींव माना जाने वाला एक भी कम्युनिटी हेल्थ सेंटर, प्राइमरी हेल्थ सेंटर या सब सेंटर भारत शासन के स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी इंडियन पब्लिक हेल्थ स्टैंडर्ड के अनुसार कार्यरत नहीं हैं। इन सेंटर्स में न तो उपयुक्त सुविधाएं हैं और न ही डॉक्टर तथा अन्य स्वास्थ्य कर्मी उपलब्ध हैं।

उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं पर तथा महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। शिशु मृत्यु दर जहां सम्पूर्ण भारत में 32 प्रति 1000 है वही मध्य प्रदेश में यह 48 है। माताओं में मृत्यु दर सम्पूर्ण देश में 113 है वही मध्यप्रदेश में 173 है। साथ ही साथ ग्रामीण इलाकों में केवल 55 फीसदी महिलाओं की ही प्रसव के दौरान 4 बार देखरेख हो पाती है। जहां तक गर्भावस्था के समय में आयरन फौलिक एसिड हर गर्भवती महिला के लिए आवश्यक होता है लेकिन यह केवल 10 फीसदी गर्भवती महिलाओं को ही मिल पाता है। ग्रामीण प्रदेश की 70 फीसदी महिलाएं इससे वंचित रहती हैं, जिसका विपरीत प्रभाव उनपर तथा उनके होने वालों बच्चों पर पड़ता है। केवल 42 फीसदी महिलाओं द्वारा ही प्रसव के 1 घंटे के भीतर नवजात जो स्तनपान करवाया जाता है। मध्य प्रदेश में 58 फीसदी से अधिक महिलाएं खून की कमी से प्रभावित हैं।

2019-21 के नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे-5 के अनुसार मध्य प्रदेश में 309 कम्युनिटी हेल्थ सेंटर है, जिसमें हर एक सेंटर में एक फिजिशियन, एक सर्जन, एक स्त्री रोग विशेषज्ञ तथा एक बच्चों के चिकित्सक की नियुक्ति होना आवश्यक है, परन्तु 309 में से एक भी ऐसा कम्युनिटी हेल्थ सेंटर नहीं है, जहां इस सब की नियुक्ति हो। कुल मिलाकर 324 सर्जन की नियुक्ति की आवश्यकता है, उनमें से केवल 7 की ही नियुक्ति हुई है और 302 पद खाली हैं। 324 जनरल फिजिशियन की नियुक्ति की आवश्यकता है, उनमें से केवल 7 की ही नियुक्ति हुई है और बाकी 302 पद खाली हैं। स्त्री रोग विशेषज्ञ में 324 में से केवल 21 पद भरें हैं बाकी 303 पद खाली हैं। बच्चों के विशेषज्ञों हेतु आवश्यकता 309 नियुक्तियों की है, परन्तु केवल 60 पद ही स्वीकृत हैं, जिनमें से भी केवल 11 पर ही नियुक्तियां हुई हैं। सबसे चौकाने वाले स्थिति यह है कि, मध्य प्रदेश में एक भी कम्युनिटी हेल्थ सेंटर में नेत्र रोग विशेषज्ञ नहीं है और केवल 5 ही एनेस्थेटिस्ट नियुक्त हैं।

नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे-5 के अनुसार मध्य प्रदेश में 28 फीसदी सब सेंटर्स की कमी है, 47 फीसदी प्रायमरी हेल्थ सेंटर तथा 45 फीसदी कम्युनिटी हेल्थ सेंटर की कमी है। रिपोर्ट के अनुसार जितने भी सेंटर हैं, उनमें से एक भी सेंटर इंडियन पब्लिक हेल्थ स्टैंडर्ड द्वारा निर्धारित मापदंडों के अनुसार कार्यरत नहीं है। हर सेंटर में कोई ना कोई कमी है जिसके कारण मध्य प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ बदहाल स्थिति है, और इसका विपरीत प्रभाव सबसे अधिक महिलाओं और बच्चों पर पड़ रहा है।

इलेक्टोरल बॉन्ड पर सुप्रीम कोर्ट में 22 जुलाई को सुनवाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। इलेक्टोरल बॉन्ड का मामला एक बार फिर सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है। एनजीओ कॉमन कॉज और सेंटर फॉर पब्लिक इंटरेस्ट लिटिगेशन ने बॉन्ड के लेनदेन को लेकर सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में एसआईटी जांच की मांग की है। इस पर 22 जुलाई को सुनवाई होगी। सुनवाई सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच करेगी।

गुजरात में वलसाड और सूरत स्टेशन के बीच मालगाड़ी पटरी से उतरी, रेल सेवाएं प्रभावित

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात में वलसाड और सूरत स्टेशनों के बीच शुक्रवार को एक मालगाड़ी का डिब्बा पटरी से उतर गया। हालांकि इस दौरान किसी के घायल होने की खबर नहीं है। पश्चिमी रेलवे के एक अधिकारी ने बताया कि दोपहर करीब 3 बजे डुंगरी स्टेशन के पास हुई इस घटना के कारण मार्ग पर यातायात प्रभावित हुआ। मालगाड़ी सूरत की तरफ जा रही थी।

कांवड़ यात्रा को लेकर योगी सरकार का बड़ा आदेश

'हर दुकान पर नेम प्लेट लगाएं दुकानदार'

- प्रियंका गांधी ने कहा-यह लोकतंत्र पर हमला; मुस्लिम जमात फैसले के समर्थन में

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी में कांवड़ यात्रा मार्गों पर पड़ने वाली दुकानों में दुकानदार को अपना नाम लिखना होगा। इसमें दुकान मालिक का नाम और डिटेल लिखी जाएगी। शुक्रवार को सीएम योगी ने यह आदेश दिया। सरकार का कहना है कि कांवड़ यात्रियों की शुचिता बनाए रखने के लिए यह फैसला लिया है। इसके अलावा, हलाल सर्टिफिकेशन वाले प्रोडक्ट बेचने वालों पर भी कार्रवाई होगी। यूपी के बाद उत्तराखंड के हरिद्वार में भी यह आदेश लागू कर दिया गया है।

पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने इस फैसले को असंवैधानिक बताया। कहा- यह फैसला

चुनावी लाभ के लिए है।

एडीजी बोले- यह नया आदेश नहीं- मेरठ जोन एडीजी डीके ठाकुर ने कहा- यह कोई नया आदेश नहीं है। इसका पिछले साल भी पालन कराया गया था। आदेश को लेकर कुछ भ्रम की स्थिति उत्पन्न की गई है।

जाति-धर्म के नाम पर विभाजन का समर्थन नहीं- चिराग पासवान- केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने कहा कि वह जाति या धर्म के नाम पर किसी भी विभाजन का समर्थन नहीं करते हैं। उन्होंने मुजफ्फरनगर पुलिस द्वारा जारी गाइडलाइंस का विरोध करते हुए कहा कि मैं इसका समर्थन नहीं करता हूं।

78वें स्वतंत्रता दिवस समारोह की थीम होगी- विकसित भारत

नईदिल्ली (एजेंसी)। 78वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के लिए थीम विकसित भारत रखी गई है। जो 2047 तक देश को एक विकसित राष्ट्र में बदलने के सरकार के दृष्टिकोण के मुताबिक है। रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता ए. भारत भूषण बाबू ने एक्स पर एक पोस्ट में यह घोषणा की, जिसमें उन्होंने लाल किला और विकसित भारत के नारे के साथ एक पोस्टर भी शेयर किया है। 2047 में भारत अपनी आजादी का 100वां साल मनाएगा।

एनसीबी ने मुंबई में 10 करोड़ कीमत के मेफेड्रोन ड्रग्स के साथ व्यक्ति को गिरफ्तार किया

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई में नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) ने 10 करोड़ की कीमत वाले 5 किलोग्राम मेफेड्रोन ड्रग्स के साथ एम एस शेख नाम के व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। एनसीबी के अधिकारी ने बताया कि युवक के बारे में गुप्त सूचना मिली थी। आरोपी ने मुंबई में ड्रग्स सप्लाई करने के लिए हैदराबाद से मंगवाया था। शेख मेफेड्रोन की इंटर स्टेट तस्करी गैंग में शामिल है।

निलंबित हॉस्टल वार्डन की कार में मिली शराब

पूर्व सरपंच से बोली- मुझे रोज लगती है; छात्राओं ने की थी बाहरी पुरुष बुलाने की शिकायत

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में चोरल के आदिवासी कन्या छात्रावास की वार्डन शिल्पा गौड़ शिकायत के बाद निलंबित हो चुकी है। छात्राओं ने जिला प्रशासन से शिकायत में कहा था कि पूर्व सरपंच का गर्ल्स हॉस्टल में आना जाना था। जब वार्डन को शो-कॉज नोटिस जारी किया गया तो कार्रवाई से बचने के लिए उसने विभाग को भी गुमराह किया। 17 जुलाई को पूर्व सरपंच और वार्डन का एक वीडियो सामने आया। इसमें पूर्व सरपंच की पत्नी वार्डन पर आरोप लगाते दिख रही है। वीडियो 9 जुलाई का हॉस्टल के बाहर का है। पूर्व सरपंच की पत्नी का आरोप है कि वार्डन ने उसके परिवार को तबाह कर दिया। उसका पति से अफेयर है। पूर्व सरपंच के हॉस्टल में आने-जाने और वीडियो को लेकर वार्डन ने विभाग को जवाब दिया - पूर्व सरपंच हॉस्टल से मेरा टैबलेट ले गया था। उसे वापस लेने के लिए मैं उसके पीछे गई। हॉस्टल के बाहर उसकी पत्नी पहले से मौजूद थी। टैबलेट लेने की बात पर उन्होंने हंगामा कर दिया।पूर्व सरपंच का कहना है कि वो पत्नी के साथ कार से जा रहा था। वार्डन ने लिफ्ट मांगी थी। कोई टैबलेट नहीं छीना था। पूर्व सरपंच ने ये भी बताया कि वार्डन हॉस्टल में शराब रखती है। एक बार इसकी कार में बैठा था, तब शराब के क्वार्टर मिले थे। पूछने पर उसने कहा था- मुझे रोज लगती है। हॉस्टल में पीती हूं।

छात्राओं ने वार्डन की शिकायत में क्या बताया...

16 जुलाई को दो छात्राओं ने जिला प्रशासन से वार्डन शिल्पा गौड़ की शिकायत

की। इसमें कहा कि शिल्पा पुरुषों को हॉस्टल बुलाती है। सीसीटीवी कैमरे बंद कर देती है। पुरुष यहां शराब पीते हैं। डीजे बजता है। हॉस्टल में खाना बनाने वाले कर्मचारियों पर बाहर के पुरुषों को खाना खिलाने का दबाव बनाती है। ड्राइवर सलमान हॉस्टल में घूमता रहता था। बिना अनुमति बच्चियों को बाहर ले जाती है। छात्राओं ने बच्चियों को खाने में नशीला पदार्थ देने और अन्य पुरुषों के साथ जबरदस्ती खाना खाने का दबाव बनाने के आरोप भी लगाए।

एक छात्रा ने बताया, एक साल पहले प्रिंसिपल से वार्डन की शिकायत की थी। इस पर उसने धमकाया। हॉस्टल में एक लड़की के पास मोबाइल मिला था। बदला लेने के लिए वार्डन हमारा नाम लगाकर हॉस्टल से निकलवा दिया। गलती एक लड़की की थी और 5 लड़कियों को निकाल दिया था। छात्रा ने बताया, अब हमें घर से स्कूल जाना पड़ता है। स्कूल सुबह 10.30 बजे से लगता है। सुबह 8 बजे घर से निकलना पड़ता है। दो बार बस बदलते हैं। घर आते-आते शाम के 6 बज जाते हैं। हॉस्टल में थे तो सड़क पार करते ही सामने स्कूल था। वार्डन मैम के कारण पढ़ाई प्रभावित हो रही है।

पूर्व सरपंच नारायण पटेल ने कहा- मदद की, मुझे ही झूठा फंसाया

पूर्व सरपंच ने कहा, शिल्पा का जब हातोद ट्रांसफर हुआ था, तब मैं एक बार इसकी कार में बैठा था। गाड़ी में शराब के क्वार्टर रखे थे। पूछने पर शिल्पा कहने लगी- मुझे तो लगती है। घर और हॉस्टल में भी रखती हूं। मैंने पूछा कि कौन लाकर देता है। तो बोली कि ड्राइवर सलमान लाकर देता है।9 जुलाई को भी मैं हॉस्टल नहीं गया था। मैं कार से जा रहा था, तब शिल्पा रास्ते में खड़ी मिली। उसने लिफ्ट मांगी। रास्ते में पत्नी और बेटी दिखी तो गाड़ी रोकी। विवाद हुआ और शिल्पा ने मेरी झूठी रिपोर्ट दर्ज करवा दी। मैंने इसका टैबलेट नहीं छीना।मैं शिल्पा को 5-6 साल से जानता हूं। तब सरपंच था। शिल्पा ने किसी से मेरा नंबर लेकर फोन कर मदद मांगी थी। पिता के स्थान पर शिल्पा की अनुकंपा नियुक्ति लगी थी। स्कूल में पढ़ाती थी, लेकिन परमानेंट नहीं थी।

पूर्व सरपंच की पत्नी बोली - शिल्पा ने मेरा परिवार तबाह किया, इसे नौकरी से निकालो

पूर्व सरपंच नारायण पटेल की पत्नी ने बताया, करीब 5-6 साल पहले शिल्पा और मेरे पति की पहचान हुई थी। पति तब सरपंच थे। शिल्पा के पिता का निधन हो गया था। मेरे पति ने उसकी मदद की थी, लेकिन इसने मेरा घर ही तबाह कर दिया। पति को फंसा लिया। कई बार समझाने पर भी नहीं मानी। लॉकडाउन में पति को अपने साथ रख लिया।पति को जब कोरोना हुआ तो भगा दिया। मैंने पति का इलाज करवाया। लॉकडाउन खत्म हुआ तो फिर उन्हें बुलाने लगी। शराबखोरी करती। हॉस्टल में पार्टी करती। परेशान होकर मैंने विधायक उषा दीदी से शिल्पा की शिकायत की। इसके बाद उसका हातोद में ट्रांसफर हो गया। घर में शांति हो गई थी। सब कुछ अच्छा चल रहा था। मैं, मेरी बेटी और पति सब अच्छे से रह रहे थे। कुछ ही महीने बाद शिल्पा वापस हातोद से ट्रांसफर करवाकर चोरल आ गई। दोबारा पति को फंसा लिया। 9 जुलाई को मैंने दोनों को कार में रंगे हाथों पकड़ा। शिल्पा की रिपोर्ट दर्ज करवाई। इसके बाद उसने पति पर ही झूठा केस दर्ज करवा दिया। हॉस्टल में लड़कियां भी इससे परेशान हैं। विभाग ने शिल्पा को निलंबित किया है, लेकिन इसके खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। इसे नौकरी से निकाला जाए।

पेड़ों की अवैध कटाई पर कलेक्टर-निगम को हाईकोर्ट का नोटिस

जनहित याचिका पर इंदौर हाई कोर्ट ने 4 सप्ताह में मांगा जवाब, अगली सुनवाई 20 अगस्त को

इंदौर (एजेंसी)। इन्दौर शहर में हो रही पेड़ों की अवैध कटाई को लेकर समाज सेवी डॉ.अमन शर्मा द्वारा उच्च न्यायालय खंडपीठ इन्दौर के समक्ष जनहित याचिका प्रस्तुत की गई। याचिकाकर्ता की ओर से पैरवी अभिभाषक अभिनव धनोड़कर ने की। मध्यप्रदेश सरकार, केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, नगर निगम इन्दौर और कलेक्टर इन्दौर को उच्च न्यायालय ने नोटिस जारी कर 4 सप्ताह में जवाब मांगा है। अगली सुनवाई 20 अगस्त 2024 को होगी। अभिभाषक धनोड़कर द्वारा मध्यप्रदेश वृक्षों परिरक्षण अधिनियम 2000 की धारा 4 एवं 6 के माध्यम से चुनौती दी गई। जिसमें याचिकाकर्ता के द्वारा यह बताया गया की अधिनियम की धारा 4 के अंतर्गत नगर निगम के आयुक्त ही वृक्ष अधिकारी के रूप नियुक्त किए गए है। इन्दौर शहर के विकास कार्य भी नगर निगम द्वारा ही किया जा रहा है। वृक्ष अधिकारी बिना सोचे समझे विकास कार्य की ओर अग्रसर होकर वर्षों पुराने/प्रचीन और बड़े पेडों को

धड़ल्ले से काटने का कार्य कर रहे हैं।याचिकाकर्ता द्वारा अधिनियम की धारा 6 के अंतर्गत वर्णित प्रक्रिया को भी याचिका के माध्यम से चुनौती दी गई। धारा 6 के अतिरिक्त भी एक और प्रक्रिया को अपना लिया गया है, जिसमें निरीक्षक नामक एक पद पर नियुक्ति दी गई है और पेड़ों की कटाई को लेकर 100 रुपए आवेदन शुल्क और 500 रुपए का मुआवजा शुल्क भी प्रक्रिया में शामिल कर दिया गया है जो पूर्णतः विधि के विपरीत है।

याचिका में एक पेड़ मां के नाम मुहिम का समर्थन- याचिका में मुहिम चलाई जा रही एक पेड़ मां के नाम के माध्यम से जगह-जगह पौधे लगाए जा रहे है का समर्थन किया गया है। लेकिन वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए और इंदौर में दिन-प्रतिदिन बढ़ते वायु प्रदूषण और समय के साथ बढ़ते गर्म तापमान का सामना करना पड़ रहा है जिसका सीधा असर मानव जीवन, पशु पक्षियों के जीवन पर हमें आए दिन देखने को मिल रहा है। अगर ऐसी स्थिति में भी शहर के पुराने पेड़ों को काटा जाएगा तो आने वाले समय में बढ़ते वायु प्रदूषण, गर्म तापमान, से भविष्य में प्रकृति के कहर का सामना करना बड़ा ही मुश्किल साबित होगा। क्योंकि पौधों को पेड़ बनने में सालों का समय लगता है।

पेड़ कटाई की अनुमति को लेकर एक समिति बनाने की मांग- दायर याचिका में एमओजी लाईन और मल्हारगंज आश्रम में हुई पेड़ कटाई को लेकर संपूर्ण विवरण दिया गया है। याचिका में पेड़ कटाई की अनुमति को लेकर एक समिति बनाने का भी उच्च न्यायालय से आग्रह किया गया है।

अब भीख देने वालों पर भी होगी कार्रवाई

नाबालिग को भिक्षा देना या उनसे सामान खरीदना भी अपराध ; कलेक्टर ने जारी किया आदेश

इंदौर (एजेंसी)। अब भिक्षा देने ही नहीं बल्कि उनसे कोई सामान खरीदने वालों के खिलाफ भी सख्त कार्रवाई की जाएगी। कलेक्टर आशीष सिह ने गुरुवार को इसे लेकर आदेश जारी किया है।कलेक्टर ने भिक्षा वृत्ति/बाल भिक्षा वृत्ति पर नियंत्रण के लिए भारतीय नागरिक सुरक्षा अधिनियम 2023 की धारा 163 के तहत यह प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किया है।आदेश का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों के विरूद्ध वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। यह उल्लंघन दण्डनीय अपराध के श्रेणी में है। आदेश के अनुसार भिक्षुओं को भीख स्वरूप कुछ भी देना या नाबालिग बच्चों से किसी सामान को खरीदना दण्डनीय होगा। जो व्यक्ति भिक्षुओं या किसी

नाबालिग बच्चे को भीख स्वरूप कोई चीज प्रदान करता है या नाबालिग बच्चे से कोई सामान खरीदता हैं तो उसके कार्रवाई होगी। यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू हो गया है और 14 सितम्बर 2024 तक प्रभावशील रहेगा। दरअसल इंदौर में ट्रैफिक सिग्नल, चौराहों, धार्मिक स्थलों, पर्यटन स्थलों और अन्य सार्वजनिक स्थानों में 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चे स्वयं या अपने परिवारों के साथ भिक्षा वृत्ति में लिप्त देखे गए हैं। इसमें अन्य शहरों के बच्चे भी होते है। अधिकांश बच्चे नशे या अन्य गतिविधियों में भी लिप्त होते हैं। इसी तरह बाल भिक्षा वृत्ति कराने के लिए बच्चों की तस्करी के मामले संज्ञान में आए हैं। बच्चों के ट्रैफिक सिग्नल पर भिक्षा वृत्ति के कारण दुर्घटना होने की आशंका के साथ यह एक सामाजिक बुराई है। भिक्षा वृत्ति और बाल भिक्षा वृत्ति को रोकने के लिए विभिन्न विभागों के सात टीम बनाई गई है।

पत्नी को पीटा, सिर के बाल काटे

दोस्त के मामा के यहां शादी में जाने से नाराज था पति, पड़ोसियों ने बचाया

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के तिलक नगर में एक इवेंट का काम करने वाली महिला को उसके पति ने बुरी तरह से पीट दिया। इतना ही नहीं उसके सिर के बाल भी काट दिए। वह दोस्त के मामा की शादी में जाने से नाराज था। पत्नी को नागपुर से लाने के बाद रास्ते भर मारपीट करता रहा। पुलिस ने मामले में मेडिकल कराने के बाद पति पर केस दर्ज किया है।तिलक नगर पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक सपना मालवीय निवासी उत्कर्ष स्टेट बंगाली चौराहे की शिकायत पर पुलिस ने उसके पति राहुल मालवीय के खिलाफ केस दर्ज किया है। सपना ने बताया कि वह इवेंट का काम करती है। नागपुर में अपने दोस्त चेतन के मामा की शादी में 13 जुलाई को पति से पूछकर गई।16 जून को पति राहुल नागपुर लेने आ गए। रास्ते में आते समय होटल में मारपीट की। इसके बाद बुधवार को दोनों घर पहुंचे। यहां भी पति राहुल ने आते ही पत्नी सपना को गालियां देकर मारपीट शुरू कर दी। कैंची से गर्दन और सिर में मारा और सिर के बाल काट दिए।राहुल ने पत्नी सपना से कहा कि वह अब उसे साथ नहीं रखेगा। कभी भी किसी का बहाना लेकर चली जाती है।

पातालपानी-कालाकुंड हेरिटेज ट्रेन की बुकिंग आज से

इंदौर में 10 किमी के ट्रैक पर झरने-वादियों का नजारा, 5 कोच के साथ हफ्ते में दो दिन चलेगी

इंदौर (एजेंसी)। मध्य प्रदेश की इकलौती पातालपानी-कालाकुंड हेरिटेज ट्रेन शनिवार से शुरू होगी। पर्यटकों की डिमांड के बाद रेलवे ने गुरुवार देर शाम हेरिटेज ट्रेन के शुरू होने की जानकारी दी। इसकी बुकिंग शुक्रवार से शुरू होगी। 20 जुलाई से शुरू हो रही हेरिटेज ट्रेन सप्ताह में दो दिन यानी प्रति शनिवार एवं रविवार को चलेगी। संचालन से पहले हेरिटेज ट्रेन पावर कार मेंटेनेंस के बाद महू स्टेशन आ चुकी है। इसके साथ ही पातालपानी, टंट्या भील, व्यू पाइंट, कालाकुंड स्टेशन को और बेहतर कर दिया गया है। ट्रेन शनिवार सुबह 11.05 बजे पातालपानी से कालाकुंड के लिए रवाना होगी। जिसे सांसद लालवानी हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। विभाग से मिली जानकारी के अनुसार ट्रेन पातालपानी से कालाकुंड के बीच 10 किमी ट्रैक पर चलेगी। इस ट्रैक पर सफर के दौरान यात्री पातालपानी स्टेशन, पातालपानी वाटर फॉल, वैली ब्रिज, कालाकुंड और टनल के रोमांच का लुत्फ उठाएंगे।पातालपानी से कालाकुंड के बीच पर्यटक ऐसे कई झरनों का लुफ्त उठा सकेंगे।

बुकिंग शुरू - रेलवे सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार शुरुआत में पातालपानी-कालाकुंड के बीच हेरिटेज ट्रेन दो विस्टाडोम

सी-1 और सी-2 (एसी चेयर-कार) कोच और तीन नॉन एसीडी1, डी-2 और डी-3 कोच के साथ चलेगी। हेरिटेज ट्रेन में आने-जाने का अलग-अलग टिकट लेना होगा।विस्टाडोम के एक कोच में 60 सीट है। इसमें एसीचेयर-कार का 265 रुपए, जबकि नॉन एसी चेयर-कार का किराया 20 रुपए प्रति टिकट रह सकता हैं। नॉन एसी चेयर-कार के तीन कोच हैं। ट्रेन संख्या 52965/52966 पातालपानी- कालाकुंड हेरिटेज ट्रेन में टिकट की बुकिंग सभी पीआरएस काउंटरों, आईआरसीटीसी की वेबसाइट से ऑनलाइन या रिजर्वेशन सेंटर से की जा सकती है।

इंदौर से ऐसे पहुंच सकते हैं ट्रेन तक

रेलवे इंदौर से महू और पातालपानी तक हेरिटेज ट्रेन में ले जाने के लिए डेमू चलाने का निर्णय कर रहा है। हालांकि रेलवे सूत्रों का कहना है कि शुरुआत में कुछ दिन यात्रियों को पातालपानी तक सड़क मार्ग से ही जाना पड़ेगा। हालांकि रेलवे महू से पातालपानी तक ब्राडगेज रेल लाइन का निरीक्षण कर चुका है। एक दो दिन में रतलाम से होकर महू जाने वाली डेमू ट्रेन 09390 को पातालपानी तक विस्तार किया जा सकता है। जिसके बाद रेल यात्री इंदौर और महू रेलवे स्टेशन से सीधे ट्रेन द्वारा की पातालपानी रेलवे स्टेशन पहुंच सकेंगे।

इस समय पर चलेगी ट्रेन

ट्रेन संख्या 52965 पातालपानी कालाकुंड हेरिटेज ट्रेन 11.05 बजे पातालपानी से चल कर 13.05 बजे कालाकुंड पहुंचेगी। वहीं वापसी ट्रेन संख्या 52966 कालाकुंड पातालपानी हेरिटेज ट्रेन कालाकुंड से 15.34 बजे चल कर 16.30 बजे पातालपानी पहुंचेगी। हेरिटेज ट्रेन पातालपानी से कालाकुंड 2 घंटे में पहुंचती है। वापसी में काला कुंड से पातालपानी तक आने में ट्रेन को एक घंटा लगता है। ट्रेन काला कुंड पहुंचने के बाद वहां लोगों को घूमने के दौरान करीब दो घंटा खड़ी रहेगी। इस दौरान यात्री कालाकुंड के झरने और पहाड़ों की सैर कर सकेंगे।

2018 में हुई थी शुरुआत- पातालपानी से कालाकुंड की वादियों के ट्रैक को 2018 में हेरिटेज ट्रैक घोषित किया गया था। इसी के साथ प्रदेश की एकमात्र हेरिटेज ट्रेन की शुरुआत हुई थी।

खजराना-वजन तोलने वाले ने की हरकत

शौचालय की खिड़की से नवविवाहिता का वीडियो बनाया, पीड़िता पुलिस के पास पहुंची

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के खजराना मंदिर परिसर में एक नव विवाहिता का अश्लील वीडियो बनाने का मामला सामने आया है। गार्ड के पहचानने के बाद पुलिस ने आरोपी पर केस दर्ज किया है। आरोपी मंदिर परिसर में ही आता-जाता है। पुलिस अब आगे मामले में जांच कर रही है।खजराना पुलिस ने बताया आरोपी संजू निगवाल की शिकायत मिली है। देवास से आई 24 साल की युवती ने उसकी शिकायत की है। शिकायत में बताया गया है कि संजू बाथरुम की खिड़की से झांक रहा था। वहां महिला का वीडियो बना लिया। महिला ने शौचालय से बाहर आकर पति को जानकारी दी। पति ने उसका पीछा किया लेकिन वह भाग निकला। इसके बाद दंपती ने गार्ड से शिकायत की। उन्होंने कंट्रोल रूम में जाकर देखा तो आरोपी की पहचान हो गई। गार्ड ने बताया कि आरोपी संजू निगवाल मंदिर परिसर में वजन तोलने की मशीन लेकर बैठता है।गार्ड द्वारा पहचान होने के बाद आरोपी पर पीड़िता ने खजराना थाने जाकर उस पर केस दर्ज कराया है।

स्कूली छात्रा से रेप, सहेली के भाई ने शादी का झांसा देकर बनाए संबंध

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में रहने वाली एक 12 की छात्रा से रेप का मामला सामने आया है। आरोपी छात्रा का ही सहेली का भाई है। उसने खंडवा में पढ़ाई के दौरान छात्रा से दोस्ती की ओर फिर शादी की बात कर शोषण किया। बाद में उसने छात्रा को ब्लॉक कर दिया। छात्रा के माता पिता ने भी शादी की बात को लेकर बुलाया। लेकिन सहेली का भाई मिलने नही आया। इस मामले में पुलिस ने आरोपी पर केस दर्ज कर लिया है। पलासिया पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक उन्होंने शून्य पर कारवाई कर खंडवा पुलिस को केस ट्रांसफर किया है। उन्होंने बताया कि इलाके में रहने वाली 12 वी क्लास की छात्रा ने सवाई माधोपुर में रहने वाले दीपक पुत्र चेतराम मीणा पर रेप का केस दर्ज कराया है। पीड़िता ने बताया कि वह खडंवा के निजी स्कूल में पढ़ाई करती है। यहां क्लास में पढ़ने वाली सहेली के भाई दीपक मीणा जो पूनमचंद कॉलेज की पढ़ाई करता है ओर खंडवा में अपनी बहन के साथ बैकुठ नगर में रहता है। उससे सहेली ने 2023 दिसंबर में पहचान कराई थी। कुछ दिन पहले दीपक कहने लगा कि वह पीड़िता को पंसद करता है। इंकार करने पर भी बार बार उसे प्रपोज करता रहा। इसके बाद छात्रा ने सहेली का भाई होने के चलते भरोसा किया ओर बातचीत बढ़ा ली। जिसमें दीपक ने भरोसा दिलाया कि वह शादी करेगा और अगर छात्रा के पिता नही माने तो भी उसके साथ खड़ा रहेगा। छात्रा ने उसकी बात पर भरोसा किया ओर खंडवा के बैकुठनगर घर पर मिलने जुलने लगी। शादी की बात करते हुए दीपक ने यहां कई बार छात्रा से संबध बनाए। छात्रा ने शिकायत में बताया कि आखिरी बार 5 जून को दीपक से उसके किराये के घर में मिली। दोनो के बीच सबंध बने। इसके बाद 15 जून को दीपक ने अचानक कहां कि उसके पापा नहीं मानेगे। वह छात्रा से शादी नहीं कर पाएगा। छात्रा 8 जुलाई को अपनी मां के पास इंदौर आ गई। दीपक को कई बार कॉल किया। लेकिन उसने ब्लॉक कर दिया। दीपक के पिता के पिता के नंबर पर भी कॉल किया। लेकिन बात नही हो पाई।

इंदौर में हुई बीजेपी नगर कार्यसमिति की बैठक

संभागीय प्रभारी गौतम बोले- इंदौर देश को प्रेरणा देने वाला शहर, ताई ने कहा;भाजपा का कार्यकर्ता हमेशा जीतेगा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में आज बीजेपी नगर कार्य समिति की बैठक का आयोजन किया गया था। जिसमें पूर्व सांसद और लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन, विधायक गोलू शुक्ला, विधायक रमेश मेंदोला, विधायक मधु वर्मा और विधायक महेंद्र हार्डिया के साथ अन्य नेता और पदाधिकारी मौजूद थे। बैठक में पूर्व लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने कहा कि जब हम सत्ता में रहते हैं तो जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। इस हेतु हमें जिन कार्यों के लिए जनता ने वोट दिया है, वह कार्य अच्छी तरह से जनता के बीच पहुंच रहे हैं या नहीं, योजनाओं का लाभ जनता को ठीक तरीके से मिल रहा है या नहीं, इसकी चिंता कार्यकर्ताओं को विशेष रूप से करनी चाहिए।

भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता अपने कार्यों से हमेशा जीतता रहेगा, मेरा आशीर्वाद हमेशा कार्यकर्ताओं के साथ रहता है। बैठक में संभाग प्रभारी राघवेंद्र गौतम ने कहा कि हमें जनता ने अभूतपूर्व सहयोग प्रदान किया है, जिसके कारण हमारी जिम्मेदारी पहले से ज्यादा बढ़ जाती है। हमें शहर के सामाजिक एवं विकास कार्यों में टीम वर्क के साथ काम करते हुए एक दूसरे का सहयोग करना है। हम दीनदयाल उपाध्याय जी, श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं अटल बिहारी वाजपेयी जी की पार्टी के कार्यकर्ता हैं। हम जिस भी क्षेत्र में कार्य करते हैं, उस क्षेत्र में हमारी पार्टी की पहचान को बनाए रखने एवं आगे बढ़ाने की हम सभी की जिम्मेदारी है। इंदौर शहर पूरे देश को प्रेरणा देने वाला शहर है। इंदौर शहर पूरे देश में भारतीय जनता पार्टी का केंद्र बिंदु है। यहां से जो भी बात

निकलती है, उसका असर पूरे देश पर पड़ता है। इस हेतु हमें सामाजिक सरोकार के कार्यों को भी पूर्ण निष्ठा से करना है। बैठक में नगर अध्यक्ष गौरव रणदिवे ने कहा कि इंदौर ने कार्यकर्ताओं के परिश्रम से इतिहास रचने का काम किया है। लोकसभा चुनावों में विपक्ष के नेताओं ने नोटा के लिए माहौल बनाने का प्रयास किया, लेकिन वे विफल रहे और भारतीय जनता पार्टी ने सामूहिक प्रयास से पूरे देश में सर्वाधिक मतों से इंदौर में विजय प्राप्त की है। इसमें बहुत बड़ी भूमिका शक्ति केंद्र एवं बूथ के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की है, जिन्होंने भारतीय जनता पार्टी की हमारी केंद्र एवं प्रदेश की योजनाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक ले जाने का काम किया। वोटर लिस्ट में से फर्जी नाम हटाकर सही नाम जोड़ने के साथ ही नए वोटर के नाम जुड़वा कर कार्यकर्ताओं ने बहुत पहले ही चुनाव की योजना की तैयारी प्रारंभ कर ली थी।

बैठक को संबोधित करते हुए सांसद शंकर लालवानी ने कहा कि 10 वर्षों कि माननीय मोदी जी की सरकार ने अनेक कार्य किए, पिछले वर्षों में इंदौर में ही गरीब कल्याण के अनेक कार्य जिसमें निशुल्क अन्न देना हो या आयुष्मान योजना जिसमें इंदौर देश में नंबर वन है ,इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधा घर देना हो या नल जल योजना के माध्यम से हर घर जल पहुंचाने का कार्य करना हो या फिर उज्ज्वला योजना के माध्यम से सभी घर में रसोई गैस पहुंचना हो या किसान सम्मान निधि के माध्यम से किसानों को राहत पहुंचानी हो ऐसे आने को कार्य किए हैं इसके साथ ही इंदौर की कनेक्टिविटी भी देश के महत्वपूर्ण शहरों से सड़क, रेल एवं वायु मार्ग के माध्यम से आगामी 2 वर्षों में बहुत बेहतर होने जा रही है।

राऊ में चॉकलेट फैक्ट्री कर्मचारी की हत्या

शरीर पर मिले चाकुओं से वार के निशान, रात में शराब पीने को लेकर हुआ था विवाद

इंदौर (एजेंसी)। राऊ थाना इलाके में शुक्रवार को एक युवक की चाकू मारकर

हत्या कर दी गई। युवक का शव संजय गांधी नगर में चाकुओं से गुदा हुआ मिला है। पुलिस ने मामले में जांच शुरू की है।राऊ पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक युवक का नाम योगेश पुत्र नंदकिशोर चौहान निवासी ओम सांई नाथ कॉलोनी है। युवक के शरीर पर चाकू के कई निशान हैं। उसे गंभीर हालत में परिवार के लोग एमवाय अस्पताल लेकर पहुंचे थे। यहां उसे मृत घोषित कर दिया गया।मृतक योगेश के भाई गोल्डी ने बताया कि गुरुवार रात को योगेश का कॉलोनी में ही रहने वाले मुरली से शराब को लेकर विवाद हुआ था। योगेश ने पूरे घटनाक्रम की जानकारी मुझे दी थी। तब मैं ससुराल में था। मैंने उससे कहा था कि सुबह घर आकर मुरली को समझा दूंगा।गोल्डी ने पुलिस को बताया कि उसे और उसके परिवार को मुरली उसके बेटे और एक अन्य आरोपी धर्मेंद्र उर्फ दीपेश पर हत्या करने का शक है।योगेश चॉकलेट फैक्ट्री में काम करता था।

इंदौर में कार मालिक से हेराफेरी

किराए का एग्रीमेंट करने के बाद महाराष्ट्र भेज दी कार, ना किराया दिया, ना कार लौटाई

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के बाणगंगा में कार मालिक से हेराफेरी का मामला सामने आया है। इसमें एक व्यक्ति ने कार का एग्रीमेंट कर उसे किराए पर लिया और ड्राइवर को सौंप दी। वह कार को महाराष्ट्र ले गया और वापस ही नहीं की। पुलिस ने इस मामले में दो लोगों को आरोपी बनाया है। बाणगंगा पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक मुकेश पुत्र लक्ष्मी नारायण परमार निवासी महेश यादव नगर की शिकायत पर पुलिस ने सचिन पुत्र दिनेश कौशल, निवासी मुखर्जी नगर और उसके ड्राइवर गजानंद उर्फ शुभम पुत्र महादेव रेवास्कर, निवासी बुलडाणा महाराष्ट्र के खिलाफ केस दर्ज किया है।मुकेश ने बताया कि उसका और सचिन का अर्टिगा कार को लेकर 22 मार्च 2024 को एग्रीमेंट हुआ था। जिसमें 25,500 रुपए मासिक किराया तय हुआ। 2 माह तक सचिन ने किराया दिया। लेकिन फिर किराया नहीं आया। तो उससे पूछा कि कार कहां है, किराया क्यों नहीं दे रहे। तब सचिन ने कहा कि कार ड्राइवर गजानंद के पास है। वह कार लेकर महाराष्ट्र से नहीं आया। इसके बाद कई बार पूछने के बाद सचिन ने स्पष्ट जवाब नहीं दिया।

संपादकीय

बांगलादेश में आरक्षण विरोध की आग

भारत के विपरीत पड़ोसी बांग्लादेश इन दिनों आरक्षण विरोधी आंदोलन की आग में झुलस रहा है। आंदोलनकारी बांग्ला देश मुक्ति संग्राम में भाग लेने वाले के परिजनों को सरकारी नौकरियों में आरक्षण का विरोध कर रहे हैं। उनकी मांग है कि देश में नौकरियां योग्यता के आधार पर दी जाएं न कि आरक्षण के आधार पर। देश की राजधानी ढाका सहित कई शहरों में विवि के छात्र सड़कों पर उतर आए हैं। आंदोलन के दौरान हिंसा में अब तक 25 लोग मारे गए हैं, कई घायल भी हुए हैं। प्रधानमंत्री शेख हसीना ने उग्र हो रहे आंदोलनकारियों से धैर्य रखने का आग्रह करते हुए भरोसा दिया कि अदालत के ज़रिए उनको 'इंसाफ़' मिलेगा। उन्होंने लोगों से न्यायिक प्रक्रिया पर भरोसा रखने की भी अपील की। क्योंकि यह मामला कोर्ट में है। गौरतलब है कि बांग्लादेश में 1971 में पाकिस्तान से आज़ादी की जंग लड़ने वालों को यहां मुक्ति योद्धा कहा जाता है। देश में एक तिहाई सरकारी नौकरियां इनके बच्चों के लिए आरक्षित हैं। छात्रों का मानना है कि आरक्षण की यह व्यवस्था भेदभावपूर्ण है। कई राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि यह आंदोलन युवा समाज में बढ़ रही नाराज़गी की अभिव्यक्ति है। आंदोलन का नेतृत्व करने वाले छात्र पहले कहते रहे हैं कि उनका आंदोलन सिर्फ़ आरक्षण सुधार के मुद्दे तक ही सीमित है। इसके साथ किसी अन्य मुद्दे का कोई संबंध नहीं है। आंदोलनकारी सरकारी नौकरियों में आरक्षण रद्द कर सिर्फ़ पिछड़ी जातियों के लिए अधिकतम पांच फ़ीसदी आरक्षण जारी रखते हुए आरक्षण व्यवस्था में संशोधन की मांग कर रहे हैं। गौरतलब है कि वर्ष 2018 में आरक्षण रद्द करने की अधिसूचना जारी होने से पहले तक सरकारी नौकरियों में मुक्ति योद्धा (स्वाधीनता सेनानी), ज़िलावार, महिला, अल्पसंख्यक और विकलांग- इन पांच वर्गों में कुल 56 फ़ीसदी आरक्षण का प्रावधान था। बांग्लादेश में वर्ष 1972 से ही सरकारी नौकरियों में मुक्ति योद्धा, ज़िला और महिलाओं के लिए आरक्षण का प्रावधान था। बाद में इसमें कई बदलाव भी हुए। 1976 में पहली बार आरक्षण व्यवस्था में बदलाव कर मेरिट यानी योग्यता के आधार पर नियुक्तियों का प्रतिशत बढ़ाया गया और सिर्फ़ महिलाओं के लिए आरक्षण की अलग व्यवस्था की गई। तत्कालीन स्थापना मंत्रालय (अब लोक प्रशासन) ने 1985 में आरक्षण के दायरे में अल्पसंख्यकों को शामिल करके और योग्यता के आधार पर भर्ती की मात्रा बढ़ाकर इस प्रणाली में संशोधन किया। वर्ष 1997 में सरकारी नौकरियों में मुक्ति योद्धाओं की संतान को भी शामिल किया गया। हालांकि वर्ष 2002 में बीएनपी के नेतृत्व वाले चार दलों की गठबंधन सरकार के दौरान एक अधिसूचना जारी कर मुक्ति योद्धाओं के लिए आरक्षण के आवंटन से संबंधित पहले जारी की गई तमाम अधिसूचनाएं रद्द कर दी गईं। इसमें कहा गया कि मुक्ति योद्धाओं के लिए तय आरक्षण में कोई उपयुक्त उम्मीदवार नहीं मिलता है तो उन पदों (कैडर और गैर-कैडर) को मेरिट सूची में शीर्ष पर रहने वाले उम्मीदवारों से भरा जा सकता है। अवामी लीग सरकार ने इसे रद्द कर दिया। अगला बदलाव 2011 में हुआ। आरक्षण का लाभ मुक्ति योद्धाओं के नाती पोतों को देने का फैसला हुआ। इसके बाद विरोध और बढ़ने लगा। इसकी शुरूआत 2018 में बड़े पैमाने पर आरक्षण विरोधी आंदोलन से हुई। यह मामला कोर्ट भी गया। कोर्ट ने उस याचिका को ख़ारिज कर दिया। शेख हसीना के सामने मुश्किल यह है कि वह आरक्षण समाप्त नहीं कर सकतीं, क्योंकि इसके लाभार्थी उनकी अवामी लीग पार्टी के समर्थक भी है। आंदोलन से एक जायज सवाल तो उठ ही रहा है कि देश में आरक्षण की सुविधा आखिर कब तक चलेगी? यह सवाल तो भारत के लिए भी मौजूं है।

नजरिया

ललित गर्ग
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

पाखंडी बाबाओं से मुक्ति की सार्थक पहल

भारतीय हिंदू संतों की प्रमुख संस्था अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद (एबीएपी) की ओर से चौदह महामण्डलेश्वरों और संतों के निष्कासन की ताजा कार्रवाई पाखण्डी एवं छद्म बाबाओं से समाज को मुक्त करने का सराहनीय कदम है। अखाड़ा परिषद की गोपनीय जांच में अखाड़ों से जुड़े ऐसे संत धार्मिक कार्यों के बजाय धनार्जन एवं अधार्मिक कार्यों में लिप्त पाए गए। ऐसे ही अन्य बाबाओं पर व्यभिचार, दुष्कर्म, जादू-टोटके व दूसरे अनैतिक कार्यों के भी आरोप लगते रहे हैं। इनके अलावा सौ से अधिक संतों को अखाड़ा परिषद ने नोटिस भी दिया है। निष्कासित किए गए संतों को अगले साल होने वाले कुंभ में भी प्रवेश नहीं मिलेगा। अखाड़ा परिषद की ताजा कार्रवाई इस तरह के कथित धर्मगुरुओं पर लगाम लगाने की प्रभावी कोशिश मानी जाएगी। इस तरह के प्रयास हर स्तर पर होने चाहिए, ताकि छद्म एवं पाखण्डी धर्मगुरुओं से समाज को मुक्ति मिल सके। आम लोगों में भी विवेक का जागरण जरूरी है, ताकि धर्म को विकृत करने वाली ऐसी घटनाओं को नियंत्रित किया जा सके।

अखाड़ा परिषद ने कुल चौदह ढोंगी संतों की एक सूची मीडिया में जारी की है। सूची में जेल की हवा खा रहे बाबा रामपाल, गुरमीत राम रहीम सिंह इंसां, आसाराम, नारायण साईं व असीमानंद के अलावा निर्मल बाबा, राधे मां और कई ऐसे इच्छाधारी बाबा शामिल हैं, जो पिछले कुछ सालों में अपनी करनी के चलते विवादों में रहे हैं। गोलगप्पा खिलाकर लोगों की हर समस्या का समाधान करने वाले निर्मल बाबा जैसे ढोंगियों के झांसे में लोग कैसे खिंचे चले आते हैं, इस पर भी अखाड़े की ओर से कई चौंकाने वाले तथ्य बताए गए हैं। ऐसा माना है कि राधे मां और निर्मल बाबा जादू-टोटके से लोगों को अपनी ओर खींचते हैं। बाबाओं की कारस्तानियों ने सबको सकते में डाल रखा है। महिलाओं की अस्मत से खिलवाड़ करना इन बाबाओं की दिनचर्याओं में शामिल था। लाज-शर्म की वजह से कुछ महिलाएं नहीं बोलती थीं, उन्हीं का ये बाबा फायदा उठाते थे। इन बढ़ती त्रासद एवं विडम्बनापूर्ण स्थितियों के खिलाफ अब पूरा अखाड़ा परिषद मुखर हो उठा है। जरूरत है ऐसे ही अन्य शीर्ष धर्म संगठनों के सक्रिय होकर कठोर अनुशासनात्मक कार्यवाई करने की।

फर्जी एवं पाखण्डी बाबाओं के मामले में भोले-भाले एवं अशिक्षित लोगों के जीवन के साथ जो खिलवाड़ हुआ है, उसे और जिन बाबाओं ने ये कुकर्म किया है, उन्हें ढूंढ़कर दंड देना ही चाहिए। फर्जी एवं पाखण्डी बाबाओं की परंपरा सदैव से दुष्टों के हाथ में रही है। इसका आरंभ किया था महाभारत में शकुनि ने। हमारे समाज एवं राष्ट्र ऐसे बहुत सारे बाबा रूपी शकुनि हैं, जिन्हें हम समय पर पहचान नहीं पाते हैं। कौरवों और पांडवों के बीच जब जुए का खेल हुआ, तो शर्त यही थी कि पांसे शकुनि चलेगा। शकुनि ने पांसे भी ऐसे तैयार किए थे कि उसको परिणाम और प्रश्न मालूम थे। आधुनिक बाबा भी ऐसे ही पांसे चलते हुए हुए कइयों की जिंदगी को नरक बना रहे हैं, कइयों के घर उजाड़ रहे हैं। सबसे ज्यादा नुकसान उन लोगों का हुआ है, जो धार्मिक आस्थाओं के प्रति अटूट विश्वास रखते थे, क्योंकि भारत की पहचान सदा से ही साधु-संतों से जुड़ी रही है। लेकिन पिछले एक-दो दशक से कुछ फर्जी बाबाओं ने अपनी काम वासना एवं धनलोलुपता के चलते सबकुछ खंडित कर दिया है। इन बाबा रूपी शकुनियों को दंड देना ही पड़ेगा। आधुनिक बाबाओं की तरह महाभारत का शकुनि कभी किसी से नहीं डरता था, लेकिन वो कहता था, दुर्योधन! मैं इस दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति से डरता हूं और वो श्रीकृष्ण हैं। तो हमें भी आधुनिक बाबाओं के लिये श्रीकृष्ण जैसी एक सख्त व्यवस्था लागू करनी पड़ेगी। क्योंकि श्रीकृष्ण जब किसी को दंड देते थे तो अपना और पराया कभी नहीं देखते थे। श्रीकृष्ण धर्म में जय और जय में धर्म देखते थे। वर्तमान में धर्मगुरुओं एवं बाबाओं का जो चरित्र एवं आचरण प्रस्तुत हो रहा है, वह कष्टदायक एवं विनाशकारी है। इसलिये उनके लिये श्रीकृष्ण रूपी अनुशासन-व्यवस्था को सख्ती से लागू करना ही होगा।

अखाड़ा परिषद का अपना अनुशासन है। अखाड़े से जुड़े संतों में कोई दोष नहीं आ जाए, चरित्रहीनता न आ जाये, आचरण एवं जीवनशैली दूषित न हो जाये, इसे देखते हुए वह समय-समय पर अपने महामण्डलेश्वर व दूसरे संतों की कार्यप्रणाली की गोपनीय जांच कराता रहता है। ऐसी ही हाल में की गयी जांच में सामने आया कि धनार्जन में लिप्त रहने वाले संतों की कार्यप्रणाली अखाड़ों की रीति-नीति के विपरीत थी। इनमें कुछ के तो आपराधिक लोगों से भी संबंध सामने आए। राजनेताओं से भी उनके प्रगाढ़ संबंध रहे हैं। हर समुदाय में संतों का अलग ही स्थान रहता आया है। वे जहां विराजते हैं वह स्थान स्वतः ही उच्च हो जाता है। आज भी बड़ी संख्या में संत-महात्मा समाज को दिशा देने के काम में निःस्वार्थ भाव से जुटे हैं। पर बदलते दौर में संत-महात्मा-मुल्ला-मौलवियों व पीर-पगारों के छद्म-पाखण्डी वेश में ऐसे लोग भी सामने आने लगे हैं जो धार्मिक कार्यकलापों की बजाय न केवल अर्थार्जन में जुटे रहते हैं बल्कि अंधविश्वास, व्यभिचार और पाखण्ड को बढ़ावा देने में जुटे हैं। छद्म धर्मगुरु और संत लोगों की धार्मिक श्रद्धा एवं अंधभक्ति का फायदा उठाकर उन्हें ठगते हैं। ऐसे लोगों का गाहे-बगाहे सियासी जुड़ाव भी सामने आता रहता है। ऐसे ही लोग संत समाज को बदनाम करते हैं, जिससे लोगों की धार्मिक आस्था भी डगमगाने लगती है।

धर्मगुरुओं के धन के प्रति बढ़ते आकर्षण ने भी अनेक तरह की विसंगतियों एवं विकृतियों को जन्म दिया है। अब तक धर्म और धर्मगुरुओं के इर्द-गिर्द ठाट-बाट और राजा-महाराजाओं जैसी वैभवपूर्ण स्थितियां ही देखने को मिलती थीं, लेकिन अब ये तथाकथित धर्मगुरु स्वयं व्यापारी बनकर बड़ी-बड़ी कंपनियों का संचालन कर रहे हैं। एक प्रमुख महिला धर्मगुरु बहुत सारे धार्मिक कार्यों के अलावा अस्पताल, एक टीवी चैनल, इंजीनियरिंग कॉलेज और बिजनेस स्कूल चलाती है। हाल ही में दिल्ली में आयोजित हुए विश्व धार्मिक सांस्कृतिक सम्मेलन में देखा कि किस तरह से पानी से लेकर खाद्य पदार्थ तक बेचे गए। एक बड़ा पंथ चलाने वाले राम-रहीम ऑर्गेनिक उत्पाद खिलाकर देश को सेहतमंद बनाने की तमन्ना रखते हैं। ये एक ऐसी लंबी सूची है जिसमें वर्तमान के लगभग सभी चर्चित धर्मगुरु ऐसे ही व्यावसायिक कार्यों और लाभकारी इकाइयों से जुड़े हैं। व्यावसायिक लाभों के लिए राजनीतिक और व्यावसायिक नेटवर्क रखने के साथ-साथ बड़ी संख्या में धार्मिक अनुयायी रखना इन तथाकथित धर्मगुरुओं की परंपरा रही है।

राजनीति पर धर्म के अनुशासन की बात उचित है, लेकिन धर्मगुरुओं को प्रतिष्ठापित करने के बहाने राजनीति का खेल न खेला जाए, इस बात की जरूरत सर्वाधिक है। अपनी लोकप्रियता के बल पर कुछ धर्मगुरु भारतीय राजनीति के बदलते दौर में कुछ सीटें जीतकर सामने आए हैं। धर्मगुरु से राजनीतिज्ञ बन जाने की ये घटनाएं न केवल धर्मक्षेत्र के लिए बल्कि राजनीति के लिए भी घातक हैं। जहां धर्मगुरुओं के अनुयायी अधिक संख्या में हैं, उन क्षेत्रों में वे स्वयं जीतें न जीतें, वहां के परिणाम को प्रभावित कर ही सकते हैं। उनका यह असर किस दिशा में होगा? कौन सी बड़ी ताकत को लाभ मिलेगा? यानी राजनीति एवं राजनेताओं पर इन धर्मगुरुओं एवं बाबाओं का गहरा प्रभाव एवं वर्चस्व भी अनेक विसंगतियों का कारण बना है। हाथरस में सूरजपाल जाटव उर्फ साकार हरि 'बाबा' के तथाकथित सत्संग में 121 लोगों की मौत का कारण बना। ऐसे फर्जी एवं तथाकथित चमत्कारी बाबाओं के चक्कर लगाने वालों में महिलाएं एवं दलित बड़ी संख्या में हैं। भगदड़ एवं अन्य हादसों की स्थिति में यही लोग मारे जाते हैं। प्रश्न है कि ढोंगी एवं पाखण्डी बाबाओं के पास जाने वाले लोग अपनी तर्क-बुद्धि एवं विवेक से काम क्यों नहीं लेते? अंधविश्वासों के सहारे तरक्की की सीढ़ियां क्यों चढ़ना चाहते हैं? ये विडंबनापूर्ण स्थितियां हैं। जनता की कमजोरी के कारण ही कभी हमारे यहां धर्म की राजनीति में घुसपैठ होती रही है तो अब आर्थिक गतिविधियों से उनका गठबंधन हो रहा है। जब-जब ऐसी स्थितियां हुई हैं, तब-तब धर्म और धर्मगुरु अपने विशुद्ध स्थान से खिसके हैं। खिसकते-खिसकते वे ऐसी डांवाडोल स्थिति में पहुंच गए हैं, जहां धर्म को अफीम कहा जाने लगा है।

शिक्षा

डॉ.सत्येंद्र किशोर मिश्र
लेखक विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा की कसौटी पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति

प्राचीन भारतवर्ष में एक ऐसी काल एवं स्थान निरपेक्ष उन्नत ज्ञान प्रणाली थी, जो आध्यात्मिकता एवं दर्शन, बौद्धिकता एवं तार्किकता तथा विज्ञान एवं कला के क्षेत्र में मार्गदर्शन तथा प्रेरणा देती रही है। वसुधैव कुटुम्बकम की उदार एवं समावेशी अवधारणा भारतीय संस्कृति और सामाजिक जीवन के अद्वितीय उदाहरण के साथ विश्व को ज्ञान-विज्ञान और शिक्षा-कौशल हेतु आकर्षित किया। प्राचीन ज्ञान, साहित्य और परंपराओं के साथ सांस्कृतिक लोकाचार ने भारत को पहचान प्रदान की। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) की बुनियाद पर भारतीय शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन की परिवर्तनकारी यात्रा है। ऐसे प्रयासों के मध्य वैज्ञानिक सोच विकसित करने और आधुनिक विज्ञान के प्रति इसके नजरिए तथा प्रभावों को समझने की जरूरत है।

भारत में ज्ञान-विज्ञान की कालातीत गौरवशाली परंपरा रही है। जो गणित और खगोल विज्ञान में गहन खोजों से लेकर, उपनिषदों में ब्रह्मांड की समग्र समझ तक, भारतीय ज्ञान प्रणाली प्राचीन ज्ञान और वैज्ञानिक खोज को समन्वित करती है। यद्यपि भारत योग तथा आध्यात्मिकता में अपनी उपलब्धियों के लिए जाना जाता है, लेकिन भौतिक जीवन में भी प्रगति कम महत्वपूर्ण नहीं थी। वैश्विक स्तर पर तेज बदलाव और विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति ने भारतीय समाज में नाटकीय परिवर्तन हुए हैं। निःसंदेह भारत ने वाणिज्य, प्रौद्योगिकी और विकास आदि क्षेत्रों में कई सीमाएं लांघी हैं, परन्तु साथ ही भारतीय संस्कृति तथा परंपरा से अलगाव और मूल्यों में गिरावट भी दिखी है।

पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली अनेक प्राचीन सभ्यताओं और आधुनिक महाद्वीपों की विभिन्न धाराओं को समाहित करते हुए आधुनिक यूरोप में विकसित ज्ञान की तार्किकता के साथ जुड़ी है। इसके केंद्र में बौद्धिक परिणाम, सत्यापन योग्यता, अमूर्तता के सामूहिक ज्ञान की अवधारणा है। वस्तुतः यह भौतिकता, सांस्कृतिक रूप और यथार्थ विवरण के रूप में आईकेएस से भिन्नता रखती है। शिक्षा मनुष्य में पहले से विद्यमान पूर्णता की अभिव्यक्ति है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली सरकारी बाबू बनाने तक ही सीमित है, जिसका मकसद छात्र की वास्तविक क्षमता को निखारना नहीं, अपितु एक आत्मकेंद्रित नौकरी चाहने वाले जीविकोपार्जन केंद्रित व्यक्ति का निर्माण है। पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली ने भारत की संस्कृति तथा ज्ञान परंपरा को नजरन्दाज कर भारतीय आत्मविश्वास, स्वतंत्र सोच, रचनात्मकता और उद्यमशीलता की भावना ही नष्ट कर दिया। स्वतंत्रता के बाद भी भारत में पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली पश्चिमीकरण, निजीकरण और सांस्कृतिक अलगाववाद की बुराइयों के साथ बरकरार रही, जिससे देश की प्रगति तथा गौरव बाधित रहा। वस्तुतः भारत की दुर्दशा का मूल कारण पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली बनी, जिसने गुलामी की मानसिकता पैदा कर भारतीयों के सामर्थ्य को दबा रखा। व्यक्ति बहुत कुछ करने में सक्षम होता है, लेकिन वर्तमान शिक्षा उसे सीमित करती है, इसका समाधान आईकेएस में है।

आईकेएस में दर्शन, व्यावहारिक शिक्षा, कला, कौशल, शिल्प कौशल, कृषि, स्वास्थ्य और विज्ञान शामिल हैं, जिनके अध्ययन, अनुकूलन और आधुनिक जीवन में एकीकरण से परिवर्तनकारी शुरुआत होगी। आईकेएस की बुनियाद पर एनईपी, भारतीय शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण बदलाव लाने को तत्पर है। भारत औपनिवेशिक मानसिकता से छुटकारा तथा अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और ज्ञान परंपराओं को अपनाकर, वैश्विक महाशक्ति बन सकता है। आईकेएस मानसिक स्वतंत्रता और बौद्धिक सशक्तिकरण के नए युग का आरंभ कर राष्ट्रनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, इससे न केवल भारत को बल्कि संपूर्ण वैश्विक समुदाय का भी कल्याण होगा।

आईकेएस में पारंपरिक चिकित्सा, ज्योतिष, योग, ध्यान सहित पीढ़ियों से चली आ रही प्राचीन ज्ञान-विज्ञान की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जिसकी भारतीय संस्कृति तथा इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका है। आईकेएस के प्रमुख स्तंभों में वैदिक साहित्य है, जो भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का आधार है। वैदिक साहित्य दार्शनिक शिक्षा, नैतिक सिद्धांत और व्यावहारिक ज्ञान के साथ-साथ प्राचीन भारत की गहन समझ और ज्ञान में अंतर्दृष्टि प्रदान कर सहस्राब्दियों से भारतीय जीवन शैली को आकार देकर साहित्य, कला, संगीत, वास्तुकला और शासन सहित विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित करता रहा है। वेदों के प्रत्येक श्लोक में प्रतीकवाद और छिपे हुए अर्थ के साथ ब्रह्मांड विज्ञान से लेकर नैतिकता तक, अनुष्ठानों से लेकर संगीत तक के ज्ञान हैं।

उपनिषदों के दार्शनिक तथा आध्यात्मिक विचार साधकों को आत्मान्वेषण के साथ जीवन तथा जगत के अस्तित्व की खोज तथा सार्वभौमिक चेतना का ज्ञान देते हैं। ईशावास्योपनिषद् में विद्ययामृतमश्नुते विद्या से अमरत्व प्राप्त करना बताता है तो लोकमंगल हेतु सम्भूत्यामृतमश्नुते लोककल्याण से भी अमरत्व प्राप्त होता है। श्रीमद्भगवद्गीता में करुणा, अहिंसा और शांति की स्थापना पर बल देते हुए आध्यात्मिक अवधारणाओं के संश्लेषण के साथ उद्देश्यपूर्ण जीवन हेतु मार्गदर्शन है। आज योग और ध्यान को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नयन हेतु वैश्विक मान्यता प्राप्त है। भारतीय षड्दर्शन आत्मचिंतन का अद्वितीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। न्यायदर्शन तर्क और ज्ञानमीमांसा पर केंद्रित है, जबकि वैशेषिक दर्शन परमाणुओं और उनके संयोजनों के विश्लेषण के माध्यम से प्रकृति की वास्तविकता का पता लगाता है। सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत दर्शन ने गहरी दार्शनिकता की नींव रखी। आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त जैसे प्राचीन भारतीय गणितज्ञों ने अंकगणित, बीजगणित और ज्यामिति में महत्वपूर्ण खोज की। शून्य की उत्पत्ति ने गणित में क्रांति ला दी, जिससे दशमलव अंक प्रणाली का विकास हुआ। सौरमंडल के सूर्यकेंद्रित मॉडल पर आर्यभट्ट का ज्ञान अपने समय से सदियों आगे था। चिकित्सा और आयुर्वेद, उपचार पद्धति भारतीय ज्ञान प्रणाली का अभिन्न अंग है। सुश्रुत संहिता चिकित्सा और सर्जरी का एक अद्वितीय ग्रंथ है। आयुर्वेद शरीर, मन और आत्मा के मध्य संतुलन पर ध्यान केंद्रित करते हुए समग्र कल्याण पर जोर दिया।

एनईपी के पाठ्यक्रमों में व्यावहारिक ज्ञान का एकीकरण है जो न केवल तकनीकी रूप से संपन्न होने पर बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी में नवीनतम प्रौद्योगिकी के नैतिक उपयोग पर बल देती है। एनईपी का लक्ष्य आईकेएस की बुनियाद पर भारतीय शिक्षा प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन करना है। भारत विश्व में सांस्कृतिक विरासत, जीवन मूल्यों और समृद्ध साहित्य के कारण एक विशिष्ट स्थान रखता है। इसलिए, सभी स्तरों पर पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र में नये सिरे से पुनःसंरचना की आवश्यकता है, जो संस्कृति, परंपरा, विरासत, रीति-रिवा, भाषा, दर्शन, भूगोल, प्राचीन और समकालीन बौद्धिकता, तार्किकता एवं ज्ञान के अनुकूल हों। भारतीय और स्थानीय संदर्भ और लोकाचार में दृढ़ता, सामाजिक और वैज्ञानिक आवश्यकताएँ, सीखने के स्वदेशी और पारंपरिक तरीके भी जरूरी हैं। पाठ्यक्रम यह सुनिश्चित करेगा कि शिक्षा छात्रों के लिए भरोसेमंद, प्रासंगिक और प्रभावी हो, जिससे युवा पीढ़ी भारत की समृद्ध संस्कृति और विरासत पर गर्व कर सकेगी। भारतीय संस्कृति सदियों से विकसित होकर कला, साहित्य के कार्यों, रीति-रिवाजों, परंपराओं, भाषाई अभिव्यक्तियों, कलाकृतियों, विरासत स्थलों सहित अन्य रूपों में वर्तमान है। इससे नागरिकों में सकारात्मक सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान की भावना का निर्माण होगा। सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।

सतर्कता भी जरूरी है, अति उत्साह एवं आवेग में यह सोचना कि समस्त ज्ञान-विज्ञान आईकेएस के अंतर्गत ही हैं, पाश्चात्य ज्ञान प्रणाली सर्वथा निरर्थक तथा बेकार है, बौद्धिकता के स्तर पर घातक हो सकता है। निःसंदेह आईकेएस की एक गौरवशाली विरासत है, इसको समझने, खोजने तथा सामायिक तथा राष्ट्रीय संदर्भों में स्थापित करने की जरूरत भी है, परन्तु आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के युग में अन्य वैश्विक ज्ञान परंपराओं को बगैर सही ढंग से सत्यता तथा तार्किकता की कसौटी पर कसे, पूरी तरह से खारिज करना तथा आईकेएस को समग्रता में अपना लेना कदापि उचित नहीं होगा। कोई भी ज्ञान-विज्ञान की परंपरा यदि सर्वकालिक तथा सार्वभौमिक होने के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कसौटी पर खरी साबित हो तो उसे अपनाने तथा बढ़ाने में कभी परहेज नहीं होना चाहिए। उपनिषद का सूक्त वाक्य असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय यही मार्गनिर्देशित करता है।

भारत को अपने ज्ञान-विज्ञान के गौरवशाली स्रोत के साथ फिर से जुड़ने, आत्मसात करने तथा अनुप्रयोग हेतु अनुकूलित करना है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में आईकेएस आधारित पाठ्यक्रमों तैयार कर सभी के लिए गुणवत्ता और समान शिक्षा हेतु प्रयास करना होगा। असल चुनौती प्राचीन ज्ञान-विज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं तार्किकता के संदर्भों में पुनर्व्याख्या करने, समझने तथा व्यवहार में लाने की है। आईकेएस न केवल अपने नागरिकों के लिए अपितु संपूर्ण विश्व के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है।

कटाक्ष

दिनेश विजयवर्गीय
लेखक व्यंग्यकार हैं।

गुस्सा शांत करने के तौर-तरीके

शिशु रोता है तो मां समझ जाती है कि वह भूखा है और गुस्से में भरकर अपना रोष प्रकट कर रहा है। मां उसके गुस्से को शांत करने के लिए उसे तुरंत दूध पिलाकर शांत कर देती है । जब कभी बच्चे परिजन से गुस्सा होते हैं तो वह टॉफी या कोई मनचाहा पाकर अपना गुस्सा शांत कर लेते हैं ।पति गुस्सा होता है तो समझदार पत्नी अपनी विशेषताओं से उसका गुस्सा शांत कर देती है। दूध में गुस्से भरा उफान आता है तो उस पर डाले गए पानी की छींटों से उसके तूफानी गुस्से को शांत कर हो जाता हैं।

पुलिस वाले से जब जन हित से उलट कोई ग़लत कार्य या नियम विरुद्ध काम हो जाता है तो कभी जनता उबल पड़ती है। ऐसे में पुलिस अधिकारी उसे तुरंत लाइन हाजिर कर जनता के तात्कालिक गुस्से को हाशिये में धकेल शांत कर देता है। कभी कोई किसी की हत्या कर दे और सांप्रदायिक माहौल बिगड़ने की संभावना हो तो मुख्यमंत्री अपराधी को बक्शा नहीं जाएगा ? का भरोसा जता कर, संबंधित व्यक्ति के परिवार के परिजन को सरकारी नौकरी और आर्थिक सहायता देकर जनता और मृतक के परिवार का गुस्सा शांत कर देते हैं।

रेल एक्सीडेंट, पटाखा फैक्ट्री में दुर्घटना या अन्य ऐसे ही किसी लापरवाही से होने वाले हादसों से जब लोग मर जाते हैं या घायल हो जाते हैं तो सरकार जनता का गुस्सा शांत करने के लिए उन्हें आर्थिक सहायता देकर और एक जांच आयोग भी गठित कर देती हैं। ,

यदि कभी कोई किसी पर का गुस्सा न कर सके तो वह उसे मन ही मन गाली दे कर ही गुस्सा शांत कर लेता है । कहीं भीड़ किसी मुद्दे या घटना पर आक्रामक होकर सरकारी संपत्ति को जलाये और तोड़ फोड़ करने लगे तो सरकार शांति बनाए रखने के लिए कर्फ्यू लगा देती है । इंटरनेट बंद कर देती है। कभी बुजुर्ग भी लोगों का गुस्सा अपनी प्यार भरी समझाइश से दूर कर शांति स्थापित कर देते हैं।

अब आप ही सोचिए कि यदि गुस्सा शांत करने के ये तरीके नहीं होते तो पोस की ठंड में भी जेठ की गर्मी सा एहसास बना रहता है और जनता भी भीतर ही भीतर टसर मसर होती रहती।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

केदार शर्मा
लेखक व्यंग्यकार हैं।

इंसानों के संग, हाथी दर्शन के रंग

जंगल में एक दिन एक युवा हाथी को एक वृद्ध हाथी मिला। युवा हाथी निराशा से भरा था,कह रहा था-'जंगल समाप्त हो गए हैं,इंसानी बस्तियों का दख़ल बढ़ता जा रहा है। हाथियों का अब वो रुतबा नहीं रहा।'वृद्ध हाथी ने समझाया-'भइए! तू अभी इंसानों की संगत में रहा नहीं। मैं रहा हूं और मेरा तजुर्बा कहता है कि भले ही जंगलराज अब न रहा हो पर धीरे-धीरे कई राज भीड़ के जंगलों में तब्दील होते जा रहे हैं। सारे जंगली जानवरों का इंसानी बस्तियों में पुनर्जन्म हो गया है। ये इंसानी खोल में नक्सली, आतंकवादी, गैंगस्टर,माफिया,डॉन जो दिखाई दे रहें हैं,उन खत्म हुए जंगली जानवरों के ही पुनर्जन्म हैं।

रही हाथियों की संख्याग की बात तो हाथी भले ही उतनी संख्या में नहीं रहे हों पर इंसानों पर तेजी से हाथियों का दर्शन का रंग चढ़ता जा रहा है। हाथी रहें या न रहें,पर उनका दर्शन हमेशा रहेगा। हम हाथी कोई सामान्य प्राणी नहीं हैं,हमारे अंग-अंग में प्रेरणाएं छुपी हुई हैं। हाथी दर्शन सबसे अमूल्य दर्शन है।

जो भी प्राणी हाथी दर्शन को आत्मसात् कर लेता है और जितनी ऊँची पद-प्रतिष्ठा हथिया लेता है वह उतना ही स्वार्थ में मदमस्त होकर मस्तानी चाल चलने लगता है। वह परवाह करना छोड़ देता है कि उसके आगे-पीछे,अगल-बगल में कौन पुकार रहा है,कौन व्यथा सुना रहा है,कौन समस्या बता रहा है,उसे कोई सरोकार नहीं रहता है। वह उन सबको श्वा न की भाँति समझता है जिनका काम है भौंकना,कौतुहल से उसे जाते हुए देखना और हाथी दर्शन को अपनाने वाले शख्स, का काम है चुपचाप चलते रहना।' उच्च पदस्थ अधिकारी और शिखर पर पहुँचे नेता हम हाथियों के दर्शन के अघोषित अनुयायी है।

युवा हाथी ने जिज्ञासा व्यक्त की-'सुना है हाथियों में भी सफेद हाथियों का बड़ा रुतबा है ? वृद्ध हाथी हँसने लगा,बोला-हाँ,सफेद हाथी का जिसे दर्जा मिल जाता है उसे करना कुछ नहीं पड़ता और चारा-पानी सब बैठे बिठाए ऑटोमेटिक मिलता जाता है। जहाँ जाता है वहाँ पुष्पसहार पहनाए जाते है। चंदन लगाया जाता है। आरती उतारी जाती है। जिसने पिछले मनुष्य जन्म में घोर 'पुण्यरकर्म' किए हों, वह महामहिम पुण्योत्मा ही अगले जन्म में सफेद हाथी की प्रतिष्ठार का सुखोपभोग करता है।

युवा हाथी की तन्मयता पर रीझकर वृद्धहाथी ने आगे बताना जारी रखा-संसार में हम हाथी ही ऐसे बेमिशाल प्राणी हैं जिनके खाने के दाँत अलग और दिखाने के दाँत अलग होते हैं। जिस-जिसने भी हमारे इस दर्शन को अपनाया है,वे खाते भी खूब हैं,जमकर खाते हैं,पर उनके खाने के दाँत निदिंत नहीं होते बल्कि अभिनंन्दित होते है। क्योंकि उनके दिखाने के दाँत संघों में,सभाओं और सोसायटी में,ट्रस्टों और भंडारा या लंगर में मुक्तदंत से अवदान देते हैं। इस दाँत खाते हैं उस दाँत देते हैं। दिखने वाले दंत खाने वाले दंतों के खावपन को आवृत रखते हैं। हाँ, खाने वाले दाँत कितने भी सख्त और भद्दे क्यों न हों,दिखने वाले दाँत मनमोहक और सोफ्ट होने चाहिए। बाहरी दाँत छवि बनाते हैं और जब एक बार छवि बन जाती है तो सामने वाले बंदे खाने वाले दाँतों को भूल जाते है। इस तरह आगे और खाने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। दाँतो का यह दर्शन क्या राजनीति क्या नौकरशाही और क्या व्यापार सब जगह खूब लोकप्रिय हुआ है,हो रहा है एवं होता रहेगा। आज हर चतुर शख्सह दाँतों के दो सेट रखता है-दिखाने के अलग,खाने के अलग। वृद्ध हाथी के द्वारा प्रदत्त इस ज्ञान से युवा हाथी की निराशा के बादल छँट गए। वह हाथी दर्शन की इस अद्भुत माया के महत्व को जान चुका था।

पर्यावरण

पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होने का समय

डॉ. सौरभ मालवीय

लेखक लखनऊ विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर हैं।

भारत सहित विश्व के अधिकांश देश पर्यावरण संबंधी समस्याओं से जूझ रहे हैं। ग्रीष्मकाल में भयंकर गर्मी पड़ रही है। प्रत्येक वर्ष निरंतर बढ़ता तापमान पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़ रहा है। देश में गर्मी के कारण प्रत्येक वर्ष हजारों लोग दम तोड़ रहे हैं। यह सब ग्लोबल वार्मिंग के कारण हो रहा है। यह पृथ्वी की सतह का दीर्घकालिक ताप है, जो मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न हुआ है। विगत कुछ दशकों में जिस तीव्र गति से जलवायु परिवर्तन हो रहा है वह चिंता का विषय है। इसके भयंकर दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। कहीं सूखा पड़ रहा है तथा भूजल स्तर बहुत नीचे चला गया है। लोग पेयजल के लिए त्राहिमाम कर रहे हैं। देश की राजधानी दिल्ली के निवासी भी जल संकट से जूझ रहे हैं। कहीं अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। दिल्ली के अनेक क्षेत्र भी बाढ़ की चपेट में आते रहते हैं। देश की राजधानी की इस स्थिति से पता चलता है कि समस्या कितनी गंभीर है। इससे देश के अन्य क्षेत्रों की स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त वायु प्रदूषण भी मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहा है।

मानव अपने स्वार्थ के लिए निरंतर प्रकृति को हानि पहुंचा रहा है। वनों से वृक्ष काटकर उन्हें समाप्त किया जा रहा है। विकास के नाम पर भी वृक्ष काटे जा रहे हैं। पर्वतों में खनन किया जा रहा है। मानव ने वन समाप्त करके वन्य प्राणियों के लिए आश्रय एवं भोजन का संकट उत्पन्न कर दिया है। कृषि भूमि पर कॉलोनियां बसाई जा रही हैं। इससे कृषि भूमि कम हो रही है। अत्यधिक रसायनों एवं कीटनाशकों के प्रयोग से उपजाऊ भूमि बंजर होती जा रही है। इससे निरंतर बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए खाद्यान्न का संकट उत्पन्न हो सकता है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक जल स्रोत तालाब, जोहड़ व अन्य जलाशय समाप्त हो रहे हैं। नदियां अत्यधिक दूषित एवं विषैली हो रही हैं। इससे जलीय जीवों के लिए संकट उत्पन्न हो गया है। प्लास्टिक कचरे से भी प्रदूषण बढ़ रहा है। इसलिए समस्त जीवों को बचाने के लिए पर्यावरण संरक्षण अत्यंत आवश्यक है।

पर्यावरण शब्द संस्कृत भाषा के 'परि' एवं 'आवरण' से मिलकर बना है अर्थात जो चारों ओर से घेरे हुए है वही पर्यावरण है। जिस पर्यावरण में हम रहते हैं, हमें उसे संरक्षित करना होगा अर्थात् हमें अपने चारों ओर के वातावरण को संरक्षित करना होगा तथा इसे जीवन के अनुकूल बनाना होगा। पर्यावरण संरक्षण के लिए जल संरक्षण, मृदा संरक्षण, वन संरक्षण, वन्य जीव संरक्षण तथा जैव विविधता संरक्षण पर गंभीरता से कार्य करना होगा। यह सर्वविदित है कि मानव शरीर पंचमहाभूत से निर्मित है, जिनमें आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी सम्मिलित है। प्राणियों के लिए वायु एवं जल अत्यंत आवश्यक है। उन्हें जीवित रहने के लिए भोजन भी चाहिए, जो भूमि से प्राप्त होता है। वनों से हमें जीवनदायिनी औषधियां प्राप्त होती हैं। इसलिए हमें वायु, जल, वन एवं मृदा को संरक्षित करना होगा।

जल संरक्षण के लिए प्राकृतिक रूप से बने जलाशयों को संरक्षित करना होगा। नए तालाब बनाने होंगे। जल संग्रहण करना होगा अर्थात् वर्षा के जल को विभिन्न विधियों से संचित करना होगा। तालाब एवं जोहड़ों के अतिरिक्त भूमि के नीचे बनाए गए टैंक के माध्यम से भी वर्षा जल संचयित किया जा सकता है। इसके साथ-साथ जल को व्यर्थ बहने से रोकना होगा। जितनी आवश्यकता हो, उतने ही जल का उपयोग किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त नदियों एवं अन्य जलाशयों को प्रदूषित होने से भी बचाना होगा।

मृदा का संरक्षण भी अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए रिक्त पड़ी भूमि पर पौधारोपण किया जा सकता है। इससे एक ओर हरियाली में वृद्धि होगी, तो दूसरी ओर मृदा कटाव रुकेगा तथा भूमि ऊसर होने से भी बचेगी। इसके अतिरिक्त हानिकारक औद्योगिक कचरे को समाप्त करके भी भूमि को दूषित एवं ऊसर होने से बचाया जा सकता है। प्लास्टिक की थैलियों के स्थान पर कपड़े के थैलों का उपयोग करके प्लास्टिक कचरे को कम किया जा सकता है।

वनों का संरक्षण करके भी पर्यावरण को स्वच्छ बनाया जा सकता है। वन संरक्षण का उद्देश्य यह कि वनों को कटने से बचाया जाए तथा अधिक से अधिक पौधारोपण किया जाए। यदि कहीं विकास कार्यों के कारण वृक्ष काटने अति आवश्यक हों, तो उनसे अधिक संख्या में पौधारोपण किया जाए, जिससे उनकी कमी को पूर्ण किया जा सके। वन विभिन्न प्राणियों के आश्रय स्थल हैं। इन्हें सुरक्षित रखकर वन्य जीवों के आश्रय स्थल की भी रक्षा की जा सकती है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए देश में कई अधिनियम हैं। इनमें भारतीय वन अधिनियम- 1927, वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम- 1972, जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम- 1974 तथा 1977, वन संरक्षण अधिनियम- 1980, वायु (प्रदूषण एवं नियंत्रण) अधिनियम- 1981, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम-1986, जैव-विविधता

संरक्षण अधिनियम- 2002, राष्ट्रीय जलनीति- 2002, राष्ट्रीय पर्यावरण नीति- 2004 एवं वन अधिकार अधिनियम- 2006 प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं।

सरकार पर्यावरण संरक्षण के लिए कई योजनाएं चला रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वर्ष 2021 में घोषित पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली अभियान को आगे बढ़ाने के लिए, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने दो अग्रणी पहल की हैं। प्रथम ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम है, जो पर्यावरणीय गतिविधियों को प्रोत्साहन प्रदान करता है। विगत 13 अक्टूबर, 2023 को अधिसूचित ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम एक अभिनव बाजार-आधारित व्यवस्था है जिसे व्यक्तियों, समुदायों, निजी क्षेत्र के उद्योगों और कंपनियों जैसे विभिन्न हितधारकों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में स्वैच्छिक पर्यावरणीय कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए डिजाइन किया गया है। इसका शासन ढांचा एक अंतर-मंत्रालयी संचालन समिति द्वारा समर्थित है तथा भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम के प्रशासक के रूप में कार्य करता है। यह कार्यक्रम कार्यान्वयन, प्रबंधन, निगरानी और संचालन के लिए उत्तरदायी है। यह प्रोग्राम अपने प्रारंभिक चरण में दो प्रमुख गतिविधियों जल संरक्षण और वनीकरण पर ध्यान केंद्रित करता है। ग्रीन क्रेडिट देने के लिए प्रारूप पद्धति विकसित की गई है और हितधारक परामर्श के लिए इसे अधिसूचित किया जाएगा। ये पद्धतियां प्रत्येक गतिविधि अथवा प्रक्रिया के लिए मानक निर्धारित करती हैं, जिससे सभी क्षेत्रों में पर्यावरणीय प्रभाव और प्रतिस्थापना सुनिश्चित की जा सके। एक उपयोगकर्ता-अनुकूल डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म परियोजनाओं के पंजीकरण, उसके सत्यापन और ग्रीन क्रेडिट जारी करने की प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करेगा। विशेषज्ञों के साथ भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद द्वारा विकसित किया जा रहा ग्रीन क्रेडिट रजिस्ट्री और ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म, पंजीकरण और उसके बाद ग्रीन क्रेडिट के क्रय एवं विक्रय की सुविधा प्रदान करेगा।

द्वितीय ईकोमार्क योजना है, जिसका उद्देश्य पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों को प्रोत्साहन प्रदान करना है। पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली के पीछे का दर्शन व्यक्तिगत विकल्पों और व्यवहार को स्थिरता की ओर ले जाना है। इस दृष्टिकोण के अनुरूप, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने अपनी ईकोमार्क अधिसूचना को फिर से तैयार किया है, ताकि उपभोक्ता उत्पादों के बीच चयन करने में सक्षम हो सकें और इस तरह उन उत्पादों को चुन सकें जो उनके डिजाइन, प्रक्रिया आदि में पर्यावरण के अनुकूल हैं। जो जलवायु परिवर्तन, स्थिरता और पर्यावरण के प्रति जागरूक प्रथाओं को प्रोत्साहन देने के लिए देश के सक्रिय दृष्टिकोण का संकेत देती हैं। ये योजनाएं परंपरा एवं संरक्षण में उपस्थित पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं को प्रोत्साहित करती हैं, जो पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली की अवधारणा के विचारों को प्रदर्शित करती हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं- 'हमारे लिए पर्यावरण की रक्षा आस्था का विषय है। हमारे पास प्राकृतिक संसाधन हैं क्योंकि हमारी पिछली पीढ़ियों ने इन संसाधनों की रक्षा की। हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी ऐसा ही करना चाहिए।'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निजी प्रयासों से भारत पर्यावरण संरक्षण एवं जलवायु परिवर्तन की दिशा में ठोस पहल करने वाला अग्रणी देश बना है। पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश प्रभु ने पर्यावरण संरक्षण एवं जलवायु परिवर्तन की दिशा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों को दर्शाने वाली एक घटना का उल्लेख करते हुए कहा था कि जब नरेंद्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब गुजरात 'जलवायु परिवर्तन विभाग' वाला देश का प्रथम राज्य बना था। यह एक अनूठा प्रयास था, जबकि तब केंद्रीय स्तर पर पर्यावरण मंत्रालय ने भी जलवायु परिवर्तन की अवधारणा को एकीकृत नहीं किया था।

लोकसभा चुनाव के भारतीय जनता पार्टी के 'भाजपा का संकल्प मोदी की गारंटी 2024' नामक घोषणा पत्र में पर्यावरण का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। इसमें कहा गया है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दी गई पर्यावरण के लिए जीवन शैली की अवधारणा को विश्व ने स्वीकार किया है। इस मंत्र को साकार करने के लिए हमने पर्यावरण प्रबंधन के सभी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया है। हम पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली में विश्व का नेतृत्व करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम पारंपरिक ज्ञान के साथ-साथ आधुनिक प्रथाओं का उपयोग करके एक स्वस्थ समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध हों। हमने कई ऐसी योजनाएं क्रियान्वित की हैं, जिससे पर्यावरण की सुरक्षा होगी। जैसे प्रधानमंत्री सूर्य का घर योजना, रेलवे का विद्युतीकरण, ई-बस, इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रसार एथेनॉल और बॉयो फ्यूल का उपयोग इत्यादि। इन सब योजनाओं से हम नेट जीरो के लक्ष्य की प्राप्ति की ओर तीव्र गति से अग्रसर हैं तथा इन योजनाओं से हमारे नागरिकों के लिए वातावरण सुनिश्चित होगा।

विगत विश्व पर्यावरण दिवस पर प्रधानमंत्री मोदी ने नई दिल्ली के बुद्ध जयंती पार्क में पीपल का पौधा लगाकर 'एक पौधा मां के नाम' नामक अभियान प्रारंभ किया। उन्होंने एक्स पर लिखा था- 'मैंने प्रकृति मां की रक्षा करने और सतत जीवन शैली अपनाने की हमारी प्रतिबद्धता के अनुरूप एक पेड़ लगाया। मैं आप सभी से यह आग्रह करता हूं कि आप भी हमारे ग्रह को बेहतर बनाने में योगदान दें।'

इसमें दो मत नहीं है कि सरकारी प्रयास एवं जनभागीदारी से पर्यावरण को संरक्षण किया जा सकता है। हमें अपने बच्चों को भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना होगा, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ वातावरण मिल सके।

स्वच्छ भारत के नक्शे में क्यों नजर नहीं आती स्लम बस्तियां?

मुद्दा

ईशा कुमारी

देश को स्वच्छ बनाने के लिए पिछले कुछ वर्षों से केंद्र के स्तर पर लगातार प्रयास किये जाते रहे हैं. एक ओर जहां स्वच्छ भारत अभियान चलाया जाता है वहीं दूसरी ओर राज्य के साथ साथ शहरी स्तर पर भी स्वच्छता सर्वेक्षण कराये जा रहे हैं. जिसमें देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को शामिल किया जाता है. इसमें देश के सबसे साफ़ शहर को महामहिम राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित भी किया जाता है. स्वच्छता सर्वेक्षण 2023 की अखिल भारतीय रैंकिंग में बिहार को 27 राज्यों में 15वां स्थान मिला है. वहीं इस सर्वेक्षण में बिहार के 142 शहर शामिल हुए थे. इस बार के सर्वेक्षण में राजधानी पटना ने अपनी स्थिति को सुधारा अवश्य है लेकिन अब भी वह टॉप 10 की सूची से बहुत दूर है. एक लाख से ज्यादा की आबादी वाले शहरों में पटना की ऑल इंडिया रैंकिंग 77 रही. यह सर्वेक्षण बताता है कि एक राजधानी के तौर पर पटना को स्वच्छता की दिशा में अभी और कई महत्वपूर्ण कदम उठाने बाकी हैं.

दरअसल पटना के कुछ इलाके अभी भी ऐसे हैं जहां आज भी साफ़-सफाई बहुत अधिक नज़र नहीं आती है. इन्हीं में एक अदालतगंज स्थित स्लम बस्ती भी है. जहां स्वच्छता का विशेष प्रभाव नज़र नहीं आता है. पटना सचिवालय से कुछ ही दूरी पर स्थित इस स्लम बस्ती की आबादी लगभग एक हजार के आसपास है. जहां करीब 60 प्रतिशत ओबीसी और 20 प्रतिशत अल्पसंख्यक समुदाय निवास करते हैं. तीन मोहल्ले अदालतगंज, ईख कॉलोनी और ड्राइवर कॉलोनी में विभाजित इस स्लम एरिया में साफ़ सफाई की बहुत कमी नज़र आती है. हालांकि स्वच्छ भारत के तहत कूड़ा उठाने वाली गाड़ियां भी यहां आती हैं, लेकिन यहां के लोगों का कहना है कि यह गाड़ियां नियमित रूप से नहीं आती हैं, जिसके कारण गंदगी और कूड़े का ढ़ेर जमा हो जाता है. जिससे आसपास की हवा प्रदूषित होती है और इसका प्रभाव यहां रहने वाले बच्चों की सेहत पर देखने को मिलता है. इस संबंध में बस्ती की 18 वर्षीय नंदिनी कहती है कि 'हमारे बस्ती की स्थिति बहुत दयनीय है. जहां तहां कूड़ा फैला रहता है. जो सड़क और नाली में बहता है. जिससे निकलने वाली दुर्गंध से लोग परेशान रहते हैं. वहीं 70 वर्षीय रामकली देवी कहती हैं कि 'कूड़े कचरे से निकलने वाली दुर्गंध से सांस लेना मुश्किल हो जाता है. प्रतिदिन कचरा गाड़ी के नहीं आने के कारण अक्सर लोग अपने घर का कूड़ा बाहर फेंक देते हैं. जिससे कॉलोनी की हवा प्रदूषित होती रहती है.' वह कहती हैं कि 'यदि इन कूड़े को कॉलोनी से बाहर फेंकने के लिए कोई एक स्थान नियमित कर दिया जाए तो समस्या का हल निकल सकता है. लेकिन नगर निगम के कर्मचारियों द्वारा ऐसा नहीं करने दिया जाता है. वहीं कूड़े वाली गाड़ी जब नियमित रूप से नहीं आएगी तो लोग अपने घर का कूड़ा इधर उधर ही फेकेंगे.' वहीं 32 वर्षीय पिंकी देवी कहती हैं कि 'जब कचरा उठाने वाली गाड़ी कॉलोनी में नहीं आती है तो हम अपने घर का कचरा बाहर रख देते हैं. जिसे आवारा कुत्ते खाने की लालच में फाड़ कर इधर उधर बिखरा देते हैं. अक्सर वह कचरे या तो कॉलोनी की रोड पर पड़े होते हैं या उड़ कर नालियों में चले जाते हैं.' पिंकी देवी कहती हैं कि अक्सर कॉलोनी के बच्चे चिप्स और कुड़कुड़े खाकर उसके पैकेट नालियों में फेंक देते है. जिससे वह जाम हो जाता है और उसका गंदा पानी सड़क और आसपास के घर तक पहुंच जाता है. जिससे न केवल लोगों को परेशानी होती है बल्कि इससे बीमारियों के फैलने का भी खतरा बना रहता है. अब बारिश का मौसम आ गया है. ऐसे में इन कचड़ों की वजह से जाम होती नालियां और भी अधिक उफनने लगेंगी. इसका पानी आसपास के घरों के अंदर तक चला जाता है. यदि कूड़ा उठाने वाली गाड़ियां प्रतिदिन आएंगी तो इस प्रकार की समस्या का काफी हद तक हल संभव है.'

वहीं 12वीं में पढ़ने वाली 17 वर्षीय निकिता कहती है कि 'अक्सर कॉलोनी की लड़कियां माहवारी के दौरान इस्तेमाल किये पैड्स को सही जगह डंप करने की बजाए इधर उधर फेंक देती हैं. जिन पर मक्खियां बैठती हैं और वही मक्खियां फिर लोगों के खाने पर बैठ कर उन्हें दूषित कर बीमार कर देती हैं. अधिकतर किशोरियां इससे फैलने वाली बिमारियों से अनजान होती हैं.' वह कहती है कि इसके बारे में कई बार स्कूल में भी बताया जाता है और लड़कियां इसका ख्याल भी रखती हैं, लेकिन घर पर इसके उचित निस्तारण की व्यवस्था नहीं होने के कारण वह इसे खुले में फेंकने पर मजबूर हो जाती हैं. कॉलोनी की बुजुर्ग सुष्मा देवी कहती हैं कि पटना में कई स्थानों पर विकास कार्य चल रहे हैं. इसके तहत पुल और ओवरब्रिज का निर्माण किया जा रहा है. अदालतगंज के करीब भी आवागमन को सुलभ बनाने के लिए एक पुल का निर्माण किया जा रहा है. इसके लिए इस स्लम बस्ती के पास से गुजरने वाले बड़े नाले को ब्लॉक कर दिया गया है. जिससे उसका सारा गंदा पानी अदालतगंज और ड्राइवर कॉलोनी में फैल रहा है. इससे जहां लोगों को आने जाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, वहीं दूसरी ओर यह बिमारियों का भी कारण बनता जा रहा है. अब जबकि मानसून ने बिहार में दस्तक दे दी है तो बारिश में इसका पानी और भी तेज़ी से फैलने का खतरा बन जाएगा.

इस स्लम बस्ती में संचालित आंगनबाड़ी केंद्र की सेविका लक्ष्मी देवी और सहायिका मेतर देवी बताती हैं कि इस बस्ती में कोई भी आशा वर्कर की नियुक्ति नहीं है. ऐसे में यदि कोई गर्भवती महिला या बच्चे बीमार होते हैं तो वही उन्हें अस्पताल में एडमिट कराने का काम करती हैं. अधिकतर बच्चे गंदगी से फैलने वाली बीमारी के शिकार होते हैं. यदि इस स्लम बस्ती में साफ़ सफाई का समुचित ध्यान रखा जाए तो बहुत से बच्चों को बीमारी से बचाया जा सकता है. वह कहती हैं कि अक्सर लोग जागरूकता के अभाव में स्वच्छता के महत्व से अनजान रहते हैं. जिसकी वजह से वह घर के कूड़े को इधर उधर फेंक देते हैं. वहीं समाज सेविका फलक कहती हैं कि 'इस स्लम एरिया के लोगों का कहना सही है कि कई बार दो तीन दिनों तक कूड़ा उठाने वाली गाड़ी यहां आती ही नहीं है. लेकिन यदि लोग स्वच्छता के प्रति जागरूक हो जाएं तो इसका समाधान निकाला जा सकता है. इसके लिए बस्ती वालों को सामाजिक स्तर पर योजनाबद्ध रूप से काम करने की ज़रूरत है. सूखे और गीले कचरे को अलग कर उसके डंप करने की व्यवस्था करने की ज़रूरत है.' वह कहती हैं कि हर बात के लिए सरकार और प्रशासन को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है. यदि कॉलोनी के लोग सामाजिक रूप से इसका हल तलाशें तो प्रतिदिन कचरे का स्थाई निस्तारण संभव हो सकता है.

स्वच्छता सर्वेक्षण 2023 में जिन मापदंडों के आधार पर स्वच्छ शहर का चयन किया गया था उसमें कूड़ा इकट्ठा करना, ट्रांसपोर्ट करना, कूड़े को प्रोसेस और नष्ट करना, सस्टेनेबल सैनिटेशन, इलाके का सौंदर्यीकरण, अतिक्रमण और नाली के पानी का ट्रीटमेंट प्रमुख रूप से शामिल था. इस आधार पर यदि हम अदालतगंज के इस स्लम बस्ती का जायज़ा लें तो इसमें काफी कमियां नज़र आएंगी, हालांकि इस कमी को दूर किया जा सकता है. लेकिन केवल प्रशासन और नगर निगम के ऊपर ज़िम्मेदारी डाल कर हम इससे मुक्त नहीं हो सकते हैं बल्कि इसके लिए सामाजिक स्तर पर जागरूकता फैलाने की ज़रूरत है. यह बताने की ज़रूरत है कि यदि कचड़ा उठाने वाली गाड़ी किसी कारणवश नहीं आती है तो इसका अस्थाई प्रबंधन किस प्रकार किया जाए कि वह इधर उधर न फैले. शायद इस प्रकार के छोटे छोटे कदम ही अदालतगंज जैसे स्लम बस्तियों को स्वच्छ भारत के नक़्शे पर प्रमुखता से उभार सकते हैं. (चरखा फीचर)

दृष्टिकोण

बादल सरोज

लेखक लोकजतन के संपादक हैं।

गिर रहे हैं और भी पुल और बहुत सारे

कुछ हजार करोड़ में बने और अभी अभी प्राणप्रतिष्ठित बताये जाने वाले अयोध्या के मन्दिर की रिसन और उसकी ओर जाने वाली सडकों का पाताल में समाना रुका भी नहीं था कि पुल गिरने लगे। ऐसे गिरे कि गिरते ही जा रहे हैं और खरबूजे को देखकर खरबूजे रंग बदलते हैं की तर्ज पर गिरते पुल को देख पुल गिरते हैं की नई कहावत गढ़ रहे हैं। रफ़्तार कुछ ऐसी है कि एक के गिरने की धमक रुकती नहीं कि दूसरा टूटकर टपक जाता है। बिहार में अकेले एक दिन में 5 पुल गिरे, 19 दिन में 13 गिरे - इन पंक्तियों के लिखते लिखते उनकी संख्या 15 हो गयी है। इनकी देखा देखी पडोसी राज्य झारखण्ड की अरगा नदी का पुल गिर गया तो दूरस्थ प्रदेश उत्तराखण्ड में एक पुल पूरे का पूरा ही बह गया। मध्यप्रदेश में पिछली बारिश में ही इतने सारे गिर चुके थे बाद में गिरने के लिए लगभग कोई बचा ही नहीं।

इतिहास में इस कालखण्ड को पुलों के टूटने, दरकने, गिरने और बहने के कालखण्ड के नाम से जाना जाएगा। ये पुल अपने आप नहीं गिर रहे हैं - अनायास नहीं गिर रहे हैं; इन्हें गिराने के समुचित प्रबंध किये गए थे, खूब जतन के साथ इन पर अमल किया गया था। ईंट-गारे, बजरी, सीमेंट के गिरे हुए पुल थोड़ा शोर, थोड़े स्यापे, एक दूसरे के सर पर हांड़ी फोड़ने और मिलमिलाकर एक दूसरे को साफ़ बचाने के कर्मकाण्ड के बाद फिर से गिरने के लिए एक बार फिर बना दिए जायेंगे। मगर असली चिंता उन पुलों की है और जिन्हें कारपोरेट की गोद में बैठे हिन्दुत्व के कुनबे ने हमेशा के लिए गिरा देने का बीड़ा उठाया हुआ है। मौजूदा निजाम ने सत्ता में पहुँचने के बाद पुलों ङ्क हर तरह के पुलों - को तोड़ने और कमजोर करने का काम ही तो किया है। हजार, दो हजार, पांच हजार साल में बने पुलों को हिलाने, उनकी नींवों को झकझोरने, उनमें पलीता लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

सभ्यताओं के निर्माण की असल कहानी अनगिनत पुलों के बनने और बनाए जाने की कहानी है। जंगल से निकलने के बाद अलग अलग कबीलों, कुटुम्बों, नस्लों, प्रजातियों और संस्कृतियों ने एक दूजे तक पहुँच बनाने के लिए धीरज के साथ ऐसे पुल बनाए जिनसे आना और जाना दोनों सहज बनाया जा सके। संस्कृतियाँ इसी मेल जोड़ से बनी संवरी, सभ्यताओं ने इन्ही पुलों के मजबूत ढांचों की बुनियाद पर खड़े होकर अपनी ऊंचाईयां हासिल कीं और यहाँ तक पहुंची। कच्चे अधबने मकानों को घर में और घरों के योग को समाज के रूप में ढाला भी- संजोया भी। ऐसे वैसे कई युग गुजरने के बाद यही समाज राज्यों और देशों के रूप में संगठित और पुनर्गठित हुए। खुद भारत इसकी जीती जागती और अनूठी मिसाल है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी प्रसिद्द कविता 'भारत तीर्थ' में विस्तार से इसे दर्ज किया। उसकी शुरुआत करते हुए उन्होंने कहा कि;

'हे मोर चित्त पुण्य तीर्थे जागो रे धीरे एई भारतेर महामानवेर सागर तीरे / हेथाय दांडाए दु बाहू बाडाये / नमि नर देवतारे / हेथा आर्य हेथा अनार्य शक-हुन दल पाठान-मोगल एक देहे होलो लीन / एई भारतेर महामानवेर सागर तीरे / दांडारे धीरे !!'

(कोई नहीं जानता किसके आह्वान पर मनुष्य की कितनी धारायें प्रबल वेग से आई, किधर से आई और मिल कर भारत के मानवों के महासागर में हो गयी विलीन। यहाँ आर्य हैं अनार्य, हैं द्रविड़ और चीनी, शक, हूण के जत्थे, मुगल और पठान सब एक देह में लीन। पश्चिम के द्वार खुले है आज, सब वहाँ से ला रहे हैं उपहार/ इस भारत के महामानव के समुद्र तट पर वे/ देंगे और लेंगे, मिलायेंगे और मिलेंगे। जायेंगे नहीं लौट कर।)

इसे ही फ़िराक गोरखपुरी साहब ने अपनी तरह से कहा कि;

'सरजमीने हिन्द पर अक्वाम-ए-आलम के फ़िराक
काफिले बसते गए, हिन्दोस्तां बनता गया !'
(अक्वामे आलम = दुनिया भर की कौमों)

यहां सिर्फ दो का कहा लिखा गया है। किन्तु यही बात भारत में मौजूद 8 भाषा परिवारों की 1652 मातृभाषाओं और 19500 बोलियों में किसी न किसी तरह से दर्ज की

गयी। उस संस्कृत और फारसी में भी जिसे आर्य और बाकी आगंतुक अपने साथ लाये थे, उन द्रविड़ भाषाओं में भी जिन्हें इन सबके आने के सैकड़ों वर्ष पहले से यहाँ रहने वालों ने संजोकर रखा था।

बहरहाल ऐसा, रातोंरात अपने आप नहीं हो गया था। गुरुदेव जिन्हें मनुष्य की कितनी धारायें और फ़िराक जिन्हें दुनिया भर की कौमें बताते हैं वे शक, हूण, कुषाण, यवन, तुर्क, मंगोल, पठान, गुर्जर, आर्य, पारसी, यहूदी और क्रिस्तान और उनसे हजारों साल पूर्व पाँव पाँव यूरोप और एशिया को तय करते अफ्रीकन, हिन्दुकुश के पर्वतों, हिमालय की श्रृंखलाओं और घाटियों को लांघते, असीम कष्ट सहते इस भूखण्ड पर आये और फिर यहीं के होकर रह गए। रहते बसते आपस में जुड़ने के लिए पुल बनाये, दिया भी लिया भी, मिले भी मिलाया भी और इस तरह के अनगिनत पुलों से बना वह हिन्दुस्तान जिसे अब भारत दैट इज इंडिया के नाम से जाना जाता है और जिसकी तासीर 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी / सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमाँ हमारा' के सूत्र में अल्लामा इकबाल ने बयान की है।

कुल जमा यह कि भारत पुलों का जोड़ है ङ्क इधर की उधर की ईंटों के मेलमिलाप का जोड़ है - इन्ही पुलों के मेल और जोड़ से खिली है अनेकता में एकता की शानदार मिसाल विविध संस्कृतियों वाली रंगबिरंगे फूलों की बगिया। इस देश का दुर्भाग्य है कि उसकी बागडोर उनके हाथों में हैं जो इन पुलों को तोड़ने और बगिया को उजाड़ने में लगे हैं।

लिहाजा वास्तविक फिक्र की बात ये पुल हैं। पहली बारिश में कागज़ की तरह बह गए पुल तो बन बना जायेंगे - लेकिन हजारों साल की बारिश आंधी और बाढ़ में अडिग बने रहे ये पुराने पुल अगर दरक गए तो लम्हों की खता की सजा सदियों को भुगतनी पड़ सकती है। इस कुनबे का निशाना अनेकता में एकता की नींव पर है, सदियों पुराने संग साथ पर है। उनके निशाने पर भाषाएँ हैं; वे एक देश एक भाषा के नाम पर बाकी सबको पहले दोयम दर्जे पर और आखिर में विलुप्ति की कगार पर पहुंचाना चाते हैं। नीट जैसी केंद्रीकृत प्रतियोगी परीक्षाओं और अपराध की नई संहिताओं के नामकरण के जरिये वे इसकी शुरुआत कर भी चुके हैं। दूसरी भाषाएँ तो हैं ही उनके निशाने पर खुद उनकी भाषा है जिसे असंस्कारित. अभद्र और अशिष्ट बनाकर दुर्भाषा बन भी रहे है, बना भी रहे हैं।

विधवाओं और शूद्रों को जीवित ही फूंक देने वाले बर्बर युग से थोड़े बहुत सभ्य समाज तक लाने के लिए राजा राममोहन रायों, ईश्वरचंद्र विद्यासागरों, विवेकानन्दों से होते हुए जोतिबा और सावित्री फुले, पेरियारों और अम्बेडकरों से लेकर सुधार आन्दोलनो और वामपंथ की तहरीकों ने पुल बनाये थे; कुरीतियों और अंधविश्वास की भंवर पार करने के लिए बनाये गए इन पुलों को ढहाकर सामाजिक भूगोल को एक बार फिर मनु और गौतमों के ऊबड़ खाबड़ में तब्दील करने की मुहिम छेड़ दी गयी है। बुद्ध, नानक द्वारा तामीर किये गए पुल तोड़ने की धुन में समाज को आईना दिखाने वाले साहित्य और उसके भी प्रयत्नों से बनी संवरी साझी संस्कृति के मजबूत पुलों की जड़ों में मट्ठा डाला जा रहा है।

सबसे योजनाबद्ध हथौड़ा उस शिक्षा पर चलाया जा रहा है जिसने कंदराओं के युग को वापस कन्दरा में धकेल कर, मस्तिष्कों में जमे अंधेरों को झकास रोशनी में बदला था। आर्यभट्टों, वराह मिहिर से भाभा और विक्रम साराभाई जैसों के अंतरिक्ष विज्ञान की जगह फलित ज्योतिष और हाथ की रेखाओं में लिखी नियति को बिठाया जा रहा है। विश्वविद्यालय मनुष्य को इंसान बनाने की कठिन राह के भरोसेमंद पुल थे ङ्क उनमें भेड़ियों की मांदें बनाई जा रही है। मनुष्य और पशु में एकमात्र अंतर, प्रकृति आश्रित असहाय पशु जीवन से समर्थ और प्रकृति को भी नियंत्रित करने की क्षमता वाला मनुष्य बनने की एकमात्र वजह श्रम थी; श्रम ही वह पुल था जिसकी मदद से मनुष्य और समाज अस्तित्व में आया था। श्रम से हासिल मूल्य ही वह ईंधन था जिससे उसकी गाड़ी सरपट दौड़ सकती है। मौजूदा निजाम श्रम के पहले से ही सीमित अवसरों को भी छीन कर उसे कातर याचक में बदल रहा है। सबसे बढ़कर संविधान और कानून के राज के उस पुल को ईंट ईंट करके तोड़ा जा रहा है जिसने भारत को भारत बनाया। पुलों के तोड़ने उन्हें झकझोरने की एक पूरी श्रृंखला है जिसे गिनाने के लिए यह स्थान पर्याप्त नहीं होगा; सार की बात यह है कि मनुष्य और उसका समाज कोई स्थिरांक नहीं है - हमेशा गतिशील है। यह गति यदि आगे की ओर नहीं होगी तो पीछे की रपटीली ढलान की तरफ होगी। मनुष्य के इंसान बनने की सम्भावनाओं के जितने भी पुल हैं यदि वे तोड़ दिए जायेंगे तो उसका हैवान बनना तय है। उसे बर्बर बनाने की मुहिम भी जारी है।

युद्ध शास्त्र बताता है कि पराजित होकर पीछे की ओर भागने वाली सेनाये जिन पुलों से गुजरती हैं उन्हें ध्वस्त करती जाती हैं। मौजूदा हुक्मरान भी कुछ इसी तरह का आचरण कर रहे हैं। ठीक यही वजह है कि नदी नालों पर बने पुलों के गिरने के दोषियों की शिनाख्त करते हुए, उन्हें सजा दिलाने की मांग उठाते हुए, समाज को जोड़ने वाले पुलों को तोड़ने वालों की पहचान करना और उन्हें उनके इस अपराध के लिए दण्डित करने के लिए भी उठना होगा। अच्छी बात है कि जिन दिनों में ये हमले तेज हुए हैं उन्ही दिनों में इनके खिलाफ प्रतिरोध भी बढ़ा है।

केंद्रीय मंत्री और विधायक का तुलादान आज

बैतूल। मां माचना जन्मोत्सव समिति द्वारा आज 20 जुलाई शनिवार को सुबह 11 बजे क्रीड़ा परिसर अर्जुन वार्ड, दुर्गा वार्ड में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गा दास उइके और विधायक हेमंत खंडेलवाल का तुलादान किया जाएगा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सांसद एवं केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गा दास उइके और विधायक बैतूल हेमंत खंडेलवाल शिरकत करेंगे। उनके साथ विशेष अतिथि के रूप में भाजपा जिलाध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला, नगर पालिका अध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर, और नगर पालिका उपाध्यक्ष महेश राठौर की उपस्थिति भी होगी। कार्यक्रम में मुख्य आकर्षण तुलादान का आयोजन होगा, जो मां माचना जन्मोत्सव समिति द्वारा किया जाएगा। इसके बाद भोजन प्रसादी का आयोजन भी होगा। इस मौके पर एक पौधारोपण कार्यक्रम भी रखा गया है, जिसमें एक पेड़ मां के नाम का लगाया जाएगा। यह पहल पर्यावरण संरक्षण और हरियाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की जा रही है। समिति के संयोजक आनंद प्रजापति ने इस कार्यक्रम की जानकारी दी और समस्त देवतुल्य कार्यकर्ताओं एवं आमजन से उपस्थिति की अपील की है।

मलेरिया प्रभावित ब्लॉक में 'मलेरिया ऑफ-200' का शुभारंभ

बैतूल। आयुक्त संचालनालय आयुष म.प्र. के निर्देशानुसार और डॉ. योगेश चौकीकर, प्र.जिला आयुष अधिकारी बैतूल के मार्गदर्शन में मलेरिया प्रभावित ब्लॉक शाहपुर और प्रभात पट्टन में 'मलेरिया रोग नियंत्रण' अभियान 2024 का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर आयुष विभाग ने घर-घर जाकर मलेरिया ऑफ-200 की पहली खुराक खिलाई। मलेरिया ऑफ 200 के नोडल ऑफिसर श्री राजपूत ने बताया कि शाहपुर में नगर परिषद उपाध्यक्ष पम्पी राठौर और प्रभात पट्टन में ग्राम अम्भोरी की उपसरपंच सुशीला राजकुमार साने ने इस अभियान का शुभारंभ किया। इस दौरान होम्योपैथी रोग प्रतिरोधक औषधि 'मलेरिया ऑफ-200' की पहली खुराक खिलाई गई। 18 जुलाई 2024 से 3 सप्ताह तक और फिर 22 अगस्त से पुनः 3 सप्ताह तक यह दवा वितरित की जाएगी।

जिला स्तरीय रोजगार मेले में 336 अभ्यर्थियों का हुआ चयन

बैतूल। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव की प्रेरणा से युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराकर प्रदेश की नई सोच और चेतना को मुख्यधारा से जोड़ने के उद्देश्य से कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार शासकीय एकलव्य महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था बैतूल में गुरुवार को जिला स्तरीय रोजगार मेले का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भोपाल से कौशल विकास एवं रोजगार विभाग के उप संचालक मनोज कुमार अग्निहोत्री, सहायक संचालक डॉ.एबी खान, संस्था आईएमसी के अध्यक्ष पीयूष तिवारी, आईएमसी सदस्य श्री विवेक शुक्ला उपस्थित हुए। संस्था प्राचार्य रेवाशंकर पंडाग्रे ने बताया कि मेले में 845 अभ्यर्थियों ने अपना पंजीयन कराया था। रोजगार मेले में उपस्थित कंपनियों ने ऑन स्पॉट साक्षात्कार के माध्यम से 336 अभ्यर्थियों का चयन किया गया। उन्होंने बताया कि वर्धमान फेब्रिक्स लिमिटेड बुदनी में 82, टाटा मोटर्स सानंद अहमदाबाद में 18, बजाज ऑटो लिमिटेड औरंगाबाद और पुणे में 11, श्राइडर एसई इलेक्ट्रिकल्स हैदराबाद में 5, विस्ट्रान इंफोकॉम बैंगलोर 7, टाटा मोटर्स पुणे में 50, फॉक्सकॉन लिमिटेड बैंगलोर में 135 अभ्यार्थियों को चयनित किया है। इसके अलावा किर्लोस्कर ब्रदर्स लिमिटेड देवास द्वारा कुल 28 अभ्यार्थियों को ऑफर लेटर प्रदान किये गये। मेला प्रभारी दिलीप कुमार सोनी ने बताया कि वर्धमान फेब्रिक्स लिमिटेड बुदनी के चयनितों को 24 जुलाई 2024 को ज्वाइन कराने हेतु कंपनी के खर्च पर बुदनी भेजा जाएगा। प्लेसमेंट ऑफिसर विवेक दायमा ने उपस्थित सभी कंपनियों के प्रतिनिधियों वर्धमान फेब्रिक्स लिमिटेड बुदनी अजय मालवीय, क्वीस कॉर्प नीरज ठाकुर एवं कु.वंदना राजपाल एवं समस्त स्टॉफ का आभार व्यक्त किया।

बदइंतजामी से पड़ा ब्लड बैंक में रक्त का टोटा

बैतूल। रक्तदान को लेकर मध्यप्रदेश में कभी टॉप लिस्ट में शुमार जिला चिकित्सालय का ब्लड बैंक इन दिनों रक्त की कमी से बुरी तरह से जूझ रहा है। इसके पीछे मुख्य कारण यह सामने आया है कि यहां पर बदइंतजामी की वजह से लगातार हो रही रक्तदाताओं की उपेक्षा से उनमें आक्रोश व्याप्त होने लगा है और उनका रक्तदान करने के प्रति मोहभंग हो रहा है। ब्लड बैंक में रक्त की कमी से सबसे अधिक खामियाजा सिकलसेल और थैलेसिमिया पीडित लगभग 400 बच्चों को उठाना पड़ रहा है। हर तीन माह में रक्तदान करने वाले संदीप सोलंकी ने बताया कि सबसे अधिक रक्त की आवश्यकता सिकलसेल पीडित बच्चों को 1 माह में और थैलेसीमिया पीडित बच्चों 15 दिन में रक्त की आवश्यकता पड़ती है। इसके अलावा गर्भवती महिलाओं को होती है। उनकी जान पर बन आने के कारण ही जिले के रक्तदाताओं द्वारा गर्मी, ठण्ड और बारिश को देखे बिना सीधे जान बचाने के लिए दौड़ पड़ते हैं और अपना बहुमूल्य रक्त दान करते हैं। लेकिन चार माह से ब्लड बैंक में लगातार रक्तदाताओं की उपेक्षा होने से यहां पर ब्लड का टोटा पड़ गया है। इस बारे में डॉ. डब्ल्यू.ए. नागले, रक्त कोष अधिकारी, बैतूल ने बताया कि बैंक में रक्त की कमी है। अभी दो शिविर रविवार और मंगलवार को लगने वाले हैं। समस्या का कारण डोनर नहीं मिलना है। मेटरनिटी, सिकलसेल और थैलेसीमिया के लिए बिना एक्सचेंज के रक्त देते हैं। व्यवस्था सुधारने के प्रयास किए जा रहे हैं।

पत्रकारिता जनसंचार में करियर की अपार संभावनाएं : दीक्षित

आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल में आयोजित हुई कार्यशाला

बैतूल। उत्कृष्ट शिक्षा संस्थान के रूप में स्थापित हो चुके आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल में विद्यार्थियों को क्वालिटी एजुकेशन देने के साथ ही उनके उज्जवल भविष्य निर्माण के लिए रोजगारोन्मुखी क्षेत्रो पर केन्द्रित वर्कशॉप आयोजित कर करियर गाइडेंस भी दिया जा रहा है। आरडी पब्लिक स्कूल की डायरेक्टर ऋतु खण्डेलवाल के मार्गदर्शन में 19 जुलाई को ''पत्रकारिता एवं जनसंचार'' विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल के पूर्व छात्र एवं वर्तमान में एमिटी विश्वविद्यालय में पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रहे आदेश दीक्षित ने कक्षा 11वीं एवं 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों को विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता एवं जनसंचार में करियर की अपार संभावनाये है।

पुर्नवास एरिया में पट्टेधारियों के साथ सरकारी जमीन पर दबंगाइयों का कब्जा

• पीड़ितों ने की कलेक्टर-एसपी से तुरंत कार्रवाई की मांग

बैतूल। बैतूल के पुनर्वास क्षेत्र में कुछ लोग अपने समाज के साथियों के नाम जारी पट्टे की जमीन पर दबंगाई करते हुए कब्जा जमा लिया है और उस पर मकान दुकान भी बनाना शुरू कर दिया है। इस आशय को लेकर पीड़ित परिवार ने 19 जुलाई शुक्रवार को कलेक्टर, एसपी, एसडीएम को ज्ञापन सौंपकर तुरंत कार्रवाई करने की मांग की है।

बैतूल के सोनाघाटी पुनर्वास केंद्र के पीड़ित परिवारों का नेतृत्व कर रही संगीता सोलंकी द्वारा 19 जुलाई को सौपे ज्ञापन में कलेक्टर एसपी को इस मामले में तुरंत हस्तक्षेप कर कार्रवाई करने का आग्रह किया है। उन्होंने ज्ञापन पत्र के माध्यम से मांग की है कि जिला प्रशासन द्वारा पुनर्वास योजना के तहत आवंटित पट्टे की भूमि पर जिन लोगों के नाम पट्टे आवंटित की गई है उन्हें ही उनके पट्टे की भूमि पर बसने दिया जाए। परंतु पिछले कुछ दिनों से अपराधिक प्रवृत्ति के लोग जिसमे पवन, कमल, गोलू, शाहरुख शामिल है जो कि गंभीर मामलों के आरोपी भी हैं उनके द्वारा अन्य पारधियों के पट्टे की भूमि पर कब्जा जमा कर मकान दुकान बनाना शुरू कर दिए हैं। और तो और जिन लोगों के ग्राम चौथिया में पक्का मकान है, उन्हें भी यहां बुलाकर बसाने का काम किया जा रहा है जिसके नाम से यहां पर कोई पट्टे की भूमि नहीं है। इस तरह इन लोगों के दबंगाई के कारण कुछ परिवार बैतूल के शासकीय जिला चिकित्सालय के सामने सड़क के पास फुटपाथ में रहने को मजबूर हैं और कुछ परिवार आठनेर के पास बिसनुर, सनोरा, पिसाटा में रहने चले गए हैं। जो परिवार सोनाघाटी के पुनर्वास क्षेत्र में वर्तमान में रह रहे हैं, उन्हें जान से मारने या बलात्कार जैसी घटनाओं में फंसा देने की धमकी दे रहे हैं जिससे इस पुनर्वास केंद्र में रह रहे परिवार काफी भयभीत हैं।

ज्ञापन पत्र के माध्यम से कलेक्टर-एसपी और एसडीएम से आग्रह किया है कि वे इस संदर्भ में जिनके नाम पट्टे आवंटित है उन्हें ही विस्थापित करने में एक्शन लेकर मदद करें तथा आवंटित प्लॉट नंबर एक के सामने सरकारी भूमि में अवैध निर्माण को हटाने की कार्रवाई करें। शासकीय भूमि पर अवैध तरीके से बना रहे दुकान से प्लाट 1/13 को परेशानी खड़ी होगी, वहीं उनके चक्कर में और भी अतिक्रमण की संभावनाएं बढ़ जाएगी, जिससे स्थिति और भी विकट हो सकती है। ऐसे में यहां विस्थापित परिवार को मुश्किल का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए आपसे आग्रह है कि यहां अन्य विस्थापितों को सुकून के साथ अपना जीवन बसर करने आवश्यक कार्रवाई करें।

इनका कहना

गैर कानूनी तरीके से कोई किसी अन्य पट्टाधारी के जमीन पर अतिक्रमण नहीं कर सकता। और ना ही कोई शासकीय भूमि पर बेजा कब्जा कर सकता। इस संदर्भ में जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

– नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी,
कलेक्टर, बैतूल

जमीन पर कब्जा कर दबंग, दे रहे जान से मारने की धमकियां

एसपी के पास पहुँचा पीड़ित पक्ष, एसपी ने दिया आश्वासन

बैतूल। जिले में अपराधियों के हौसले बुलंद है, जिसमे स्थानीय थाने के पुलिस की कार्यवाही पर सवाल उठ रहे है। ताजा मामला चोपना थाना क्षेत्र से सामने आया है। जहाँ के ग्राम बर्रीढ़ाना के सुरेश यादव की पट्टेवाली जमीन पर गांव के ही अवैध गतिविधियों में लिप्त अपराधियों ने कब्जा कर लिया है और उन्हें जमीन पर पैर रखने पर जान से मारने की धमकी भी देते रहते है। पीड़ित सुरेश यादव ने बताया कि गांव में उनकी जमीन है, जिसका पट्टा उन्ही के नाम है। उस पर दबंग

बब्बू यादव, दिनेश यादव, सुनील यादव और सुनील यादव द्वारा जबदस्ती कब्जा कर लिया गया है। उनकी लड़ाई मेड़ को लेकर चल रही थी, जिसके बाद पूरी जमीन पर ही कब्जा कर लिया गया है। ये दबंग लोग मारपीट करने, गाली गलौज कर जान से मारने की धमकी देते है जबकि इन दबंगो पर पहले ही कई मामले दर्ज पुलिस रिकार्ड में दर्ज है और गांव में सभी लोगों से इनका विवाद आम बात है, परंतु उन्हें पुलिस का भी डर नही है। इनका कहना है कि जिले में अब तक जितने अधिकारी आये है सभी से इस मामले की शिकायत की थी पर आज तक कोई संतोषजनक नहीं हुई। आज एसपी साहब से मिलकर अच्छा लगा, उन्होंने हमारी बात को गंभीरता से सुना और तत्काल चोपना थाना प्रभारी को मामले में एफआईआर के निर्देश दिए है।

नियमों के उल्लंघन पर यातायात पुलिस द्वारा की जा रही कार्यवाही

बस संचालक पर किया दो हजार का जुर्माना

बैतूल। बस संचालकों द्वारा जगह-जगह बस खड़ी करके सवारी लेने पर जहां ट्रैफिक जाम की स्थिति बनती है वहीं दुर्घटना का भय भी बना रहता है। गौरतलब है कि शहर में सुचारू रूप से ट्रैफिक के संचालन के लिए पिछले दिनों विधायक हेमंत खंडेलवाल की अध्यक्षता में यातायात समिति की बैठक हुई थी, जिसमें विधायक ने अधिकारियों को दो टूक निर्देश दिए थे कि शहर में बसों को निर्धारित स्थान पर ही खड़ी की जाए, जगह-जगह बस खड़ी करके सवारी लेने वाले बस संचालकों पर कड़ी कार्यवाही के निर्देश उन्होंने अधिकारियों को दिए थे। इसी तारतम्य में आज एक बस संचालक पर यातायात पुलिस ने दो हजार का जुर्माना किया। यातायात पुलिस थाना प्रभारी गजेंद्र कैन ने बताया कि बस स्टैंड तथा अन्य बस स्टापेज के बाहर रोड पर बस खड़ी करके सवारी चढ़ाने-उतारने पर यातायात पुलिस द्वारा लगातार हिदायत देने के बावजूद भी कुछ बस संचालकों द्वारा हिदायत की अवहेलना की जा रही है। जिस पर बैतूल यातायात पुलिस द्वारा वेदांश ट्रेवल की बस पर आदेशों की अवहेलना के उल्लंघन करने पर बस मालिक पर 2000 रूपए का जुर्माना किया गया है। यदि दोबारा उल्लंघन किया जाता है तो परमिट की शर्तों के उल्लंघन पर 10000 रुपए का जुर्माना एवं क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी के माध्यम से परमिट निरस्तीकरण की कार्यवाही की जाएगी।

सफलता हेतु पढ़ाई के साथ नॉलेज, सेल्फ कॉन्फीडेंस, पर्सनेलिटी डव्हलपमेंट भी जरुरी : खण्डेलवाल

बैतूल विधायक ने कन्या स्कूल मॉडवी में छात्राओं से किया प्रेरणा संवाद

परिसर में पौधारोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

बैतूल। ग्रामीण क्षेत्रों के भ्रमण के दौरान बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल द्वारा ग्रामीणों की समस्याओं का संतुष्टिकारक निराकरण करने के साथ ही स्कूलों में पहुंचकर छात्र-छात्राओं के साथ संवादकर उन्हे सफलता एवं उज्जवल भविष्य निर्माण के गुर सिखाये जा रहे है। इसी तारतम्य में शुक्रवार को आठनेर के भ्रमण के दौरान बैतूल विधायक ने शासकीय कन्या उ.मा. विद्यालय रामपुरा मॉडवी पहुंचकर ''एक पेड मॉ के नाम'' अभियान के तहत शाला परिसर में छात्राओं के साथ पौधारोपण किया तथा आमजन को पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। विधायक श्री खण्डेलवाल ने कक्षा 9 वी से 12वी की छात्राओं के साथ प्रेरणा संवाद किया। संवाद के दौरान उन्होनें छात्राओं से स्कूल की पढ़ाई, प्रतियोगी परीक्षाओ की तैयारी, कॅरियर काउसलिंग, भविष्य की प्लानिंग सहित अन्य विषयों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होनें छात्राओं से कहा कि हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करनें के लिए स्कूल-कॉलेज की पढ़ाई के साथ ही जनरल नॉलेज, सेल्फ कॉन्फीडेंस और पर्सनेलिटी डव्हलपमेंट भी जरुरी है। इसके लिए नियमित रीडिंग की हेबिट होना चाहिए। बैतूल विधायक ने छात्राओं से कहा कि कोर्स की पढ़ाई के अलावा प्रतिदिन कम से कम एक घंटे अन्य विषयों की किताबें पढे। जिससे उनका ज्ञानवर्धन होगा और नॉलेज बढ़ने से आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।

कुटी में 13 क्विंटल टिक्कड़ और सवा क्विंटल की बनेगी चटनी

बैतूल। गुरु पूर्णिमा का पर्व पूरे जिलेभर में धूमधाम के साथ मनाया जाता है। आने वाले गुरु पूर्णिमा को लेकर अभी से तैयारियां शुरू हो चुकी है। शहर के खंजनपुर स्थित प्रसिद्ध दादाजी की कुटी में गुरु पूर्णिमा के दिन विशाल भंडारे का आयोजन किया जाएगा। दादाजी की कुटी में पूजा-अर्चना के लिए हजारों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचेंगे। इस वर्ष गुरूपूर्णिमा का पर्व 21 जुलाई को मनाया जाएगा। 20 जुलाई को सुबह के समय दादाजी की कुटी में निशान चढ़ाएं जाएंगे। यहां बैतूलबाजार और टिकारी से निशान लेकर आते है। यहां गुरूपूर्णिमा के दिन निशान चढ़ाने का भी खासा महत्व है। 27 जुलाई को दादाजी की कुटी समिति द्वारा गुरूपूर्णिमा का पर्व मनाया जाएगा। श्रद्धालुओं के बड़ी संख्या में पहुंचने को लेकर तैयारियां शुरू हो चुकी है। दादाजी की कुटी में 24 घंटे धुनी जलती रहती है और यहां कई वर्षों से धुनी जलते आ रही है। गुरूपूर्णिमा के दिन शाम के समय यहाँ विशाल भंडारे का आयोजन किया जाएगा। दादाजी की कुटी में गुरूपूर्णिमा के अवसर पर प्रसादी के रूप में टिक्कड़, चटनी, हलवा, पुड़ी और सब्जी का वितरण किया जाएगा। यहां की टिक्कड़ चटनी की प्रसादी श्रद्धालुओं को खूब पसंद आती है। प्रतिवर्ष दादाजी की कुटी समिति द्वारा प्रसादी के रूप में टिक्कड़, चटनी बनाई जाती है। मंदिर समिति के अध्यक्ष प्रवीण पम्मू भावसार ने बताया कि इस वर्ष गुरूपूर्णिमा के अवसर पर दादाजी की कुटी में 13 क्विंटल का टिक्कड़, सवा क्विंटल की चटनी, 6 क्विंटल की पुड़ी, 10 क्विंटल की सब्जी और 2 क्विंटल का हलवा बनाया जाएगा। प्रसादी के रूप में श्रद्धालुओं को टिक्कड़ चटनी वितरित करेंगे। लगभग 50 हजार श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है।

बेटे की सड़क पर पटककर हत्या करने वाले पिता की लाश मिली कुएं में

बैतूल। बैतूल जिले के गाँव सावंगा में पिछले दिनों माँ से मिलने एवं खाना मांगने पर अपने चार वर्षीय बेटे की सड़क पर पटक-पटककर हत्या करने वाले पिता दुर्गेश का शव गांव के ही किसान के खेत के कुएं में पड़ा मिला। कोतवाली पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार ग्राम सावंगा में किसान सागर राठौर के खेत के कुएं में गुरुवार को दोपहर में अज्ञात शव पड़ा नजर आया। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को बाहर निकाला गया। मृतक की शिनाख्त गांव के दुर्गेश उर्फ मंगल के रूप में की गई।

पिता ने 4 साल के बेटे को पटककर मारा, शव छोड़कर फरार

मृतक ने बीते 16 जुलाई की रात्रि में अपने चार वर्षीय बेटे कार्तिक की सड़क पर पटककर हत्या कर दी थी और भाग गया था। पुलिस की तीन टीमें उसे हर संभावित स्थान पर तलाश कर रहीं थीं। पुलिस ने आशंका जताई है कि बेटे को सड़क पर पटकने के बाद आरोपित ने या तो कुएं में कूदकर आत्महत्या कर ली होगी या फिर नशे की हालत में वह कुए में गिर गया और डूबने से मौत हो गई। पुलिस ने शव को जिला अस्पताल पहुंचाया है जहां शुक्रवार को उसका पोस्टमार्टम किया जाएगा।

दरअसल दुर्गेश ने महाराष्ट्र के नासिक निवासी संगीता से प्रेम विवाह किया था। उसकी दो वर्ष की बेटी और चार वर्ष का बेटा है। शराब पीकर पत्नी से आए दिन विवाद करने के कारण वह कुछ दिन पहले बेटी को लेकर मायके चली गई थी। बेटे ने मां के साथ जाने से इंकार कर दिया था इसी कारण से वह पिता के पास ही रह रहा था। सोमवार रात्रि करीब 12 बजे दुर्गेश शराब के नशे में घर आया और बेटे ने खाना मांगा तो उसकी पिटाई कर दी। जब वह रोने लगा तो उसे सड़क पर लाया और पटककर मौत के घाट उतार दिया। सूचना मिलने पर डायल 100 की टीम मौके पर पहुंची और अचेत अवस्था में बालक को जिला अस्पताल लाया गया जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया था। कोतवाली पुलिस ने आरोपी के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज करने के बाद उसकी तलाश शुरू कर दी थी। गुरुवार को उसकी लाश कुएं में पड़ी मिली।कोतवाली थाना प्रभारी देवकरण डहेरिया ने बताया कि कुएं में बेटे की हत्या के आरोपी दुर्गेश की लाश मिली है। आशंका है कि उसने आत्महत्या कर ली है।

प्राणी मित्र समिति द्वारा पौधारोपण

नरसिंहपुर। एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत प्राणी मित्र समिति द्वारा सतत् पौधारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण पर परिचर्चा आयोजित की जा रही है। इसी के तहत शासकीय अस्पताल के नजदीक पांडे मेडिकोज परिसर में पौधारोपण किया गया कार्यक्रम के मुख्यक अतिथि वरिष्ठ समाज सेवी डी एस त्यागी पांडे मेडिकोज के इंदु खेमरिया प्राणी मित्र समिति के डॉ विनय पटेल, पं.हरि प्रसाद, चन्द्रभान मेहरा, मनीष नामदेव, विनोद सेन आदि द्वारा पौधारोपण कर

संरक्षित किया गया। इस अवसर पर पर्यावरण परिचर्चा में डी एस त्यागी ने बताया कि जलवायु एवं पर्यावरण प्रदूषण एवं विकास के नाम पर अंधाधुंध पेड़ो की कटाई से पर्यावरण असंतुलित हो गया है। गर्मी का लम्बे समय तक बना रहना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। पौधो का रोपड़ ही एक मात्र उपाय है। समिति प्रमुख डा.विनय पटेल ने कहा कि एक पेड़ मां के नाम के अंतर्गत संस्था द्वारा सतत् पौधारोपण किया जा रहा है। आज संपूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन पर्यावरण संकट के दौर से गुजर रहा है। पर्यावरण संरक्षण के बिना संतुलित समावेशी विकास की कल्पना नही की जा सकती अतः हम सभी को सामूहिक रूप से वर्षाकाल में जल का संरक्षण एवं पौधारोपण अधिक से अधिक करना चाहिये इस अवसर पर क्षेत्रीय आमजनो की सहभागिता रही सभी ने पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। संस्था द्वारा आम, आवंले, गुलमोहर,अशोक,नीम,पीपल, बड़ एवं औषधीय पौधो का रोपण किया जा रहा है।

दो दिवसीय गुरूपूर्णिमा उत्सव

नरसिंहपुर। शासन के निर्देशानुसार समस्त महाविद्यालयों में दिनांक 21 एवं 22 जुलाई 2024 को दो दिवसीय गुरूपूर्णिमा उत्सव मनाया जाना है। इन निर्देशों के तहत इस महाविद्यालय में भी कार्यक्रम आयोजित किये जायेगें। इस कार्यक्रम में प्रथम एवं द्वितीय दिवस में प्रातः 09 से 02:30 बजे तक कार्यक्रम संचालित किये जायेगें। कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा गुरूजनों का सम्मान किया जावेगा। गुरू पूर्णिमा का महत्व, ऐतिहासिक एवं सांस्कृति पृष्ठभूमि पर वक्तव्य होगा, गुरू-शिष्य परम्परा भारतीय परंपरा में गुरू-शिष्य संबंधों की महत्ता पर चर्चा, शिक्षा में नैतिकता (नैतिक शिक्षा और वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उसकी भूमिका), योग और ध्यान (गुरू पूर्णिमा के अवसर पर मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर जोर दिया जायेगा), गुरू के आदर्श- प्रमुख गुरूओं की जीवन गाथा और उनके शिक्षण सिद्धांत, शिक्षा में नवाचार- आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नवाचार की भूमिका और उसकी आवश्यकता एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम- विद्यार्थियों द्वारा गुरू पूर्णिमा के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां होंगी।

कलेक्टर ने किया होमगार्ड परिसर में पौधारोपण

नरसिंहपुर। एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले एवं अपर कलेक्टर श्रीमती अंजली शाह ने डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट होमगार्ड नरसिंहपुर के परिसर में पौधरोपण किया। उन्होंने यहां अशोक के पौधे रोपे। इस दौरान अशोक के कुल 21 तथा बांस के 60 पौधे रोपे गये। कलेक्टर श्रीमती पटले ने पर्यावरण संरक्षण के लिए नागरिकों से कहा कि वे अभियान से जुड़ पौधे अवश्य लगाएं। उन्होंने कहा कि धरा को हरा-भरा बनाने और जीवन में पेड़-पौधों के महत्व को समझते हुए पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सभी लोग सहभागिता निभाएं। इस अवसर पर डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट श्री टीआर चौहान, प्लाटून कमांडर श्री वीरेंद्र सूर्यवंशी, श्री नीरज सिंह ठाकुर, अन्य स्टाफ, होमगार्ड के जवानो और एसडीआरएफ के जवानों द्वारा भी पौधरोपण किया गया।

कौशल प्रदर्शनी का आयोजन

नरसिंहपुर। विगत दिवस पी.एम.श्री शासकीय महारानी लक्ष्मी बाई कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नरसिंहपुर में कौशल विकास प्रोत्साहन हेतु कौशल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसमें शासकीय हाई स्कूल नयागॉव की प्राचार्य श्रीमती प्रीति नेमा द्वारा विद्यार्थियों द्वारा बनाये गये मॉडलो का निरीक्षण किया गया।

शासकीय संगीत महाविद्यालय धार में संगीत कार्यशाला में युवाओं ने सीखे गुर

धार। मध्यप्रदेश शासन संस्कृति संचालनालय भोपाल के सौजन्य से गुरु पूर्णिमा पर्व के अवसर पर 15 दिवससीय संगीत कार्यशाला शासकीय संगीत महाविद्यालय धार द्वारा आयोजित की गई। ख्यातिलब्ध संगीत कला गुरु पण्डित विलास खरगोनकर, इंदौर , द्वारा तबला वादन की बारीकियों, तिट, तिरकिट के कायदे, पेशकार, लयकारियां और बंदिशों को समझाकर युवा तबला वादकों और विद्यार्थियों को मार्गदर्शन दिया गया तथा वरिष्ठ संगीतज्ञ दीपक खलतकर, धार, सुप्रसिद्ध गायिका डॉ. स्नेहा पण्डित द्वारा गुरू वन्दना,रागों ,स्वरों का ज्ञान, रागों में अनेक बंदिशों, आलाप- तान, थाट, अलंकार आदि को सिखाकर मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

इसी तारतम्य में 7 दिवसीय चित्रकला कार्यशाला के तहत् प्रसिद्ध चित्रकार दुर्गेश बिरथरे जबलपुर एवं धमेंद्र राठौर, जयपुर द्वारा ललित कला के विद्यार्थीयों को रंग कला के विभिन्न आयामों को बताकर मार्गदर्शन प्रदान किया गया। गुरू पूर्णिमा पर्व पर 21 जुलाई को इन्हीं कला गुरुओं और प्रशिक्षित विद्यार्थीयों द्वारा संध्याकालीन संगीत सभा में 4 बजे से सांगीतिक प्रस्तुति होगी एवं प्रातः 11 बजे से व्याख्यान एवं डेमोस्ट्रेशन आयोजित किया जा रहा है। यह कार्यक्रम शासकीय ललित कला महाविद्यालय, घोड़ा चौपाटी धार में रहेगा। इस अवसर पर धार के तमाम सुधि श्रोताओं को सादर आमंत्रित किया गया है। प्रवेश निःशुल्क रहेगा।

साहब अब तो गई नगरपालिका की पूरी जमीन दबंगई के कब्जे में..

पूत के पांव पालने में..

नगरपालिका - संजीव डे राय

नगरपालिका के नाम दर्ज 15/1 जमीन और उस पर निर्मित रहा प्राथमिक बजरिया स्कूल अब बीते दिनों की बात हो गई..! पिछले 90 साल से सरकारी रिकॉर्ड में दर्ज नगरपालिका के नाम लगभग एक एकड़ से ज्यादा 59400 फुट जमीन आने वाले दिनों रामलाल शर्मा स्कूल के कब्जे में दिखाई देगी, इस मूक बजरिया स्कूल की हालत जर जर कहकर नगरपालिका ने उसे पूरे षड्यंत्र के साथ जमींदोज किया है। पाठ्य पुस्तक निगम के अनुदान राशि से निर्मित उस भवन को भी यहां नहीं बक्शा गया रिकॉर्ड में जो सरकारी उम्र तक पूरी नहीं कर पाई, इस जमीन का चुनाव आडिटोरियम निर्माण के लिए ताबड़तोड़ किया जाना एक तरह नपा की पूरी जमीन हथियाने का षड्यंत्र है। फिर इस पूरे मामले में विधायक का मौन रहना ऐसा प्रतीत कराता है जैसे विधायक तक इस षड्यंत्र में शामिल हैं..? वर्ष 1972 में शासनाधीन हुई एसएनजी सहित शासकीय नर्मदा महाविद्यालय का रिकार्ड भी इस षड्यंत्र शामिल नजर आ रहा है, ये दोनों संस्था शासनाधीन होने के बावजूद सरकारी रिकॉर्ड में अभी तक दोनों संस्थाओं की जमीन नर्मदा शिक्षा समिति के नाम पर दर्ज चल रही है, फिर नर्मदा शिक्षा संस्था सालाना विजिट पर इन्हें अपना बताकर उसका लाभ उठा रही। वर्तमान की दो फोटो देखकर इसकी सच्चाई स्वतं सामने आती है। जिसमें नर्मदा शिक्षा समिति ने एस एन जी स्कूल से स्टेडियम जाने वाले मार्ग पर अतिक्रमण कर उसे न केवल बंद कर दिया, उस मार्ग पर तीन माला भवन बना लिया और जिसके सामने टूटी हुई मूक बजरिया स्कूल के बच्चे अब सड़क पर बैठकर विद्याध्ययन करने को मजबूर हो गए तो दूसरी तरफ़ तोड़ी गई इस मूक बजरिया स्कूल के खाली रकबे का उपयोग एनई एस में लगाई जा रही शिक्षाविद पंडित रामलाल शर्मा के स्कूली बच्चों की प्रार्थना होने लगी है।

राजस्व महाअभियान हुआ प्रारंभ

45 दिनों तक राजस्व अभिलेख दुरस्ती का होगा कार्य

अपर कलेक्टर ने राजस्व अमले को किया निर्देशित

नरसिंहपुर। राज्य शासन द्वारा राजस्व प्रकरणों के त्वरित निराकरण और राजस्व अभिलेख में इंद्राज त्रुटियों को ठीक करने के लिए राजस्व महा- अभियान 2.0 का आयोजन 16 जुलाई से 31 अगस्त 2024 तक किये जाने का निर्णय लिया गया है। राजस्व महा अभियान का उद्देश्य है कि राजस्व न्यायालयों- आरसीएमएस में समय- सीमा पर लंबित प्रकरणों, नामांतरण, बटवारा, अभिलेख दुरस्ती का निराकरण, नए राजस्व प्रकरणों का आरसीएमएस पर दर्ज कराना, नक्शे पर तरमीम, पीएम किसान का सेचुरेशन व समग्र का आधार से ई- केवायसी और खसरे की समग्र/ आधार से लिकिंग एवं फार्मर रजिस्ट्री का क्रियान्वयन है। इस संबंध में अपर कलेक्टर श्रीमती अंजली शाह ने सभी अनुविभागीय राजस्व अधिकारियों, तहसीलदार व नायब तहसीलदार को अभियान के तहत आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिये हैं। अभियान के तहत राजस्व संबंधी सभी प्रकरण आरसीएमएस दर्ज कराये जायें। ऐसे प्रकरण जो अभी न्यायालय में ऑफलाईन प्रचलित हैं अथवा किसी कारण से नम्बर से उतर गए हों, उन्हें आरसीएमएस में दर्ज कराना सुनिश्चित करें। यह देखने में आया है कि राजस्व न्यायालयों में नामांतरण, बटवारे के आदेश पारित होने के बाद भी राजस्व अभिलेखों (खसरा/ नक्शे) में आदेश का अमल नहीं हुआ है। सभी न्यायालय इन आदेशों का अभिलेखों में अमल करेंगे। यह कार्रवाई 31 अगस्त 2024 तक पूर्ण की जाये। अनुविभागीय अधिकारी द्वारा तहसील न्यायालयों का निरीक्षण करेंगे। अनुविभागीय अधिकारी अपने अनुभाग के अंतर्गत सभी तहसील/ टप्पा तहसील का शत- प्रतिशत निरीक्षण 7 अगस्त 2024 तक पूर्ण किया जाना सुनिश्चित करें। आरसीएमएस पर लंबित प्रकरणों को समय- सीमा में निराकरण के लिए राजस्व अधिकारियों द्वारा 30 जून 2024 की स्थिति में समय- सीमा पार कर चुके लंबित प्रकरणों को चिन्हित किया जाये। नामांतरण 30 जून 2024 को समय सीमा बाह्य के लंबित नामांतरण प्रकरणों विवादित/ अविवादित का निराकरण सुनिश्चित कर दर्ज प्रकरणों का समय- सीमा में निराकरण किया जाना सुनिश्चित करें। 30 जून 2024 को समय- सीमा बाह्य के लंबित बटवारा प्रकरणों का निराकरण सुनिश्चित करते दर्ज प्रकरणों का समय- सीमा में निराकरण किया जाना सुनिश्चित करें। 30 जून 2024 का 6 माह की अवधि लंबित सभी प्रकार के अभिलेखों के शुद्धिकरण के प्रकरणों का निराकरण किया जाना सुनिश्चित करें। नक्शे में तरमीम के लिए कार्यवाही की जायेगी। इसमें खसरे में बटांकन होना परंतु नक्शे में नही होना, खसरा नंबर का एक से अधिक बार होना, नक्शे में बटांकन होना एवं खसरे में नही होना, शामिल खसरे को भिन्न किया जाना। समग्र बेब पोर्टल, एमपी ऑनलाईन/ सीएससी कियोस्क के माध्यम से समग्र में आधार की ई- केवायसी कराने की सुविधा नागरिकों को निःशुल्क उपलब्ध रहेगी। पीएम किसान सेचुरेशन हेतु संदर्भित पत्र में दिए गए निर्देशानुसार कार्यवाही करना सुनिश्चित करे। स्वामित्व योजना के तहत आबादी भूमि के सर्वेक्षण की कार्यवाही पूर्ण करने के लिए कार्यवाही की जाये। 31 जुलाई 2024 तक समस्त ग्रामों में ग्राउंड टूथिंग का कार्य पूर्ण किया जाए। 5 अगस्त 2024 तक आरओआर एंट्री की कार्यवाही का कार्य पूर्ण किया जाए। 12 अगस्त 2024 तक अधिक से अधिक ग्रामों का अंतिम प्रकाशन की कार्यवाही का कार्य पूर्ण किया जाए। 15 अगस्त 2024 को राष्ट्रीय पर्व के अवसर पर अधिकार अभिलेख का वितरण समारोह पूर्वक सुनिश्चित किया जाए। 31 अगस्त 2024 तक योजना सैचुरेट करने की कार्यवाही पूर्ण की जाए। प्रदेश में फार्मर रजिस्ट्री का प्रबंधन mpfr.agristack.gov.in पोर्टल के माध्यम से किया जा रहा है। इसके लिए राजस्व विभाग द्वारा दिये गये निर्देशानुसार कार्यवाही करना सुनिश्चित करें। अभियान का व्यापक प्रचार- प्रसार एवं प्रगति की जानकारी सोशल मीडिया के माध्यम से जिले द्वारा प्रतिदिन साझा की जाए एवं प्रत्येक ग्राम में फ्लेक्स व दीवार लेखन कर अभियान का प्रचार- प्रसार किया जाए। उत्कृष्ट कार्य करने वाले अनुविभागीय अधिकारी, तहसीलदार, नायब तहसीलदार, राजस्व निरीक्षक, पटवारी को अभियान के समापन पर पुरस्कृत किया जाए।राजस्व महाअभियान 18 जुलाई से 31 अगस्त 2024 तक चलाया जायेगा। राज्य शासन के राजस्व विभाग द्वारा जारी निर्देश और निर्धारित समय सारणी के अनुसार संपन्न किया जाना सुनिश्चित करेंगे।

कलेक्टर की अध्यक्षता में नेशनल अचीवमेंट सर्वे जिला स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक संपन्न

नरसिंहपुर। कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले की अध्यक्षता व सीईओ जिला पंचायत श्री दलीप कुमार की मौजूदगी में जिले में नेशनल अचीवमेंट सर्वे के सफल क्रियान्वयन हेतु गठित टास्क फोर्स की जिला स्तरीय बैठक डाइट सभागार में शुक्रवार को आयोजित की गई। कलेक्टर श्रीमती पटले ने जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में नेशनल अचीवमेंट सर्वे के तैयारियों को लेकर गत वर्ष की तुलना में इस वर्ष और अच्छे प्रयास करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार उनके बुनियादी ज्ञान एवं समझ को विकसित करने के लिए सतत मॉनीटरिंग करें। विद्यार्थी अपने लक्ष्य को हासिल कर सकें इसके लिए विद्यालय में बच्चों को नवाचार के साथ शिक्षण कार्य करायें। कलेक्टर ने कहा कि शासकीय व अशासकीय विद्यालय में कोई अंतर नही होता है। अशासकीय विद्यालयों की मॉनीटरिंग के लिए रणनीति तैयार कर नोडल अधिकारी नियुक्त कर रेंडम आधार पर सतत मॉनीटरिंग कर बच्चों के स्तर को जांचा जाये। विद्यार्थियों के स्तर को बढ़ाने के लिए

अकादमिक स्तर पर टीम तैयार करें। कठिन बिंदुओं का निराकरण कर छात्र के ज्ञान स्तर को बढ़ायें और लक्ष्य हासिल कर सकें। बैठक में कलेक्टर श्रीमती पटले ने कहा कि सर्वे के दौरान विद्यालयों में ओएमआर सीट पर ली जाने वाली परीक्षा के फॉर्मेट एवं विश्लेषण के सवाल पर डिस्ट्रिक्ट को- ऑर्डिनेटर से जानकारी ली। उन्होंने कहा कि प्रश्न बैंक एवं किताबों से प्रश्नों को तैयार कर विद्यार्थियों को इन प्रश्नों का अभ्यास करवायें। सीईओ जिला पंचायत श्री दलीप कुमार ने नेशनल अचीवमेंट सर्वे के कलेंडर एवं टूल के आधार पर विद्यालय में गतिविधियां करवायें। प्रश्नों के उत्तर ओएमआर सीट पर हल कराकर बच्चे की स्तर की सतत मॉनीटरिंग की जाये और उनकी दक्षता हासिल करने के प्रयास किये जायें। बैठक में जिला शिक्षा अधिकारी श्री अनिल व्यौहार, जिला परियोजना समन्वयक डॉ. आरपी चतुर्वेदी, डाइट प्राचार्य श्री एमए खान, डाइट व्याख्याता श्री जीएल उप्रेलिया, सहायक प्राध्यापक डाइट श्री आरके यादव के द्वारा नेशनल अचीवमेंट सर्वे की तैयारियों को लेकर चर्चा की गई। इस दौरान सहायक संचालक शिक्षा श्री एएस मसराम, जिला स्तरीय गठित नेस टास्क फोर्स समिति के सदस्य, समस्त विकासखंड के विषयवार सपोट एवं प्रशिक्षण जिला स्तर- डाइट, विषयवार सपोट एवं प्रशिक्षण जिला स्तर- डीआरजी, ब्लाक नेस प्रभारी और अन्य अधिकारी व कर्मचारी मौजूद थे।

गोड़ीखेरी रैयत निवासी आदिवासी ने कहा भूमि पर कर रहे हैं जबरन कब्जा, रात 10 बजे किया सीमांकन

हीरालाल गोलानी सोहागपुर

विगत मंगलवार को जनसुनवाई में करीबन चार आवेदन प्रशासन को प्राप्त हुए। इस अवसर पर अनुविभागीय अधिकारी बृजेंद्र रावत, तहसीलदार अल्का एक्का,जनपद पंचायत सीईओ श्री अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

रोचक आवेदन - जनसुनवाई में एक आवेदन बहुत ही रोचक है। जिसमें आवेदन ने लिखा है मेरी भूमि पर कब्जा करने की धौंस देकर कहते हैं।कि हम केस जीत गए हैं।हम पटवारी, तहसीलदार से मिलकर कब्जा कर लेंगे। आवेदक इमरत उइके पिता बिस्सीलाल उइके आदिवासी ग्राम गोड़ीखेरी रैयत ने लिखा है कि मै विस्थापित होकर ग्राम चित्तोड पट्टन से ग्राम गोड़ीखेड़ीरैयत आया हूं। मैंने एवं मेरे पिताजी के द्वारा शामील शरीक भूमि वर्ष 2014 में ग्राम गौडीसखेडीरैयत में विक्रेता बु?द्धोबाई से खसरा नम्बर 3/2 रकवा 2 एकड़ कृषि भूमि 8 लाख रूपये में क्रय की थी। मुझे उक्त जमीन का कब्जा सौंप दिया गया था । तहसीलदार के द्वारा आवेदन प्रस्तुत किया था। जिसमें नामांतरण हो गया था ।उसकी ऋण पुस्तिका भी मुझे प्राप्त हो चुकी है। बाद में मैने खेत पर एक नलकूप खुदवाया था । इसी भूमि पर कृषि करते अपने परिवार का भरण पोषण करता हूं। लेकिन तीन व्यक्तियों रामदीन पिता सुखलाल निवासी नया पट्टन, रंगीलाल पिता सुरेश, अशोक पिता सुरेश निवासी कूकरा ने जबरन हमारी कृषि भूमि पर कब्जा करने को तैयार हैं। हमसे कहते हैं कि हम केस जीत गए है ।तेरी जमीन पर पटवारी और तहसीलदार से मिलकर कब्जा कर लेगें। मुझे न्यायालय का कोई भी नोटिस प्राप्त नहीं

हुआ न ही कोई किसी कागज पर कोई हस्ताक्षर किए हैं मैं ड्यूटी पर था । मुझे दूसरे दिन जानकारी प्राप्त हुई कि आर आई और पटवारी जिनके नाम नहीं जानता के द्वारा रात के 10 बजे सीमाकन किया गया है। यह सब अनावेदकगणों को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से किया गया है। अब उनके द्वारा धमकी दी जा रही है । तुम जमीन खाली करके यहां से भाग जाओ, नहीं तो हम तुझे परिवार सहित जान से खत्म कर देंगे। हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मैं धमकी से भयबीत हूं । आपसे निवेदन करता हूँ कि मेरी उपस्थिति मेरी भूमि का सीमांकन कराया जाए। जिससे उक्त भूमि की स्थिति स्पष्ट हो सकें।

प्रशासन से आग्रह - इस संबंध में आवदेक ने बताया कि मैं वन विभाग भैरों सुखतवा केसला में काम करता हूं। मुझे समझ में नहीं आता कि रात को दस बजे कैसे सीमांकन हुआ।हम पढ़े लिखे नहीं है।घर पर बाल बच्चे एवं पिताजी रहते हैं। मैं फिर नौकरी पर चला जाऊंगा। प्रशासन से आग्रह है कि हमारा सीमांकन जल्दी कर दें।मैं फिर वन विभाग की नौकरी में चला जाऊंगा।मेरा परिवार परेशान न हों ।

नहीं मिला प्रधानमंत्री आवास का पैसा - अम्बेडकर वार्ड निवासी शेख अनवर ने आवेदन दिया है कि मैंने पहले भी जनसुनवाई में आवेदन दिया था। कि मुझे प्रधानमंत्री आवास का पैसों की किश्त नहीं डाली जा रही है।

भूमि पर कब्जा हटवाएं - ग्राम आमदेही के बालकृष्ण कुशवाहा पिता रामसिंह कुशवाह निवासी ने आवेदन देकर खसरा नंबर 100 रखवा 2.19 हेक्टेयर एवं नहर भूमि पर भगवान दास मेहरा के द्वारा कब्जा कर लिया है। हमें कृषि कार्य करने के लिए रास्ता देने निवेदन किया है।

उल्लेखनीय - जनसुनवाई में अधिकांश आवेदन पत्रों पर यदि स्थानीय प्रशासन सकारात्मक कदम उठाए।तो ऐसे आवेदन- पत्र बार बार न आएं। जनसुनवाई में प्रदान किए आदिवासी इमारत के आरोप में सत्यता है तो यह गंभीर मामला है कि आर आई पटवारी ने रात के दस बजे सीमांकन किया है। ऐसे मामले में कलेक्टर सोनिया मीना को संज्ञान लेकर आवश्यक कार्रवाई करनी चाहिए।

आज मुख्यमंत्री डॉ. यादव संस्कारधानी जबलपुर में करेंगे आरआईसी का शुभारंभ

● 3500 से अधिक निवेशक होंगे शामिल ● संतुलित एवं समतापूर्ण विकास को मिलेगा बढ़ावा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में संतुलित और समतापूर्ण विकास की यात्रा आगे बढ़ाते हुए, राज्य सरकार शनिवार 20 जुलाई को सुबह 9 बजे से संस्कारधानी-जबलपुर में अपना दूसरा रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव आयोजित कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 80 करोड़ रूपये की लागत से नवनिर्मित 'नेताजी सुभाष चंद्र बोस सांस्कृतिक और सूचना केंद्र' का उद्घाटन कर यहाँ होने वाले क्षेत्रीय उद्योग सम्मेलन का शुभारंभ भी करेंगे। सम्मेलन में प्रमुख उद्योगपतियों, विभिन्न उद्योग संघों के प्रतिनिधियों और प्रमुख विदेशी प्रतिनिधियों सहित 3500 से अधिक उद्योग जगत की प्रमुख हस्तियाँ शामिल होंगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव 60 से अधिक इकाईयों का वर्चुअली उद्घाटन कर उद्योगपतियों से वन-टू-वन चर्चा भी करेंगे।

रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव में शामिल होने वाली हस्तियों में बैद्यनाथ समूह, आईटीसी, वोल्वो आयशर, बेस्ट कॉर्प, एसआरएफ एवं दावत समूह जैसे प्रमुख औद्योगिक समूह भाग लेंगे। आरआईसी में ताईवान, मलेशिया, ब्रिटेन, फिजी, जापान और इंडोनेशिया का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रमुख विदेशी प्रतिनिधि भी इसमें शामिल होंगे। विशिष्ट अतिथि एमएसएमई मंत्री श्री चैतन्य काश्यप और पीडब्ल्यूडी मंत्री श्री राकेश सिंह सहित अन्य जन-प्रतिनिधि उपस्थित रहेंगे।

जबलपुर में हो रही आरआईसी के पहले मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने छिंदवाड़ा और जबलपुर सहित अन्य क्षेत्रों के उद्योगपतियों के साथ बैठक कर औद्योगिक निवेश के लिए प्रोत्साहित किया। सम्मेलन का उद्देश्य क्षेत्रीय क्षमता का दोहन कर औद्योगिक विकास में क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करना है। जबलपुर क्षेत्र की औद्योगिक क्षमताओं और अवसरों से निवेशकों को रू-ब-रू करवाकर क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना है। इस इनोवेटिव कान्क्लेव का उद्देश्य प्रमुख बाजारों से निवेशकों को एक मंच पर लाकर, सार्थक चर्चा कर सहयोग को बढ़ावा दिया जाना है।

क्षेत्रीय सत्रों में होगी क्षेत्र विशेष में निवेश पर विस्तृत चर्चा

जबलपुर एवं आसपास के क्षेत्र की निवेश संभावनाओं पर केंद्रित 5 क्षेत्रीय सत्र आयोजित किए जाएंगे। इनमें कृषि, खाद्य एवं डेयरी प्र-संस्करण, रक्षा, खनन एवं खनिज, कपड़ा एवं परिधान तथा पर्यटन शामिल है। साथ ही उद्योग संघों, स्टार्ट-अप्स एवं रक्षा, कपड़ा एवं परिधान के विशेषज्ञों के साथ राउण्ड-टेबल चर्चा भी होगी।

सम्मेलन में 300 से अधिक क्रेता-विक्रेता मीटिंग्स और वन-टू-वन चर्चा भी होंगी। निवेशकों को महाकौशल का अनुभव प्रदान करने के लिए जबलपुर एक्सपो और रक्षा प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम का समापन सांस्कृतिक कार्यक्रम और नेटवर्किंग डिनर के साथ होगा, जिसमें क्षेत्र की संस्कृति और व्यंजनों का प्रदर्शन किया जाएगा।

औद्योगिक विकास में प्रथम स्थान पर होगा मध्यप्रदेश : सीएम डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में उद्योग और व्यापारिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार हरसंभव पहल कर रही है। मार्च माह में उज्जैन में हुई इन्वेस्टर समिट में 75 हजार करोड़ रूपए से अधिक के प्रस्ताव प्राप्त हुए। इसी क्रम में 20 जुलाई को जबलपुर में रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव आयोजित की जा रही है। इसमें देशभर से निवेशक और औद्योगिक घराने तथा प्रदेश के उद्यमियों से निवेश के नए प्रस्ताव आने की संभावना है। प्रदेश के संसाधनों के आधार पर कृषि, शिक्षा, चिकित्सा तथा कुटीर-लघु-मध्यम और भारी उद्योगों के माध्यम से हम प्रदेश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने की दिशा में निरंतर प्रयासरत हैं। राज्य शासन प्रदेश को औद्योगिक विकास के क्षेत्र में देश में प्रथम स्थान पर लाने के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 20 जुलाई को जबलपुर में होने वाले दूसरे रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव के संबंध में यह बात कही।

हाईवे पर पलटा ट्रक, लोगों ने टमाटर लूटे

भीड़ से डर गया ड्राइवर, पुलिस बुलानी पड़ी

बीना (नप्र)। सागर के खुरई में शुक्रवार को टमाटर से भरा एक ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गया। आसपास रहने वालों और हाईवे से गुजर रहे लोगों ने टमाटर लूट लिए। ड्राइवर ने लोगों को रोका। जब नहीं माने तो पुलिस बुलानी पड़ी। इसकी एक बड़ी वजह बढ़े हुए भाव भी हैं। एमपी में पिछले कुछ दिनों से टमाटर 80 से 115 रुपए तक बिक रहा है।

घटना जिले के बांदरी थाना क्षेत्र में नेशनल हाईवे-44 पर रजौआ गांव के पास की है। ट्रक ड्राइवर ने पुलिस को बताया कि सामने अचानक गाय आ गई। उसे बचाने का प्रयास किया तो ट्रक अनियंत्रित होकर सड़क से उतरा और पलट गया। टमाटर बिखर गए। इस दौरान हाईवे से गुजर रहे लोग रुके और टमाटर के कैरेट अपने वाहनों में रखकर ले जाने लगे। कुछ देर बाद गांव से महिलाएं, पुरुष और बच्चे भी बोरियां लेकर आ गए। ट्रक अनियंत्रित होकर सड़क से उतरा और पलट गया। लोग बोरियां भर-भरकर टमाटर ले गए।

पुलिस पहुंची तब तक 8 क्विंटल टमाटर ले गए- ड्राइवर का कहना है कि वो अकेला था और टमाटर ले जाने वाले लोगों की संख्या ज्यादा थी, इसलिए किसी ने उसकी बात नहीं सुनी। ऐसे में पुलिस को बुलाया। तब तक लोग 7-8 क्विंटल टमाटर लेकर जा चुके थे। बांदरी थाना प्रभारी सुमेर सिंह ने बताया कि ट्रक ड्राइवर शिकायत करेगा तो कार्रवाई की जाएगी।

बड़वानी के बलजीत राणा को एनआईए ने पंजाब में पकड़ा

खालिस्तानी आतंकवादी के एजेंटों को हथियार सप्लाई का आरोप

भोपाल (नप्र)। नेशनल इंवेस्टिगेशन एजेंसी (एनआईए) ने कनाडा के खालिस्तानी आतंकवादी लखबीर सिंह संधू उर्फ लांडा के एक प्रमुख सहयोगी को एक बड़े आतंकवादी नेटवर्क संबंधी मामले में गिरफ्तार किया है। एक आधिकारिक बयान में शुक्रवार को यह जानकारी दी गई। यह मामला व्यापारियों समेत अन्य लोगों से जबरन वसूली के लिए घातक हथियारों की आपूर्ति करने से जुड़ा है। एनआईए ने एक बयान में बताया कि मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले के उमर्टी के रहने वाले बलजीत सिंह उर्फ राणा भाई उर्फ बल्ली को गुरुवार को गिरफ्तार किया गया। बयान में कहा गया है कि बल्ली पंजाब में लांडा के एजेंटों को हथियारों की आपूर्ति करने वाला प्रमुख व्यक्ति है। इन हथियारों का इस्तेमाल व्यापारियों और अन्य लोगों से जबरन वसूली करने समेत आतंकवादी गतिविधियों को बड़े पैमाने पर अंजाम देने के लिए किया जाता था। एनआईए ने कहा कि मामले में जांच के दौरान गुरप्रीत सिंह गोपी नामक व्यक्ति को भी गिरफ्तार किया गया है, जिसकी पहचान लांडा के सहयोगी के रूप में की गई है। एक अन्य खालिस्तानी आतंकवादी सतनाम सिंह सत्ता को भी गिरफ्तार किया गया है।

भोपाल एयरपोर्ट पर यात्रियों का मैन्युअल चेक इन

माइक्रोसॉफ्ट सर्वर में गड़बड़ी, ई-बोर्डिंग और इंडिगो ऐप से टिकट बुकिंग में दिक्कत

भोपाल (नप्र)। माइक्रोसॉफ्ट के सर्वर में शुक्रवार को तकनीकी खराबी आ गई। इसकी वजह से दुनियाभर में एयरलाइंस, टीवी टेलीकास्ट, बैंकिंग और कई कॉर्पोरेट कंपनियों के कामकाज पर असर पड़ा है। भारत समेत दुनियाभर में एयरपोर्ट पर चेक इन और टिकट बुकिंग में दिक्कत आ रही है इससे फ्लाइट्स या तो लेट हैं या कैंसिल की जा रही हैं।

भारत में, 5 एयरलाइन- इंडिगो, स्पाइसजेट, अकासा एयर, विस्तारा और एयर इंडिया एक्सप्रेस ने बताया कि उनकी बुकिंग, चेक-इन और फ्लाइट अपडेट सर्विस इस तकनीकी समस्या से प्रभावित हुई है। एयरपोर्ट पर लोग सर्विसेज नहीं मिलने से परेशान हो रहे हैं। भोपाल एयरपोर्ट पर कई यात्रियों ने अपनी यात्रा रद्द कर दी है। ये परेशानी शुक्रवार सुबह 11 से शुरू हुई है। एयरपोर्ट डायरेक्टर रामजी अवस्थी का कहना है कि भोपाल से कोई फ्लाइट कैंसिल नहीं हुई है।

भोपाल से कोई फ्लाइट कैंसिल नहीं हुई- एयरपोर्ट डायरेक्टर रामजी अवस्थी ने बताया की सॉफ्टवेयर में दिक्कत के चलते वेब चेक इन और इंडिगो ऐप से टिकट बुकिंग में यात्रियों को दिक्कत आ रही है। यात्री सीधे एयरपोर्ट पर आकर यह काम मैन्युअल कर रहे हैं। इसके चलते भोपाल से संबंधित कोई भी फ्लाइट कैंसिल नहीं हुई है। मुंबई वाली फ्लाइट कैंसिल हुई है वह किसी अन्य तकनीकी कारणों के चलते हुई है। लोग लगातार यहां पर मैन्युअल आकर चेक इन कर रहे हैं। हां कुछ यात्रियों की यात्रा कैंसिल करने की सूचना हमें भी मिली है। मैं यात्रियों से कहना चाहूंगा कि वह अपनी यात्रा कैंसिल न करें। एयरपोर्ट पर मैन्युअल चेक इन कर यात्रा करें।

म.प्र. में कुछ दिनों तक भारी बारिश का अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में अब तक औसतन 11.1 इंच बारिश हो गई है, जो मानसूनी कोटे की कुल बारिश का 30 फीसदी है। फिलहाल, मानसून ट्रफ, साइक्लोनिक सर्कुलेशन और वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) के एक्टिव होने से आंधी-बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम बना है। इस वजह से एमपी में अगले चार दिन तक भारी बारिश का दौर चलेगा। शुक्रवार को राजगढ़, रायसेन, हरदा, बैतूल और बालाघाट में तेज बारिश हो सकती है।

सीनियर मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया, मानसून ट्रफ गुना से होकर गुजर रही है। वेस्टर्न डिस्टरबेंस और साइक्लोनिक सर्कुलेशन का असर भी है। बंगाल की खाड़ी में लो प्रेशर एरिया एक्टिव है। इसके आगे बढ़ने की संभावना है। इस वजह से अगले कुछ दिन तक कई जिलों में तेज बारिश होगी।

प्रदेश में गुरुवार को भी तेज बारिश का दौर शुरु था जो शुक्रवार को भी जारी रहा। भोपाल

में करीब एक घंटा तेज बारिश हुई। इस दौरान 38 मिमी यानी डेढ़ इंच पानी गिर गया। सबसे ज्यादा बारिश ग्वालियर में 3 इंच हुई। मंडला में 1.7 इंच पानी गिर गया। रायसेन, छिंदवाड़ा, रीवा, सागर और बालाघाट जिले के मलाजखंड में भी तेज बारिश हुई।

भोपाल रेलवे स्टेशन की छत से बहने लगा पानी- तेज बारिश के चलते दोपहर करीब 3:00 बजे भोपाल स्टेशन पर प्लेटफॉर्म नंबर एक की छत से पानी बहने लगा। प्लेटफॉर्म शेड से निकासी चोक होने के चलते पानी तेजी के साथ यात्रियों पर गिरने लगा। प्लेटफॉर्म नंबर 2 और 5 पर भी कई जगह से पानी टपकता नजर आया।

भाजपा सांसद को जान से मारने की धमकी

कॉलर बोला- तुम राष्ट्रवाद और हिंदुत्व के बहुत वीडियो बना रहे हो, तुम्हें खत्म कर दूंगा

देवास (नप्र)। देवास-शाजापुर सांसद महेंद्र सिंह सोलंकी को शुक्रवार को जान से मारने की धमकी मिली है। सांसद से अज्ञात व्यक्ति ने फोन पर कहा- आज-कल तुम राष्ट्रवाद और हिंदुत्व के बहुत वीडियो बना रहे हो, तुम्हें खत्म कर दूंगा।

सांसद ने इसकी शिकायत देवास एसपी से की है। पुलिस ने केस दर्ज कर लिया गया है। प्रारंभिक पड़ताल में पता चला है कि जिस नंबर से कॉल आया था, वो कानपुर उत्तर प्रदेश का है।

सांसद सोलंकी ने बताया कि सुबह 11.40 बजे मैं तिलक नगर स्थित अपने आवास पर स्टडी रूम में था। इसी दौरान अज्ञात नंबर से मुझे कॉल आया। कॉलर ने जान से मारने की धमकी दी। इसके बाद वह गालियां देने लगा।

सोलंकी ने कहा- मुझे पता चला है कि जिस नंबर से कॉल आया था, वह कानपुर का है। वहीं, पर वह नंबर स्विच ऑफ भी हुआ है। पुलिस को मैंने लिखित में शिकायत की है। पुलिस जांच का पता लगाएगी की वह कौन व्यक्ति है और मुझे क्यों धमकी दी, वह क्या चाहता है। उसका उद्देश्य क्या है, यह तो उसके पकड़ में आने के बाद ही पता चलेगा।

हिंदुत्व के लिए काम करने वाला व्यक्ति डरने वाला नहीं- सांसद ने कहा, ऐसे कॉल से मेरी हिंदूवादी छवि बिगड़ने वाली है। देश और हिंदुत्व के लिए काम करने वाला कोई व्यक्ति नहीं डरता है। मैं स्वयं भी किसी से नहीं डरता। यदि आप देश के लिए काम करते हैं तो इस प्रकार की धमकियां आगे भी मिलती रहेंगी। मैं इसकी बिल्कुल परवाह नहीं करता।

मेरा काम, मेरी गति निरंतर वैसी ही बनी रहेगी, जिस गति से अब तक मैं काम करता रहा हूं। मैं देश और समाज सेवा में लगा रहूंगा। ऐसे बहुत से आपराधिक मानसिकता के लोग हैं, जो ऐसी हकरत करते रहते हैं।

सिविल लाइन थाने में शिकायत

एसपी संपत उपाध्याय ने बताया कि सुबह के समय देवास सांसद के पास फोन आया है। इस संबंध में सिविल लाइन थाने में शिकायती आवेदन मिलने के बाद एफआईआर दर्ज कर सीएसपी के नेतृत्व में जांच की जा रही है।

जज की नौकरी छोड़कर सांसद बने हैं सोलंकी

सांसद महेंद्र सोलंकी लोकसभा 2024 में हुए लोकसभा चुनाव में दोबारा देवास-शाजापुर संसदीय सीट से सांसद बने हैं। महेंद्र सोलंकी ने 2018 में पहली बार जज की नौकरी छोड़कर चुनाव लड़ा और जीता था। 2018 में उन्होंने कांग्रेस प्रत्याशी प्रह्लाद टिपानिया और 2024 में कांग्रेस प्रत्याशी राजेंद्र मालवीय को हराया था।

पहले खुद कन्वर्ट हुए, फिर दूसरों को देने लगे लालच

धर्म परिवर्तन कराने वाले गिरोह की 3 महिला सदस्य नन, एक आरोपी लॉ ग्रेजुएट

भोपाल (नप्र)। भोपाल में धर्म परिवर्तन के लिए 20 लाख रुपए का लालच देने वाले गिरोह का पर्दाफाश हुआ है। मामले में पुलिस ने 3 महिलाओं समेत 5 लोगों को नोटिस देकर जमानत पर छोड़ दिया है। तीनों आरोपी महिलाएं नन हैं। इनमें से दो महिलाएं भोपाल जबकि एक नर्मदापुरम की रहने वाली है।

दरअसल, भोपाल के पिपलानी इलाके में रविवार शाम को तीन महिलाएं ईसाई धर्म का प्रचार कर रही थीं। इनमें से एक ने स्थानीय कारोबारी को ईसाई बनने के एवज में 20 लाख रुपए देने की बात कही। बच्चे की पढ़ाई मिशनरी स्कूल में फ्री में कराने का लालच भी दिया। कारोबारी ने अपने साथियों की मदद से महिलाओं को आनंद नगर पुलिस के हवाले कर दिया। मौके से भाग निकले उनके दो साथियों को बुधवार को दबोचा गया।

पिपलानी थाने के एसआई संतोष रघुवंशी ने बताया कि आरोपियों के नाम मैरी वस्तवाल, मैरी

मसीह, सुमन मसीह, चंद्रभान और बदाप्रसाद हैं। इनसे धार्मिक किताबें, पर्चे, डायरी जब्त किए हैं। पांचों के खिलाफ धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम की धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज किया है।

पेशे से वकील है बदाप्रसाद- 55 साल का बदाप्रसाद मूल रूप से तेलंगाना का रहने वाला है। बदाप्रसाद ने पुलिस पूछताछ में बताया कि उसने ईसाई धर्म पर काफी रिसर्च किया है। वह 2002 में कन्वर्ट हुआ था। इसके एवज में कोई रकम नहीं मिली।

मासूम के हाथ-पैर बांधकर हत्या, बैग में पैक कर फेंका

सिर पर चोट के निशान, नहीं हो सकी पहचान; सीसीटीवी खंगाल रही पुलिस

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर के ट्रांसपोर्ट नगर पार्किंग नंबर एक में लावारिस बैग में एक ढाई साल के बच्चे का शव मिला है। बच्चे को बड़ी बेरहमी से मारा गया है। उसके हाथ-पैर रस्सी से बांधकर शव को बांधकर पिट्ठू बैग में फिट किया गया है। फिलहाल मृतक की शिनाख्त नहीं हो सकी है। उसके सिर में चोट नजर आ रही है, लेकिन मौत कैसे हुई है यह पोस्टमार्टम रिपोर्ट में ही साफ हो सकेगा।

घटना शुक्रवार दोपहर 12 बजे टीपी नगर बहोड़ापुर की है। पुलिस को स्थानीय लोगों ने सूचना दी कि एक बैग लावारिस पड़ा हुआ है और मक्खियां भिन-भिना रही हैं। जिस पर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर बैग को खोला तो पूरी घटना का खुलासा हुआ है। पुलिस ने मामला दर्ज कर मासूम की पहचान के प्रयास तेज कर दिए हैं। इस तरह मिला था लावारिस बैग। मक्खियां भिनभिनाने पर पुलिस को दी गई

थी सूचना।

ग्वालियर की बहोड़ापुर थाना पुलिस को शुक्रवार दोपहर सूचना मिली थी कि ट्रांसपोर्ट नगर पार्किंग नंबर-1 में एक काले रंग का लावारिस बैग पड़ा हुआ है। बैग पर काफी मक्खियां भिन-भिना रही हैं। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और बैग को निगरानी में लेकर जब पुलिस ने बैग खोला तो पुलिस अधिकारियों के पैरों तले जमीन खिसक गई। बैग के अंदर एक मासूम का शव था। बच्चे की उम्र ढाई से तीन साल के लगभग थी। बच्चे के शव को बाहर निकाला गया तो उसके दोनों हाथ और एक पैर रस्सी से बंधे हुए थे, जबकि एक पैर खुला हुआ था। मामले की गंभीरता को समझते हुए तत्काल पुलिस ने फोरेंसिक एक्सपर्ट अखिलेश भार्गव को भी स्पॉट पर बुला लिया है। फोरेंसिक एक्सपर्ट ने स्पॉट का बारीकी से निरीक्षण किया है। यह तो साफ है कि बच्चे की हत्या कहीं और की गई है और शव को यहां लाकर डंप किया गया है। मृतक मासूम के शव की शिनाख्त नहीं सकी है। पुलिस ने शव को निगरानी में लेकर डेड हाउस में रखवा दिया है। ग्वालियर सहित आसपास के शहरों से लापता बच्चों की सूची मंगाई जा रही है।

यह है मासूम का हुलिया- बैग में जिस बच्चे का शव मिला है उसकी उम्र से ढाई साल के लगभग है। बच्चा नीले रंग की हाफ पेंट, लाल रंग की टी-शर्ट पहने हुए है। हाफ पेंट के अंदर वह डाइपर भी पहने है। उसके दो हाथ और एक पैर बंधे हुए हैं। जिससे साफ है कि बच्चे के हाथ पैर उसे बैग में घड़ी कर डालने के लिए ही बांधे गए हों।

पुलिस तलाश रही मर्डर स्पॉट- पुलिस ने घटना स्थल से शव को निगरानी में लेकर डेड हाउस पहुंचा दिया है। बैग से कोई भी ऐसा सुराग या चीज नहीं मिली है जिससे बच्चे की पहचान की जा सके। पुलिस अब मर्डर स्पॉट तलाश रही है। पुलिस को यकीन है कि हत्या रात को ही की गई है और रात को ही शव को ठिकाने लगाया गया है। पुलिस ने आसपास के इलाके के सुनसान पॉइंट को भी खंगाल लिया है,पर कोई सुराग नहीं मिला है।